पाठकों से नम्र निवेदन

प्रातः स्मरणीय श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री हुक्मीचंद जी मा० सा० के पाटानुपाट स्वर्गीय बाल ब्रह्मचारी अखण्ड यशधारी पूज्य श्री० मुन्नालाल जी महाराज के पट्टाधिकारी शास्त्रज्ञ धैर्यवान पूज्य श्री खूबचन्द्र जी मा० सा० द्वारा विरचित "कवित कुंज" मुनि श्री हीरालाल जी म० सा० से प्राप्तका दानी भाइयों (जिनकी शुभ नामावलि इसी पुस्तक मे दूसरी जगह अंकित है) की शुभ सहायता से प्रकाशित की जा रही है अतएव इस वैराग्यमय 'कवितांकुर' को भविक वृन्द रुचिपूर्वक पढकर आत्म कल्याण की ओर अग्रसर बनेंगे ऐसी हमें आशा है और तभी हमारा प्रयास भी सफल होगा।

निवेदक—

सेठ देवराज भंवरलाल सुराणा

ब्यावर (रा० प०)

ग्रन्थ के प्रकाशन में

द्रव्य सहायकों की
सुनहरी नामावली

१: १६२॥≈)॥ श्री महावीर जैन सभा जम्मू तवी (पंजाब)
२. १२५) श्री. सेठ रतनलाल जी सा. मित्तल फर्म लाला भीखामल जी छोटेलाल जी जैन ठि. लोहा मंडी, आगरा।
३. १२५) श्रीमान् सेठ रेखराज जी नेमीचंद जी लूंकड बेलनगंज आगरा।
४. १०१) ,, मणि बाई ने खुद की दीक्षा पर पालनपुर से भेजे।
५. १००) ,, सेठ सेजराम जी बच्छराज जी अन्याव मु. बालोतरा (मारवाड)।
६. ५१) ,, ,, माणाजी धन्नालालजी पोरवाड मन्दसौर।
७. ५०) ,, ,, चम्पालाल जी छगनलाल जी कुदाल खलची पुरा मन्दसौर।
८. ५०) ,, ,, सुगनचन्द जी मदनचन्द जी हिंगड़ अजमेर।

	१०)	श्रीमान् सेठ खेमचन्द जी जड़ावचन्द जी सुराणिया मन्दसौर।
१०	५०)	, निहालचन्द जी बापूलाल मारू मन्दसौर वालों की तरफ से बापूलाल जी मारू के पुत्र होने की खुशी में।
११	१०)	महता वीरचन्द भाई जवरचन्द भाई मारफत विमलाबाई पितम्बर दास की यादगार में पालनपुर गुजरात
१२	५०)	ममूभाई कस्तूरचन्द कोठारी कालीदास भाई मायचन्द भाई स्वरीवाम वारपुड़ा पालनपुर गुजरात।
१३	२५)	उपमोलाल लल्लुभाई मादीबास पालनपुर गुजरात।
१४	२१)	स्थानक वासी जैन श्री संघ अम्बाला (पंजाब)।
१५	२०)	श्री सेठ मगनीरामजी लछीराम जी लोढा के सुपुत्र राजमल जी मोहनलालजी लोढा कूकड़ा वाला के विवाह के उपलक्ष में।
१६	२०)	देवराज कालुराम ब्यावर (राजपूताना)।

निवेदक—

सेठ देवराज भंवरलाल सुराणा

ब्यावर (राजपूताना)

कविता कुञ्ज में आये हुये ।

विषय

|| श्री वीतरागाय नम ||

प्रात स्मरणीय त्यागमूर्ति जैनागम तत्ववारिधि श्रीमज्जैनाचार्य स्वर्गीय पूज्य श्री खूबचन्द्रजी महाराज विरचित एवं पंडित मुनि श्री हीरालालजी महाराज द्वारा संग्रहित

जैन कविता कुंज

* दोहा *

अरिहन्त सिद्ध आचार्यजी, उपाध्याय अणगार। खूब कहे सुमरो सदा, हो जावो भवपार ॥१॥ खूब गुरु उपदेश से, हो अज्ञान का नाश। रहे अंधेरा जिम नहीं, सविता (सूरज) के प्रकाश ॥२॥ सत्य शील निर्लोभता, दया क्षमा भरपूर। खूब कहे उस सन्त की सेवा करो जरूर ॥३॥ गुरु वैद्य माता पिता, और भूप के पास। खूब कहे पूछे तभी, दीजे साफ प्रकाश ॥४॥ शूर पुरुष देखे नहीं, सकुनादि तिथी वार। खूब सदा ही निडरता, ताकू कहां विचार ॥५॥ सिर मुँडाय साधु होवे, काम दाम तज धाम। खूब कहे उस सत को, कहा दाम से काम ॥६॥ साधु सेठ और वैद्य के, अवश्य मुलामी होय। खूब कहे इन तीन की, शोभा करे सब कोय ॥७॥ दुनिया में दाता घणा, आशा हित दे दान। खूब मोक्ष के हेत दे वे विरला नर जान ॥८॥ खूब साज दियो वक्त पै, आखिर अपनो जान। नुगरो ते गुण भूल के, निकल्यो डांस समान ॥९॥ खूब दान चौड़े करे अपनी महिमा काज। टुकड़ा भी देवे नहीं, जो द्वार खड़ा मोहताज ॥१०॥ दुखी वियोगी बावरो, क्रोधी शठ इन्सान। खुब बोलता पॉच को, रहे नहीं कुछभान ॥११॥ पक्ष नहीं पैसो नहीं, खाली जणावे जोर। खूब कहे वो मानवी, सींग पूँछ विन ढोर ॥१२॥ उद्यम कबहु न छोड़िए, यद्यपि कष्ट पड़त। खूब कहे उद्यम किया, कीडी शिखर चढ़त ॥१३॥ परउपकारी ना हुवो, बड़ो होय जग

घर घरे, क्यों न होय बदनाम ॥४०॥ एक इन्द्रिय के वश पड़े, प्राण तजे तत्काल । खूब पॉच के वश पडे, उनका कौन हवाल ॥४१॥ खूब कहे जो मानवी, कर्म किया अति नीच । लोग बतावे ऑगुली, धिग् जीव्यो जग बीच ॥४२॥ खूब ऊँच के संग से, बधे तेज प्रताप । नीचे की संगत किया, उल्टी जावे आब ॥४३॥ खूब देख पर संपदा, दुष्ट भाव मत लाय । जो जैसी करणी करे वैसा ही फल पाय ॥४४॥ स्वारथ को संसार है, बिन स्वारथ नहीं कोय । ज्यों पंडित की पत्रिका, वर्ष लग आदर होय ॥४५॥ तन बुद्धि मुँह प्रकृति अरु भाषा भाग्य विचार । खूब कहे सब मनुष्य में, मिले नहीं इकसार ॥४६॥ अधो वाय खासी हसी, छींक उभासी डकार । खूब कहे सब मनुष्य में, मिलती हैं इकसार ॥४७॥ खूब मीन सज्जन मुनि ना किसको कुछ केत । ताको बिन अपराध ही, दुर्जन जन दुःख देत ॥४८॥ खूब योग्य नर जाण के, शरण लहे कोई आय । आप निभावे जन्मभर, पिछले को कह जाय ॥४९॥ नारी नारी एक है, सकल जगत भरपूर । भगनी भार्य्या सोच कर चतुर पुरुष रहे दूर ॥५०॥ खूब पात्र अन्न वस्त्र के, पग ठोकर दे देय । मैं तो बडों के मुँह सुनी, अशुभ जानते ज्ञेय ॥५१॥ मिष्ट बोल करजो लहे हर्षित खूब अपार । जब वो आवे मॉगवा लडवा होय तैयार ॥५२॥ बिना काम बिन पूँछिया, रे मानव मत बोल । खूब मौन कर रीजिए तजिए हँसी किलोल ॥५३॥ खूब देख कुछ जाति का, कर लेते उनमान । अब तो हुवे बहुरूपीया, होती नहीं पहिचान ॥५४॥ भाषण देवे जोशीला मिस्टर बाबू साहब । खूब लाग माने नहीं, उनके ढंग खराब ॥५५॥ खूब पेट में कपट है, दीखत के नर नेक । नारंगी फल सारिखा, भीतर फॉक अनेक ॥५६॥ खूब तुरत समझे सभी ते खरबुज समान । दीखत फाक अनेक है भीतर एक ही जान ॥५७॥ खूब मान जग में बुरो, मान बहा अपमान । न्याय दशारण भूप को लीजो समझ सुजान ॥५८॥ मास्टर दुर्व्यशनी हुवे उनकी संगती माय । बिगड़े क्यों न विद्यार्थी खूब कहे समझाय ॥५९॥ दो विभाग एक खेत के बोयो बीज दोई बीर । खूब साख का निपजना, है अपनी तगदीर ॥६०॥ खूब बात देखी सुनी कहन योग नहिं होय । राखो पूर्ण गम्भीरता, प्रकट करो मत कोय ॥६१॥ चूक देख शिक्षा करे कठिन शब्द में कोय । खूब कहे हित मानिये आगे पर गुण होय ॥६२॥ सेवा तपस्या सरलता, शास्त्र पठन वैराग । इन बातों पे अब कहा खूब पूर्ण अनुराग ॥६३॥ खूब बडा के प्रेम से, करे सब नर कोय । गुणी बन ज्ञानी बने, सर्व कार्य सिद्ध होय ॥६४॥ मेवाड़ का मानी घणा, अधिक मान को धोंग । जोखम मोखम जीमणो, बडो हुकम रो सोंग ॥६५॥ चित्त हरणी घरणी मिली, भृत्यक चतुरंग सेन ।

राज वैभव सुत मित्र है जब लग खुले दो नैना ॥१६॥ आँधा लूला लंगड़ा परखे, धोला चमके केसां में। सूव कहे बहिरा भी परखे, करामात है पैसा में ॥१७॥

पहेलियाँ—प्रश्न—एक नारि डंडे पर बैठा, सब शीश पर लम्बी जटा। तिसाम्बरी माला नहीं फेरे, पूत होय जब धोला पहरे। उ० 'मुट्टा'

प्र०—नव पयोधर पतली काय, उगो कमल नाभि के मांय। नम मांस तन ऊपर नाय, सूव मथा चौड़े दरसाय ॥२॥ उत्तर—तराजू(तकड़ी)।

प्र०—पर पायां पीने घणो, डरे नहीं डर मांय। नर पुठे सुती रहे, सूव विख्यात दिखाय ॥३॥ उत्तर—मसक।

प्रश्न—पांव बिना डूंगर चढ़ बिना मुखे गज खाय। सूव पसरे वायु लगे, जल पायां मर जाय ॥४॥ उत्तर—अग्नि (आग)।

प्रश्न—सूव मार पग पाव की तीन नैन से मासे। एक पांव ऊंचो रक्खे, चार पांव से नासे ॥५॥ उत्तर—मोटर।

प्रश्न—पाप कर्म करते "रहो" जा सुख पावो सेण। सूव कहे मानो सही, ये सतगुरु के बेण ॥६॥ उत्तर ठहरो।

प्रश्न— सुता मात सासु बहू, ननंद भोजाइ माय। सूव कहे ये पुत्रियां, कितनी २ थाय ॥७॥ उ०—नौ दो (माता बहु बेटी ये तीन थी)

प्रश्न-पिता पुत्र सालो बहनोई, मामो भाणेज और नहीं कोई। सूव कहे नव घेवर लाये, कितने २ सबने आये। उ०—३-३(पिता,पुत्र साला तीनथे)

प्रश्न—दो पयोधर लटकता, पतलो ताम शरीर। सूव उठाया नर फिरे, के घर के जल तीर ॥८॥ उत्तर—कावड़।

प्रश्न—वन में देखी "कोकिला", थे, सिर पर दो पांय, सूव कहे मानो सही, इस में संशय नांय ॥१०॥ उत्तर—परमेश्वर करके पढ़ो।

प्र०—तो मे का गज लायओ, भूपति भाखा दीन। सूव कहे एक पाव के, अर्थ होत हैं तीन ॥११॥ उ०—कागज, काग अलायओ, गज लायओ

प्र०—जो मिलिया सो दोय में, एक में मिले न कोय। जो एक में आ मिले दो में मिले न कोय ॥१२॥ उ०—जंगम, स्थावर, सिद्ध है,

कुछ तुकें—(एक) रास्ता को धाम १, फायदा को काम २, जागीरी को गांम ३, घर बैठा दाम ४, मुफ्त में नाम ५, (दो) गल सड़ लातां से १, मूर्ख लड़े हाथां से २, पण्डित लड़े बातां से ३, श्वान लड़े दांतां से ४, (तीन) मिलणो बीरा को १ ब्योपार हीरां को २, जीमणो सीरा को, बगार जीरा को ४, (चार) पको मायाँ को १, बैर भायां को २, गायो बायां को , दूध गायां को ४, (पांच) मोसम में राड़ १ रास्ता में भाड़ २, नदी में भाड़ ३ (छः) किवाड़ की कील १, जगत में भील २, आकाश में चाल ३, राज में वकील ४, (सात) बधू बिना गाड़ी १, भाड़े बिना लाडी २ फूल बिना वाड़ी ३, अगल बिना माड़ी ४, रंग बिना साड़ी ५, भैंस

बिना पाडी ६, (आठ) सोना सेजों का १, बैठना मेजों का २, मरना हैजों का ३, (नो) कर्मों के लिहाज नहीं, नागा के लाज नहीं २, रक के राज नहीं ३, समुद्र के पाज नहीं ४, (दस) कुबद काणा की १, समझ स्याणां की २, करामात नाणा की ३, (इग्यारा) राड़ हाट्या की १ गोट बाट्यों की २, लड़ाई लाट्यों की ३, (बारह) गद्धा के ज्ञान नहीं १, दातरा के म्यान नहीं २, बेडों के शान नहीं ३, (तेरह) सभा सोहे राजा से १, ब्याह सोहे बाजा से २, महल सोहे छाजा से ३, (चवदह) जल में कभी न लागे आग १, आग में कभी न लागे बाग २, गूँगो कभी न गावे राग ३, धोया उज्वल होवे न काग, एता होय तो मोटा भाग (पन्द्रह) हाकमी गर्म की १, साहूकारी भर्म की २, बहु बेटी शर्म की ३, दुकानदारी नर्म की ४, (सोलह) गाडी को भय टूटण को १, काया को भय कुटण को २, माया को भय लुटण को ३, बूढ़ा को भय उठण, ४, साधु को भय झूँठण को ५, (सतरह) करजे लडाई तो बोलजे आड़ो १, करजे खेती तो राखजे गाडो २, राखज भैंस तो बान्धजे बाडो ३, (अठारह) ताण में टेकी १, धर्म में नेकी २, जोबन में सेखी ३, (उन्नीस) पच राणा १, पच स्याणा २, ३ पच काणा ३, पच धूल खाणा ४, पच खेंचा ताणा ५, (बीस) देवाण गसाण १, सेठाण गयाण २, राजाणं दुकमाण ३, गोलाण गण्शाण ४, (इकीस) करे सो भरे, फूटा सो झरे २, झूँठा सो डरे ३ पाका सो खरे४, जन्मे सो मरे ५, (बाईस) कुत्ता बिना गाम कहा १, गुण बिना नाम कहा २, पाणी बिना कुप कहा ३, न्याय बिना भूप कहा ४, (तेईस) घणों पटेला बिगड़े गाव १, घणां भोपा से उठे धाम २, त्रड्या कचेरी खुट्या दाम ३, पूत कपूतां उठयो नाम ४, (चौवीस) प्रश्न—सुसरा के घर नितको रेणो १, माँग पराये पहिरे गेणों २, छतो पईसो राखे देणो ३, उत्तर—इन तीनों को मूर्ख कहजो (सतावीस) दोहा—खुशी मनाई राख्यो बेटो, थोड़ा दिनों म मॉड्यो खेटो। घर को फूट फजीतो कीदो, वेची नींद ओजको लीदो ॥ (अठावीस) जोड़ी प्रीत पेट में आँट्या, भेरा खाय गोट में बाट्यॉ निर्लज्ज होय लड़े ज्यों हाट्या, दे धिक्कार पडोसी डाट्यां (उनतीस) घणी दवा से बिगड़े तन्न, पर धन देखी बिगड़े मन्न, बिना भाव तो खावे अन्न, ये तीनों ही मूरख जन्न ॥ (तीस) बिना काम को परघर जाणो, बिना भूख को भोजन खाणो, बिना अवसर को गायन गाणो, बिना लाभ को खरच बढाणो, इन चारों को मूरख जाणो ॥ (इगतीस) नीची नजर मयूर सी बोली, कर में रहे समरणी। बाहिर सत सरीखा दर्शे, भीतर बहे कतरणी। खूब मुनि कहे जो नर एसा, उनसे बचते रहो हमेला ॥ (बत्तीस) गली बीच की तीन लाख, बारह लाख बजार की। चुगल खोर के मुँह ऊपर, पन्द्रह लाख पेजार की ॥१॥

कवित्त—अरिहन्त स्तुति—पहले पद अरिहन्त, चार कर्म किया अन्त लिया है मुगती पंथ, केवल के धारी है चौतीसे अतिशे गुण मोटा है, द्वादश गुण तीन लोक मौही, प्रभु कीरति पसारी है॥ अनन्त बली है आप, नहीं है गुणों को पार, धर्म विस्तार प्रभु घोर ब्रह्मचारी है। सुखचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीश, ऐसे अरिहंत ताको वन्दना हमारी है ॥१॥ सिद्ध स्तुति—दूजे पद सिरी सिद्ध हुआ है पन्दरा भेद, मैंने भी उम्मीद तोरे दर्शनों की धारी है। आठों ही करम छेद पाया है मुगति महल, अनंत सुखों की शहल जान, ज्ञान रमा सारी है॥ रंग रूप कर्म काया, मोहनी ममता माया, दुःख ने दरिद्र रोग, सोग लेश्या टारी है। सुखचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीश ऐसे सिद्धराज ताको, वन्दना हमारी है ॥ २ ॥ आचार्य स्तुति—आचारज तीजे पद, छोड़ दिया आठ मद हरत करम रद सद्गुण धारी है। छत्तीस गुणा सोहन्त, शरीर स्वरूप कन्त संघ में सोहन्त लेठो पर उपकारी है॥ छः काया के प्रतिपाल ऐसा है दयाल, जिन वचन रसाल, जामें चित्त रम्यो भारी है। सुखचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीश, ऐसे आचारज ताको वन्दना हमारी है ॥ ३ ॥ उपाध्याय स्तुति—चौथे पद उवज्झाय, पचीस गुणों के धार, नर्मं चित पाँच, ज्ञाने प्रगम्या धारी है। चवदा पूरव अंग, इग्यारह उपांग वाचक, भणे ते भणावे आप, ऐसा उपकारी है॥ रुचि है अगम ज्ञान ध्यान में मगन शिवपुर की लग लग रही अति भारी है। सुखचन्द कहे, कर जोड़ के नमाऊं शीश, ऐसे उपाध्याय ताको, वन्दना हमारी है ॥४॥ साधु स्तुति—सुनके जिनन्द वाणी, अन्तर वैराग्य आणी, संसार अनित्य जाणी हुआ व्रतधारी है। गुण हैं अठारे सव, बोलत मधुर रव, सुधारे मनुष्य भव सुमति विचारी है। दिपावे भी जिन धर्म तोड़े आठों कर्म, वह पावे है परम सदा जांकी बलिहारी है। सुखचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीश, ऐसे मुनिराज ताको, वन्दना हमारी है ॥५॥ परमेष्ठी गुण—अरिहन्त देवजी विराजमान बारे गुण, सिद्धजी विराजमान आठ गुणधारी है। आचारज जी छत्तीस गुणों से विराजमान, पच्चीस साथ से उपाध्याय गुणा धारी है। सत्ताईस गुणों करी साधुजी विराजमान मोक्ष अभिलाषी अप आतम को निधारी है। सुखचन्द कहे कर जोड़ के नमाऊं शीश, ऐसे पाँचो पद ताको वन्दना हमारी है ॥६॥ गुरु प्रशंसा—राजा जी प्रसन्न होय ग्रामादिक बक्षीश करे, सेठजी प्रसन्न होय नौकरी बढ़ाय दे। मा पितु प्रसन्न होय बतावे गुप्त वित्त पति जो प्रसन्न होय जेवर घड़ाय दे॥ देवता प्रसन्न होय पुत्र और धन देय सरदार प्रसन्न होय इनाम चढ़ाय दे। सुखचन्द कहे गुरुदेव जो प्रसन्न होय जनम मरण भव भव से छुड़ाय दे ॥७॥ गुरु की

अप्रसन्नता—राजा जो कुपित होय फाँसी शूली कैद करे, सेठजी कुपित होय घर से निकास दे। मा पितु कुपित होय धन्न से निराश करे, पति जो कुपित होय मार ताड़ त्रास दे। देवता कुपित होय पुत्र जोरु धन हरे, उस्ताद कुपित होय पद बदमाश दे। खूबचन्द कहे गुरुदेव जो कुपित होय, आग नाग बाघ जैसे छिन्न में विनाश दे। गुण बिना नाम—नाम तो शीतलदास छेड्या सेती क्रोध करे नैनचन्द नाम पण जनम को अन्ध है। दयाचन्द नाम दिल दया की रहस्य नाँही, ज्ञानचन्द नाम नित करे खोटा धन्धहै॥ नाम तो अमरचन्द जीयो है अलपकाल, सदा सुख नाम पण दुःख को सम्बन्ध है। खूबचन्द कहे अणी दृष्टांत सुजान नर, गुण बिना नाम जैसे श्वान पै सुगन्ध है॥ ९॥ नाम तो लक्ष्मी बाई छाणा बीणे बन्न माँही, रूपा बाई नाम, रूप काग से सवायो है। दया बाई नाम पण जूँआ लीखा मारे नित, स्याणी बाई नाम जनम राड में गवायो है। नाम तो जडाव बाई पास न ताँबा को तार, राजी बाई नाम रोवे होनडो चढायो है। खूबचन्द कहे ऐस, गुण बिना नाम, जैसे मोतियों को हार मानो भैंस ने पहिनायो है॥१०॥ रुचि बिना—रुचि बिना ज्ञान ध्यान, रुचि बिना दान मान, रुचि बिना खान पान कैसे, बण आवेरे। रुचि बिना दया सत्य शील ने सन्तोष वलि, रुचि बिना वणज व्योपार नहीं थावेरे॥ रुचि बिना जप तप, रुचि बिना करे खप, रुचि बिना धर्म कथा कान न सुहावे रे। खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्त सुजान नर, अन्तस की रुचि है तो फेर काँई चावे रे॥११॥ पाप को घड़ो—सेर की हाँडी में मुद दो सेर घालन लागो, ज्ञानी कहे देख भाई ऐतो न समायगो। दो दिन को प्यासो भूखो, नीठ कर मिली तोकूँ, भूख तो घणी छे ऐती खीचड़ी न खायगो॥ मूरख न मानी साच, लगाई अगनी आँच, ढकण ढक्यो छे पण, पीछे पछतायगो। खूबचन्द कहे, अणी दृष्टान्त सुजान नर, पाप को घडो तो कोई दिन्न फूट जायगो॥ १२॥ लालची कुत्ता—श्वान एक अति भूखो, जाको तालीलूखो सूको, नीठ कर मिल्यो टूको, मुढनहीं खावेरे मुँह में लेईने हाल्यो, नदी के किनारे चाल्यो, आपको आकार जल मांही दरशावेरे। दूसरो रोटी को टूको जाणी न लेवण ढूको, मूल ही को खोयो, पीछो नजर न आवेरे। खूबचन्द कहे अणी दृष्टान्त सुजान नर, लालच करे सो निज गाँठ को गमावेरे॥१३॥ बिल्लियों का न्याय—दो बिल्ली एक रोटी, मिली तब सलाह घोटी, बन्दर के पास जाय हिसाव करावे रे। छोटा मोटा टूक करी, तराजू के माही धरी, नमे जिसे कपि रोटी, ज्यादा तोड़ी खावेरे। सूँपो थें तो रोटी म्हारी, न्याय न करावाँ मैं तो, कपि सब खागयो तब, बिल्ल्याँ पछतावेरे। खूबचन्द कहे, अणी दृष्टान्त सुजान नर, कपटी के पास जाय न्याय

क्यों करावे रे ॥१४॥ बन्दर की मूर्खता—तरखाण नदी के तीर, लकड़ चाळो तो चीर अधूरो छोड़ि न फाँचो, घाली घर आयो है। इतने तुरत तिहां बन्दर आईने बैठे दोनों चीर बीच निज, पूछ ने फंसायो है ॥ चंचल स्वभावी फाँचो, पकड़ हिलायो तब निकल गयो पे भांरी पूँछ पकड़ायो है। सुगनचन्द कहे भवी दृष्टान्त सुजान नर, पर को बिगाड़यो काम नेकी दुख पायो है ॥१५॥ मेंढ़ का न्याय—मीठी दाख तणी बेल ऊंची गई अर्मी को ठेल तब पै रही थी फैल, तिहां बन मांही रे। मेढ़ाँ चरे चार कोपी तिण में से एक मोटी डील कर दोड़ी पण मूँह पूगा नांही रे। मोटी पीछी फिरी तब, पूछी मेढ्याँ पूछो जद मुंह को गिगाड़ बेल कड़वी बताई रे। सुगनचन्द कहे। तो स्वारथ न पूगे जब कलंक बतावे मूढ़ गुणी जन मांई रे ॥ १६ ॥ बिया और बन्दर का न्याय—बियो कहे बन्दर भवी मौसम बरसात तणी ज्यम करेनी मूढ़, बैठे रेव करि रे। मानुष री देह धारे, दुःख में क्यों दिन गारे देवण वे काम पर लेवेनी बणाई रे। हितकारी देवां सीख, कोध में हुओ अधिक बन्दर बिया को घर। तोड़ नाख्यो मारे रे। सुगनचन्द कहे भवी दृष्टान्त सुजान नर ऐसे मूढ़ जन ताको सीख दीजे नाई रे ॥ १७ ॥ काग हंस का न्याय—काग हंस भए बेहर, दोनों अणा रहे सेर, कागको कुबुधि लाखो, हंस ने उडाय रे। नृप घबराय, वन मांही सूतो तरु छाँह, तेह री डाल ऊपर, बैठा दोनों आय रे। काग बड़ी लायो ऊठ, मुँह पड़ी गई छूट, नृपति पै गिरी काग, भागी दूर जाय रे। सुगनचन्द कहे एती नीच की संगति सेती, नृप मारयो पाप दियो हंस ने पोढाय रे ॥१८॥ काग सुवा का न्याय—काग सुवा दोनों मित्र बागां मांही रहे नित, फल फूल खावे तिहाँ, मान अति सुख रे। काग कहे सुन सुवा, अठे घणां दिन हुवा, चालो म्हारे वन विमां, जायाँ मा ने भूख रे। लेरां आगे सुवो, विक्रा देनी ने चकित हुओ, खाता भागी चोंच, तब करे अति कूक रे। सुगनचन्द कहे अति दृष्टान्त सुजान नर मूढ़ की संगत मत, कीजे भूल चूक रे ॥ १६ ॥ रंक का न्याय—रंक एक वन मांही, सुतो तब नींद आई, सपना में हुओ जिमे पृथ्वी को नाथ रे,। छत्तर धरावे शीश, उमराव मोटा बत्तीस खमा ? कर कोई जोडी दोनों हाथ रे। थावका ने गये नाम, पुरे है निशान घणी, रतन सिंहासन बैठो हुकम चलात रे। सुगनचन्द कहे भवी दृष्टान्त सुजान नर, सुपना सी सभ्पति में क्यों राखे दिन रात रे ॥२ ॥ बजाज का न्याय—मोटो बजाज, परदेश में कमावा काज आख्यो कर मिजाज त्रिया कहे झट आवज्यो। कमाई हुवा से म्हारे, बींदी बीजणा बाजू मेला, हार माला मय नूप छुहारे ने लावजो भोजन के काज एक लावजो रेशमी चीर। नव ही रकम आप भूल मत जायजो। सुगनचन्द

कहे नारी, धूतारी यों बोली नांही, आगरा को पेचो एक थाके लेता आवजो ॥२१॥ सप्त व्यसन का न्याय--प्रथम व्यसन सतगुरु की करीजे सेव, दूजो यो व्यसन जीव दया नित कीजिये। तीजो यो व्यसन सत्य वचन धारण कर, चोथो यो व्यसन तू शील में दृढ़ रीजिये। पांचमो व्यसन नित्य नियम धारण कर, छटो यो व्यसन तू सुपात्र दान दीजिये। सातमो व्यसन मन सन्तोष धारण कर, खूब मुनी कहे इन शिव पुरी लीजिए ॥२२॥ कुछ काम नहीं आवे—सोनारा के पावणो आवे तो घड़े सोनो चाँदी, कुँभार के आवे तोंसु हाँडला घड़ावेरे। दरजी के आवे, तासु वस्त्र सिवावे, और छीपा के आवे, तासु चुँदड़ी वधावेरे। खाती के आवे, तासु लकड घड़ावे और, किसान के आवे, तासु हल ने हकावेरे। खूबचन्द कहे तत, सुनो हो विवेक वत, वाणया का पावणा कुछ काम नहीं आवेरे ॥२३॥ पिता पुत्र का न्याय- पिता ले पुत्र के तांई, ब्याहन आयो चलाई, सगो रूस गयो तव, रुपैया गिणावेरे। एते वींद, आई नींद पिता कहे शीघ्र आई, उठ वेटा फेरा लेले, सगो परणावेरे। जान्या है वहुत लेरा जाने तू देई देफेरा, मीठी मीठी नींद आवे, मोने क्यों जगावेरे। खूब चन्द कहे अणी दृष्टान्त सु जाण नर, धर्म म प्रमाद किया पार किम पावेरे ॥२४॥ झूठ का न्याय—धन वत नर जाँके झूठ को नहीं है डर, हांसी में कहत, धावो धावो चोर आया है। तुरत सुणी ने कई सुभट दोडी ने आवे, ताको कहे मैं तो यू ही वचन सुनाया है। ऐसे ही करत ताके एक दिन चोर आया, दौड़ो दोडो कहे पण कोई न सिधाया है। खूबचद कहे सत प्रतीत उठावो मत, प्रतीत उठाई जाने प्राण ही गमाया है ॥२५॥ कौन काम की—राज महाराज पायो, घोड़ा गजराज पायो, खजाना अखूट फिरे आण निज नाम की। कुटुम्ब सयोग पायो, उत्तम सुभोग पायो, शरीर निरोग है, अत्यन्त छवि चाम की। ऊचा सा आवास पायो, दासी अने दास पायो, वुद्धि को प्रकाश निगरानी सव काम की। खूबचन्द कहे भाई सव ही सपति पाई, दया धर्म बिना जिन्दगानी कौन काम की ॥२६॥ गुजरी मेवाड़ की—नन्दजी के लाल, थारो नाम गऊपाल, तू तो गऊवाँ चरावे, बैठो रहे छाया झाड़ की। दोड्यो २ आवे नेड़े म्हाके क्यों लग्यो है केड़े। ऊरीवा ने छेड़े थारी फूटी हिया नाड की, इच्छा है तो मान कान दूध ने दही को दान, दांगा, थने आवे जद मौसम असाढ की। खूबचन्द कहे कानो देखत ही रह गयो, जवाव देई ने गई गुजरी मेवाड़ की ॥२७॥ मारवाडी साधुओं का कहना--मेवाड मालवा माही मोकण घणां छे भाई, बटका भरे छे पूरी नींद नहीं आवेरे। मच्छर मकोडा वटे, घणा पाड़े फोड़ा, और डाँस माँस सभी चटा चट चटकावेरे। उत्तराध्यन शूत्र का दूसरा अध्येन

मोटी पांचमो पचीसो सातवो दोहिलो पचावरे। सूखचन्द कहे इस बोले मारवाड़ी साधु, मेवाड़ मालवा मोटी किस विध आवेरे ॥२८॥ विना चतुराई वाली औरत—माथो ऊपर ठाव ठाव जु ओं को फटके। गू गा भरिया नाक, आंख में कीचड़ लटके। सेडो निकले बाहर सार मु डा से टपके। सूख सुगाली नार देख मांखी भटके ॥२६॥ चोमासो करावणो—चारों ही मास वखाण करे, समभाव से सूत्र सुणावणो है। चोपी रसीली हो कंठ कला, मांडु राग मल्हार को गावणो है। कोड़ी को खर्च भी नाय पड़े, बस धर्म की ज्योत दीपावणो है। सूख कहे ऐसे साध मिले तब, क्योंमी चोमासो करावणो है ॥२०॥ सुधारे—ज्यों दरजी पट सार अमोलक, बेंत करी कतरा कर डारे, ज्यों तर खान करोती बिसोले से काष्ट को फाड़ के छोड़ उतारे। ज्यों कुम्भकार मिटी घर में जग लेकर थापक थापक मारे। या विध सूख कहे गुरु देव भी, सबी सुभाव के बम्म सुधारे ॥२१॥ खुशी है—गाज आवाज मयूर खुशी सुण, चन्द्र को देख चकोर खुशी है। मात को देख के पुत्र खुशी, और ज्यूं चकवो रवि देख खुशी है। फूल सुगंधित देख अली सुण, चातक मेघ को देख खुशी है। या विध सूख कहे मिथ्यासर, धर्मी को देख के धर्मी खुशी है ॥२२॥

पंजाब की बोल चाल की भाषा—असी २ (हम) तुसी २ (तुम) साड़े २ (हमारे) साड़ु २ (मुझे) काली २ (जल्दी) कोल २ (नजदीक) कुड़ी २ (लड़की) काम में। जेड़ा २ (जौनसा) केड़ा २ (कौनसा) लोड़ २ (चाह) चंगा २ (अच्छा) तिमी २ (औरतें) रोला २ (जोर के शब्द) गल २ (बात) गाम में। चुक २ (उठाओ) छुपो २ (चलो) काकी २ (छोटी लड़की) काको २ (छोटा लड़का) भाषो २ (बोलो) मुंडो २ (बड़ा लड़का) मीको २ (छोटा लड़का) गाम में। सूखचन्द कहे स्याणा, झूँठी हो तो पूछ लेया। सुखी २ कई ऐसी बोली है पंजाब में ॥२३॥ पहेलियां—एक बगीचे में पुत्र पिता अरु, सीको सालो अने चौथो बहनोई। पाँचमो मामो ने छट्ठो भाणेज है पाँचे सिवा बस और न कोई। दो २ लड्डु सेंके एक ही थाल में, जीम लिये बस शामिल होई। सूख कहे लड्डू थे किसने, जो जोड़ बतावे, सो पण्डित होई ॥२४॥उत्तर—६ लड्डू थे जीमने वाले पुत्र पिता और साला ये तीन थे। मुनीराज—इस जिन शासन में कई मुनिराज हुये, ज्ञान के भंडार जिन मारग दीपावरे। तिरन तारण जहाज सारे आतमा का काज, वैसे मुनिराज निस्य मिथ्यात्व ऊथापेरे। कोई में क्षम्या का गुण कोई में विनै का गुण, व्यावच का गुण कोई स्वर्गे सिधावेरे। सूखचन्द कहे मेरे गुरु नन्दलालजी के, चरण नम्यों से मन २ सुख पावेरे ॥२५॥ नं० १—अरिहन्त सिद्ध वन्दना—तर्ज-पारस प्रभु से अर्ज हमारी

है दिन रात, मेरे तो वही देव है अरिहन्त सिद्धवर। करता हूँ उसे वन्दना मै सिर झुकाय कर ।।टेक।। हैं गुण अनन्त ज्ञानादि सब
द्रव्य के ज्ञाता। सुरेन्द्र और नरेन्द्र भक्ति करते हैं आय कर। करता हू० ।।१।। विषय कषाय जीत कर कहलाते वीतराग। खड्-
गादि शस्त्र ना रखें वे धैर्य लाय कर। करता हूँ०।२।। महिमा अपार सार जिनकी त्रिहु लोक में। फिर पाते हैं शिवधाम सब दुःख
को मिटायकर। करता हूं० ।।३।। सिद्धों के सुख की ओपमा न कोहि वता सके। नहीं आते मुड़के फिर अचल गति को पाय कर।
करता हू० ।।४।। मेरे गुरु नन्दलाल जी मुझ पै करी मया। शुद्ध देव की पहिचान दी सागे वताय कर। करता हूं० ।।५।।
२ नं०—सुगुरु वन्दना तर्ज—पूर्ववत—जो साधु सयम के गुणों में दिल रमाते हैं। ऐसे गुरु के चरण में हम सर झुकाते हैं।।टेक।।
जो हिंसा झूठ चौरी मैथुन परिग्रह। पॉचों ही आश्रम त्याग के त्यागी कहाते हैं। ऐसे० ।।१।। मान या अपमान, लाभ या अलाभ
हो। सुख दु:ख निन्दा स्तुति में समभाव लाते हैं ऐसे० ।।२।। गृहस्थ या कोई क्षेत्र से न ममत्व भाव है। नवकल्पविहारी कथा निर्वद्य
सुनाते हैं। ऐसे० ।।३।। प्रतापना और भूख प्यास शीत उष्ण का। सहते परिषह आप न चित को चलाते हैं। ऐसे० ।।४।। मेरे गुरु
नन्दलाल जी कहते सही सही। वोही मुनि भव सिन्धु से तिरते तिराते हैं। ऐसे० ।५।। नं० ३ हितोपदेश गजल--पाई है तू अन-
मोल ऐसी जिन्दगी ऐ नर। इस लोक की परवाह नहीं परलोक से तो डर ।।टेक।। सन्तों का कहना मान के जुल्मों को छोड़ दे।
नहीं तो जिया आगे तुझे पड जायगी खबर। इस० ।।१।। दिन चार का महमान तू विचार तो सही। तैंने क्या किया शुभ काम यहाँ
पृथ्वी पै आय कर। इस० ।।२।। चौरासी लक्ष योन में टकराता तू फिरा। निकल गया अन्धियारा अब तो होगई फजर। इस०।।३।।
मान से वस जाति या परजाति धर्म में। तैंने डलाई फूट किसी नरक पै कमर। इस० ।।४।। मेरे गुरु नन्दलालजी देते हितोपदेश।
मञ्जूर करले फिर तो है सुरलोक की सफर। इस० ।।५।। चेतावनी— [तर्ज—लाखों पापी तिर गए सत्संग के परताप से] कहने
वाला क्या करे तेरी तुझे मालूम नहीं। कुपन्थ में अब क्यों चले तेरी तुझे मालूम नहीं ।।टेक। आया था किस काम पै और काम क्या
करने लगा। खास मतलव क्या हुआ तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ।।१।। पाया जो धन माल कुछ शुभ काम में निकला नहीं। कुकार्य
में पैसा गया तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ।।२।। लोह की गठरी वांध के तैंने उठाई शीप पै। पार होना सिन्धु से तेरी तुझे मालूम
नहीं, कहने० ।।३।। जहर खाकर जीवना प्रतिबोध सुते सिंह को यों पाप का फल है बुरा तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने० ।।४।। मेरे

गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। अब हाथ आया मोक्ष का तेरी तुझे मालूम नहीं, कहने०।४॥ नं ५ कर्मफल—कर्म यहां जैसा करे वैसा यह ही फल पायगा। इस लोक या परलोक में वैसा ही यह फल पायेगा ॥टेक॥ शास्त्र का फरमान है, हठ छोड़ के कर गोजना। पूर्व धामी कथ गए यह ही कथन मिल आयगा इस लोक ॥१॥ कोई सुखी दुःखी कोई रंक है कोई राजवी। कोई धनी कोई निर्धनी यह मनन ही मिल आयेगा, इस० ।२॥ कोई नरिन्द्र कोई परिन्द्र कोई छोटे मोटे जीव हैं। अपने २ कर्म से सुख दुख सभी भर आयगा इस लोक ॥३॥ कृष्णजी के भ्रात गजसुकमालजी हुए मुनी। बदला उन्होंने भी दिया कैसे तू छूट आयगा इस०॥४ शालिभद्रजी का मिली रिद्धि सुपात्र दान से। निज हाथ से कर दान तू भी वैसा ही फल पायगा, इस० ॥५॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। सब कर्मों का संग छूटने से मोक्ष का फल पायगा, इस० ॥६॥ ६—संसार की अस्थिरता—कौन यहां अमर रहा तू समझ ले अच्छी तरह। उमर तेरी जा रही तू समझ ले अच्छी तरह ॥टेक॥ डाभाग्र जल बिन्दु जैसी उमर तेरी अल्प है। दो पचास बस कर दे तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ॥१॥ कई सागरोपम लगे सुख भोगते सुर लोक में। वह भी स्थिति पूरी होवे तू समझ ले अच्छी तरह, कौन०॥२॥ पवन या मन की गति ज्यों वेग नदी का बहे। स्थिर नहीं सूर्य शशी तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ॥३॥ राज पाया मुल्क का किसी रंक ने ज्यों स्वप्न में। यह ठाठ कितनी देर का तू समझ ले अच्छी तरह, कौन० ।४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। सफल कर इस पल को तू समझ ले अच्छी तरह,कौन०॥५॥ नं ७ शुभ काम क्या किया मानुष का भव पाय के शुभ काम तैंने क्या किया। अपना किया औरों के लिए शुभ काम तैंने क्या किया ॥टेक॥ नामवर जीवन किया दुनिया में याद याद हो रही। भूला फिरे गरूर में शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥१॥ मित्र मिल गोठां करी वेश्या गयाद बाग में। माल खा गए मस्करे शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥२॥ तन से या धन से यहां नहीं जाति की रक्षा करी। प्रेम नहीं सत्संग से शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥३॥ दिन गँवाया खाय के और निश गँवाई नींद में। यों पल तेरा सब गया शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ॥४। मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। विद्वान् हो तो समझ ले शुभ काम तैंने क्या किया, मानुष० ।५॥ नं ८ सत्संग महिमा—सत्संग से ज्ञानी बन तू चाहे जिससे पूछ ले। मोक्ष भी हासिल करे तू चाहे जिससे पूछ ले ॥टेक। कई पापी हो चुके थे तिर गए सत्संग से। शक हो तो मेरी है रजा तू चाहे जिससे पछ ले ॥सत्संग॥ १॥ जैसे पत्थर नाव

के सग नीर में तिरता रहे। परले किनारे वह लगे तू चाहे जिससे पूछले, सत्सग ॥२॥ यों हलाहल ज़हर को भी वैध की सगत मिले। अमृत वनादे औषधि तू चाहे जिससे पूछ ले, सत्सग ॥३॥ सोनी सुवर्ण को उठा कर जलती पावक में धरे। फूँक कर निर्मल करे तू चाहे जिससे पूछ ले, सत्सग ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का नित यही उपदेश है। सुधरे पशु भी सग से तू चाहे जिससे पूछ ले, सत्सग ॥५॥ नं० ६-धर्म का असली स्वरूप—सच मान सन्तों का कहा यह खास असली धर्म है। किन्ही पण्डितों से पूछ लें यह खास असली धर्म है ॥टेक॥ जीवों की रक्षा करे और झूँठ ना बोले कभी। चोरी का त्यागन करे यह खास असली धर्म है, सच० ॥१॥ ब्रह्मचर्य का पालना सग परिग्रह का परिहरे। रात्रि भोजन न करे यह खास असली धर्म है, सच० ।२॥ पाँचों इन्द्री को दमे क्रोधादि चारों जीत ले। समभाव शत्रु मित्र पै यह खास असली धर्म है, सच० ।३॥ दान दे तप जप करे नरमी रखे सबसे सदा। शुभ योग में रमता रहे यह खास असली धर्म है, सच० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का नित यही उपदेश है। गुण पात्र की सेवा करें यह खास असली धर्म है, सच० ॥५॥ नं० १० श्रावक के गुण—समणोपासक के सदा गुण ऐसे होना चाहिये। अनुराग रक्ता धर्म में गुण ऐसे होना चाहिए ॥टेक॥ आवश्यक करके सुबह गुरुदेव के दर्शन करे। बाद फिर शास्तर सुने गुण ऐसे होना चाहिए, समणोपासक० ॥१॥ गुरुदेव आवे द्वार पै तब उठ कर आदर करे। दान दे निज हाथ से गुण ऐसे होना चाहिए, समणो० ॥२ हितकारी चारों सघ के समभाव सम्पत विपत में। गुण पात्र की स्तुति करे गुण ऐसे होना चाहिए, समणो० ॥३॥ धर्म से डिगते हुए को सहायता दे स्थिर करे। उदास रहे संसार से गुण ऐसे होना चाहिए। समणोपासक ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। न्यायी हो निष्कपटी हो गुण ऐसे होना चाहिए, समणो० ॥५॥ नं० ११ सुशिष्य के लक्षण—आज्ञा गुरु की मानता जो वही शिष्य सुशिष्य है। आज्ञा को पालन न करे जो वही शिष्य कुशिष्य है ॥टेक॥ वन्दना करके सुबह ही पूछले गुरुदेव से। आज्ञा हो वैसा करे जो वही शिष्य सुशिष्य है ॥ आज्ञा ॥१॥ आते जाते देख गुरु को हो खड़ा कर जोड़के। भाव से भक्ति करे जो वही शिष्य सुशिष्य है, आज्ञा० ॥२॥ लेन में या देन में या खान में और पान में। कार्य करे सब पूछ के जो वही शिष्य सुशिष्य है, आज्ञा० ॥३। जो २ सब दिन रात की किया वही करता रहे। चारित्र में माने मजा वही शिष्य सुशिष्य है। आज्ञा० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। निज दाव जीते मोक्ष का जो वही शिष्य सुशिष्य है, आज्ञा० ॥५॥ नं० १२- पतिव्रता के लक्षण--पति का

हरदम पाल मना पतिव्रता यही नार है। सुख में सुख दुःखी में दुःखी पतिव्रता वही नार है ।।टेक।। कुटुम्ब को सुखदायिनी सुसभ्य से मिलजुल रहे। सुमनी सुभागिणी पतिव्रता वही नार है। पति का० ।।१।। विपत में अनुकूल रहे दिल अस्थिर हो तो स्थिर करे। उपकार रहना धर्म की पतिव्रता वही नार है। पति का० ।।२।। सीता सती राजिमती जैसे रहे सुदृढ़ धर्म में। पर पुरुष को चाहे नहीं पतिव्रता वही नार है। पति का० ।।३।। रोष में पति कुछ कहे नहीं सामने बोले कभी। ज्यों त्यों दिल को खुश करे पतिव्रता वही नार है पति का० ।।४।। मरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। दासी बन रहे चरण की पतिव्रता वही नार है, पति का० ।।५।।

नं १३ हिंसा निषेध—नाहक सतावे और को यह तेरे हक में है बुरा। मान या मत मान पे मर तेरे हक में है बुरा ।।टेक। अपने करम कर्म से जिन योन में पैदा हुए। तू बेगुनाह मारे उन्हें यह तेरे हक में है बुरा, नाहक० ।।१।। सुख चिर पंछी पशु फिरते छुड़ाते जान का। रहम कर नहीं मन्ताना तेरे हक में है बुरा। नाहक० ।।२।। पीछे जो चच्चे रहे कौन पालना उनकी करे। परवश पन पे भी मरे यह तर हक में है बुरा। नाहक० ।।३।। तेरे जब काँटा लगे तब दुःख तुझे मालूम हुवे। इस तरह सब में समझ यह तेरे हक में है बुरा नाहक० ।।४। मरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। रहम जब तक दिल में नहीं यह तेरे हक में है बुरा। नाहक० ।।५।।

नं १४ मृषावाद निषेध—यार रख मर झूठ से तारीफ तेरी है नहीं। असल जामा खोवके तारीफ तेरी है नहीं ।।टेक।। झूठ से प्रतीत उठे झूठ से झूठा करे। लोग सब लापर गिनें तारीफ तेरी है नहीं। यार रख० ।।१।। वसु राजा का सिंहासन सत्य से रहता अधर। यह झूठ से गया नरक में तारीफ तेरी है नहीं। यार रख० ।।२।। नीच धन्धे झूठ को और कष्ट भी धन्धे नहीं। झूठ जिन्हें सब जगत तारीफ तेरी है नहीं। यार रख०।३।। झूठ से साधु को भी आचार्य पद आता नहीं। व्यवहार सूत्र में भी लिखा तारीफ तेरी है नहीं। यार रख० ।।४। मरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। तू झूठ में माने मजा तारीफ तेरी है नहीं। यार रख० ।।५।।

नं १५ अस्तेय निषेध—साफ हुक्म है शास्त्र का मर छोड़ दे तू तस्करी। तेरे हक में ठीक है मर छोड़ दे तू तस्करी ।।टेक।। यह नीत तस्कर की रहे करुणा न जिसके भाव में। सब जाति में चोरी करे मर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ।।१।। सुर स्थान या शिवस्थान या यह धर्म का स्थान है। मस्जिद मन्दिर न गिने मर छोड़ दे तू तस्करी साफ० ।।२।। सम जगह प्रियम जगह चोरी करे मारे मरे। समुद्र में चोरी करे मर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ।।३। सरकार में पावे सजा वह कैसे कैसे दुःख सहे। उसको न मिलने दे किसी

से नर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। एक साधु जन इससे बचे नर छोड़ दे तू तस्करी, साफ० ॥५॥ १६—अब्रह्मचर्य निषेध- इज्जत बनी रहेगी सदा परनारी का सग छोड दे। अब भी समझ कोई डर नहीं परनारी का सग छोडदे ॥टेक॥ राजा कीचक द्रौपदी पै चित्त दियो तब भीम जी। छत उठा स्तम्भ बीच धरा परनारी का संग छोड़दे, इज्जत० ॥१॥ कई धन खोकर चुप रहे कई जान से मारे गए। कई रोग से सड़-सड़ मरे परनारी का सग छोड़ दे, इज्जत० ॥२॥ कई जूतियों से पिट गए कई जाति से खारिज हुए। कई राज में पकड़े गए परनारी का संग छोड दे, इज्जत० ॥३॥ शील में सीता सती फिर दृढ़ रही राजिमती इस तरह तू दृढ़ रह परनारी का सग छोड़ दे, इज्जत० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। शील में सुख है सदा परनारी का सग छोड दे, इज्जत० ॥५॥ १७—परिग्रह निषेध--माया को तू अपनी कहे अब तक तुझे मालूम नहीं। यह किसी की हुई ना होयगी अब तक तुझे मालूम नहीं ॥टेक॥ आया था जब नग्न होकर साथ कुछ लाया नहीं। पीछे पसारा सब हुआ अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥१॥ भाई-भाई सासु जमाई पुत्र और माता पिता धन के लिए शत्रु बने अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥२॥ बाबर अलाउद्दीन महमूद अकबर हुए बादशाह। वे भी खजाना छोड गए अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥३॥ अकृत्य कार्य तू करे दिन रात पच पच के मरे। क्या ठीक कोन मालिक बने अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। सन्तोष घर आराम का अब तक तुझे मालूम नहीं, माया० ॥५॥ १८--क्रोध निषेध—क्रोध मत कर ऐ जिया सुन हाल छट्ठे पाप का। क्रोध की ज्वाला गरम रख खोफ इसकी ताप का ॥टेक॥ क्रोध जिसके छा रहा वहा सत्य का क्या काम है। सरलता नहीं, नम्रता नहीं रहे क्षमा गुण आपका, क्रोध की०। १॥ एक क्रोधी जिसके घर सब कुटुम्ब को क्रोधी करे। दिल चाहे जो बकता रहे नहीं ध्यान रहे माँ-बाप का, क्रोध की० ॥२॥ क्रोधी अपनी जान या परजान को गिनता नहीं। अवगुण निकाले और के यह काम नहीं सराफ का, क्रोध की० ॥३॥ प्रीति टूटे क्रोध से गुण नष्ट होवे क्रोध से। हित बात पर गुस्सा करे फिर काम क्या चुप चाप का, क्रोध० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। क्रोध से बचते रहो टल संजाय दुख ताप का, क्रोध की० ॥५॥ १९--मान निषेध--मान करना है बुरा जहाँ मान वहां अपमान है। लाभ या नुकसान इससे तुझको नहीं कुछ भान है ॥टेक॥ लाखों रुपैया हाथ से बरबाद कर दिया मान से। शुभ काम में दमडी

नहीं तू काम का इन्सान है, मान० ॥१॥ सीता को देखा हाथ से रावण को मुश्किल होगया। मर मिटा वह भी मगर अभिमान ऐसी शान है, मान ॥२॥ संसार में या धर्म में है बीज बोया फूट का। जिस को किया राजी यहाँ आखिर मरक स्थान है, मान० ॥३। दुनिया में कई होगये फिर और भी हो जायेंगे। घूमते गजराज जिनके स्थान अब वैरान है, मान० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। छोड़ दे जो मान उसका तुरत ही सम्मान है, मान० ॥५॥ २०—कपट निषेध—कपट करना छोड़ दे निष्कपट रहना ठीक है ॥टेक॥ सीता सती को कपट से लंका में रावण ले गया। आखिर नतीजा क्या मिला निष्कपट रहना ठीक है ॥१॥ कपटी पुरुष का जगत में विश्वास कोई करता नहीं। कपट का घर झूठ है निष्कपट रहना ठीक है, कपट० ॥२॥ लेन में या देन में कुछ कपट न करना नहीं। यह राज में पावे सजा निष्कपट रहना ठीक है, कपट०। ३॥ माया से नर नारी हुए नारी से नपुंसक बने यह कपट का फल है सही निष्कपट रहना ठीक है, कपट० ॥४। मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। निष्कपट से सुखत बढ़े निष्कपट रहना ठीक है, कपट ॥५॥ २१-लोभ निषेध—लोभ महा पाप है तू लोभ तज सन्तोष कर। निर्लोभ में आराम है तू लोभ तज सन्तोष कर॥टेक॥ लोभ से हिंसा करे और झूठ बोले लोभ से। लोभ से चोरी करे तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥१॥ लोभ से माता-पिता और पुत्र के अनबन रहे। हित मीत सगपण ना गिने तू लोभ तज सन्तोष कर॥२॥ लोभवश जिनपाल जिनरक्ष जहाज में चढ़ कर गए। समुद्र में जिनरक्ष मरा तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥३॥ लोभ जहाँ इन्साफ नहीं तू देखले अच्छी तरह। सब पाप की जड़ लोभ है, तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। निर्लोभ से मुक्ति मिले तू लोभ तज सन्तोष कर, लोभ० ॥५॥ २२—राग निषेध—मोह नींद है अनादि इसको टाल टाल टाल। तेरे कौन है संघाति जरा भाल, भाल भाल ॥टेक॥ यह मोह पन्थ शत्रु है तू बाल बाल बाल। एक आत्मा तुम्हारा क्या पाल पाल पाल। तेरे० ॥१॥ रहेगा धरा यह यहाँ का यहीं धन माल माल माल। दुर्गति में तेरी आत्मा तू मन सम्भाल सम्भाल सम्भाल, तेरे० ॥२॥ मत कर गरूर देख तू काले बाल बाल बाल। तेरे सिर पर जबरदस्त है जो काल काल काल, तेरे० ॥३॥ नन्दलाल मुनि गुणखान की आज्ञा पाल पाल पाल। जो धर्म रत्न शीघ्र बँकर हाल हाल हाल, तेरे ॥४॥ २३—कुसम्प निषेध—सन्तों का कहना मान के तुम छोड़दो कुसम्प को। प्रेम से मिल जुल रहो तुम छोड़ दो कुसम्प को ॥टेक॥ भाई भाई या बाप बेटा राज तक भी चढ़ गए। अर्थात् पैसे का किया तुम छोड़ दो कुसम्प

को, सन्तों० ॥१॥ राज रावण का गया पञ्चों की गई पचायती। साधु की गई सत्यता तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥२॥ कई तो खुद मर गए और कई को मरवा दिए। कई गए प्रदेश में तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥३॥ कई की इज्जत गई कई धर्म में हानि करी। भरम घरका खोदिया तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी का यही नित उपदेश है। सम्प में सुख है सदा तुम छोड़ दो कुसम्प को, सन्तों० ॥५॥ २४--नं० बुराई का निषेध—कर के बुराई और की क्यों पाप का भागी बने। बहकाने वाले बहुत हैं क्यों पाप का भागी बने ॥टेक॥ सत्य हो चाहे झूठ हो निर्णय तो करना ठीक है। अपनी अपनी तान के क्यों पाप का भागी बने करके० ॥१॥ कानें सुनी झूठी होवे आँखों से देखी सत्य है। देखी भी झूठी हो सके क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥२॥ मुख से बुराई निकले ज्यों हाट हो चर्मकार की। यह न्याय निन्दक पै सही क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥३॥ नीर को तज खीर पीवे हंस का यह धर्म है। तू भी गुण ले इस तरह क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी का यही नित उपदेश है। निन्दा पराई छोड दे क्यों पाप का भागी बने, करके० ॥५॥ नं० २५—ईर्षा निषेध—देख कर पर सम्पति क्यों ईर्षा करता है तू। जैसा करे वैसा भरे क्यों ईर्षा करता है तू ॥टेक॥ लक्ष्मी भर पूर फिर व्योपार में दुगने हुए। अपने अपने पुण्य हैं क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥१॥ पुत्र पौता आदि मनोहर बहुत ही परिवार है। मौज करे रंग महल में क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥२॥ जात या परजात या पचायत या सरकार में। पूछ जिनकी हो रही क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥३॥ दयावन्त दानेश्वरी उपदेश दाता धर्म का। महिमा सुनि गुणवान की क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलालजी का यही नित उपदेश है। वैर बुद्धि छोड दे क्यों ईर्षा करता है तू, देख० ॥५॥ नं० २६—सत्योपदेश—ये स्वार्थी स्वजन इनमें राचिए नहीं। तू मान मान मान मान तो ही ॥टेक॥ तू क्यों करे अभिमान बहुत वक्त है नहीं। लेना है यहां विश्राम आखिर पन्थ तो वही, तू मान० ॥१॥ तेरे दिल में कुछ और मुंह से कहत है कई अधर्म में तमाम उमर बीत यों गई, तू मान० ॥२॥ दिल चाहे सो कर मित्र यहाँ तो पूछ है नहीं। कर्मों का तो इन्साफ तेरा होगया वहीं, तू मान० ॥३॥ मेरे गुरु नन्द लाल जिनकी कहन है यही। कर भलाई इक धर्म म रही, तू मान० ॥४॥ नं० २७—उपदेश—जिया मान ले मुनी राज सच्ची कहते हैं अरे। ले मुक्ति को सामान अब ढील क्यों करे, ॥टेक॥ ये पुत्र मात तात भ्रात जिनसे नेह करे। न तुझको तारण हार क्यों इनके जाल में परे, ले० ॥१॥ है थोड़ी

सी जिम्हगामी त न पाप से डरे । बिन पाल्या धर्म नियम कैसे आत्मा तरे, से ॥२॥ हो आऊं मैं धनवान ऐसी कल्पना करे ॥ म
माग बिना पावे नाहक डोलतो फिरे, ते० ॥३॥ महामुनि नन्दलाल जी है सन्त में सर । संसार सागर घोर आप तारे भी तरे,
से ॥४॥ नं २८ कंजूस की दशा—मू जी अपने हाथ से नहीं जीते जी कभी दान दे । रात दिन ओढे जमा नहीं जीने जी कभी
दान दे ।टेक॥ पुजारिक को दान देते देख के मू जी कभी । तो खुद करे एकासना नहीं जीते जी कभी दान दे, मू जी० ॥१॥ चाहे
कोई कुछ भी दे उसका फिकर मू जी करे । जहां तक बने करते मना नहीं जीते जी कभी दान दे, मू जी० ॥२॥ दीन दुखिया द्वार पै
कोई सवाल डाले आन कर । करुणा का जिसके काम क्या नहीं जीतेजी कभी दान दे मू जी० ॥३॥ साफ वस्त्र पहनना चाहे कोई
भी त्योहार हो । माया का मजदूर बो नहीं जीते जी कभी दान दे मू जी० ॥४॥ मेरे गुरु नन्द लाल जी का यही नित उपदेश है ।
मू जी पू जी धर आपगा नहीं जीतेजी कभी दान दे मू जी० ॥५॥ नं २९ माता पिता का कर्तव्य —[तर्ज—प्यारा प्रभू से अर्ज
हमारी है रात दिन] बचपन से ही माँ बाप शुभ आचार सिखाते । मकदूर क्या जो पुत्र वो कुपूत कहलाते ।टेक॥ अपना अदब
गुरु का विनय की रीत बताते । पुजवाते जी जी कार तो भरा जगत में पाते मकदूर० ॥१॥ जो हिंसा झूठ चोरी कुकर्मों से डराते ।
पहले हिदायत होती तो क्यों नाम लजाते मकदूर० ॥२॥ गुरु से सिखाई गालियां फिर वो हाथ उठाते । बीधे पकड़ के पास न कुछ
भी तो शरमाते मकदूर० ॥३॥ जैसे की रहे संग में गुण वैसे ही आते । इस न्याय को विचार के सुसंग कराते मकदूर० ॥४॥ मेरे
गुरु नन्दलाल जी सब बात बताते । सुपुत्र दीपक की तरह नित कुल को दीपाते मकदूर० ॥५॥ नं ३० गुरु की स्तुति—गुरु
देव की शुभ सेव पुण्य योग से मिली । सुन्या बैन खुल्या नैन मेरी ममता टली ।टेक॥ प्रकृति है शुभायस ज्यों गुलाब की कली ।
सब मन की मेरी आस बहुत दिन से फली, सुन्या ॥१॥ निर्पक्ष हो के कहते कथा ज्ञान की भली । सुने भाये स्वाद मुख में ज्यों
मिश्री की डली, सुन्या० ॥२॥ है ज्ञान के दरियाव धोवे पाप की कली । मैं मान माया लोभ है वैराग्य की झली, सुन्या० ॥३॥ मरा
मुनि नन्दलाल जी सन्तोष की सली । तस शिष्य को गुरु कृपा से सुख सम्पति मिली, सुन्या० ॥४॥ नं. ३१ स्थिवर मुनि श्री
नन्दलालजी महाराज के गुण—जैसे शशि है सोम ऐसी दीपति रवि । गुरु आपका उपकार मैं तो भूलतो नहीं ।टेक॥ दिया के
सागर आप पूरे जैन में पवि । सबसे अति शुभ प्रेम ऐसी सूरत शोभति गुरु० ॥१॥ भव जीवों के हित आप कथा कहते य कवि ।

उपदेश की छटा को पार न पावे सुरपति, गुरु० ॥२॥ चरचा में है निपुण करे वात सूत्रति । जिन धर्म की फते फते वजाते हो अति, गुरु० ॥३॥ मेरे गुरु नन्दलाल जी की दीपति रति । मैं आपका निजदास दीजो मोक्ष की गति, गुरु० ॥४॥ नं० ३२ चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त को उपदेश-(तर्ज—कव्वाली) ब्रह्मदत्त मान ले कहना, वक्त यह फिर न आवेगा । नाहक भोगों में ललचा के, नफा तू क्या उठावेगा ॥टेर॥ पूर्व भव का है तू भाई, कहू मैं साफ दर्शाई । और हित के लिए तुझको कौन सच्ची सुनावेगा ॥१॥ कुटुम्ब निज मित्र और न्याति, यह तो सब स्वार्थ के साथी । तुझे जब काल के मुंह से नहीं कोई छुडावेगा ॥२॥ मेरी यह मेरी यों करके, असल में जहाॅ की जहाॅ धरके । चली जा रही है सब दुनियाॅ तू भी ऐसे ही जायगा ॥३॥ स्वजन धन फोज चतुरंगी कोई किस का नहीं संगी । याद रख एक दिन नृप तू अकेला ही सिधावेगा ॥४॥ मुनि नन्दलाल गुरु ज्ञानी, जिनकी सुन प्रेम से वानी । दया के कुण्ड में न्हाले दु:खों की दाह बुझावेगा ॥ ब्रह्मदत्त मानले कहना, वक्त यह फिर न आवेगा ॥५॥ नं० ३३ असल में कौन—(तर्ज-पूर्ववत) वता दे नाम तू उसका असल में कौन है तेरा । जिया सत्संग करने से, मिटे चौरासी का फेरा ॥टेर॥ रानी देवकी के अंग जाया, द्वारिका नाथ कहलाया । कुटुम्ब कोई काम नहीं आया जिन्हों के अन्त की वेरा ॥१॥ चौथा चक्रवर्त सारया रूप देखन को सुर आया । विगड़ गई छिनक में काया, उनको जब रोग ने घेरा ॥२॥ धन्न इब्बों का था घर में, जहाज चलती थी सागर में । सेठ कहलाते नगर में, यहां पर वह भी नहीं ठेरा ॥३॥ पूर्ण समकित में दृढताई, श्रेणिक नृप था वड़ा न्याई । छोड कर राज सब यांही, नरक में जा किया डेरा ॥४॥ देख ससार की रचना, नाहक योंही पाप में पचना । हो तो विद्वान तू वचना, मुनी नन्दलाल गुरु मेरा ॥ वतादे नाम तू ॥५॥ नं ३४ हितोपदेश-(तर्ज-पूर्ववत्) समझ नर क्यों गाफिल हो के वक्त अनमोल खोता है । मुक्ता फल छोड़ के असली, क्यों झूठा पोत पोता है ॥टेर॥ ठगो की नगरी है सारी, इसमें तू आया व्योपारी । तुझे कुछ भी नहीं मालुम, सुवह का शाम होता है ॥१॥ खर्च कितना किया वह लेख, कमाई क्या करी सो देख । आम उखाड के जड़ से, आक का वीज वोता है ॥२॥ निगाह कर देख तो घर की, बुराई क्यों करे पर की । ज्ञान की गहरी नदियों में पाप मल क्यों न धोता है ॥३॥ फिरे तू हो के मदमाता धर्म के पथ नहीं आता । पड़ा मोह जाल के फंद में, जैसे पिंजरे में तोता है ॥४॥ मुनि नन्दलाल हित आनी, कहे सो मान भव प्राणी । सड़क सीधी है शिवपुर की, देख किस तर्फ जोता है ॥ समझ नर क्यों ॥५॥ नं० ३५ नशा निषेध—(तर्ज:-माता मरु

देवी के साल मोक्ष की राह बताने वाले) मत कर मथा फलना मान तू अपना हित चाहने वाले ।टेर। जो करते मथा प्रमाण, उनके रहे नहीं कुछ मान सब ही लोग कहे बेईमान, कुल का नाम लजाने वाले ॥१॥ कोई कपड़ा माल गमाते, कोई गलियों में गिर जाते कुत्ते उनके मुँह चाट जाते मक्खियों को न उड़ाने वाले ॥२॥ वह निश्चय होते थोड़े, फिर संग छोकरा दौड़े भर के वर्तन चाहन फोड़े, हाँ २ हँसी करने वाले ॥३॥ न रहे हिताहित खयाल, मुँह से बोले भाल पंपाल करते लोग हाल बेहाल, क्या क्या मोह उठाने वाले ॥४॥ है बहुत मजे का टेम, तेरे नित्य रहेगा क्षेम, जिस से करले भठपट नेम, अपनी इज्जत बढ़ाने वाले ॥५॥ गुरुवर मेरे श्री नन्दलाल है सब जीवों के प्रतिपाल, देते मिथ्या भर्म को टाल सच्चा नाम सुमराने वाले ॥ मत कर मथा० ॥६॥

नं० १ चौबीसी जिन गुण—(तर्ज—माथ रंग बरसेरे २ म्हारा मनकु वर जिन जियको तरसेरे) शुभ फल पावो रे २ चौबीस जिनन्द जी का नित गुण गावोरे ।टेर। धर्म जिनेश्वर चन्द्रा प्रभुजी ऋषभ प्रथम अवतारी रे। महावीर कुन्थु जिन अपनी जय जय कारी रे ॥ शुभ० ॥१॥ शान्ति नाम से शाता वरते, अनन्त सुपार्श्व ध्यावे रे। सुमति नाथ प्रभु पार्श्व परसतां पाप पुलावेरे ॥ शुभ० ॥ ॥ रिष भम श्री मुनि सुव्रतजी, विमल निर्मल गुण धारी रे। पद्म प्रभु अभिनन्दन, आवागमन निवारी रे॥ शुभ ॥३॥ श्री सम्भव नमि मल्लि, महाराज पाप मल हरियार रे। वासु पूज्य शीतल जिन, सुख शिवपुर का वरिया रे। शुभ० ॥४॥ सुविधि नाथ श्री अजित प्रभु, पचीस भावना पाली रे, अरह नाथ श्रेयांस अनन्त पद, लियो सम्भाली रे॥ शुभ० ।५॥ इस विध आप जपे जिनवर का, चैत्र तर्के पर मायेरे। अर्गत भय दुःख दूर टले, कमला घर आवेरे ॥ शुभ० ॥६॥ फरिद कोट पूज्य मुन्नालालजी, नवलखणा से आयारे। महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जिन गुण गाया रे॥ शुभ० ॥७॥ नं २ वीर गुण गान— (तर्ज संग चलू मैं पिया) मत भूलो क्यारे, मत भूलो कदा। वीर प्रभु के गुण गावो सदा ।टेर। ज्यो २ भाव प्रभु प्रगट किया गणधर सूत्रों में गूंथ लिया। मत० ॥१॥ प्रभुजी की वाणी को ध्याय आधार सुन २ सफल करो अवतार। मत ॥२। जल से नहाया तन मैल हटे, प्रभुजी की वाणी से पाप कटे। मत० ॥३॥ दुरत फुरत सब विपति टले, जितां तितां वंछित काम फले। मत० ॥४॥ मुनि नन्दलाल जी हुकम दिया, जब पायल पिंडी चौमासा किया। मत० ॥५॥ नं० जिन गुण—(तर्ज-पूर्ववत्) जिन राज ऐसा रे, जिन राज ऐसा। जिस दिन म्हारे मन में बसा।।टेर। जगत में सदा सदाय जगदीश शत्रु मित्र पर राग न रीश ।जिन ॥१॥ गुण तो अनन्त चौतीस भेद करे,

इन्द्रादिक सुर पॉय परे। जिन० ॥२॥ वाणी तो वरसे ज्यों अमृत धार, भव जीव सुणे जांके हर्ष अपार । जिन० ॥३॥ जिहाँ तिहाँ विचरे श्री भगवान, धर्म को उद्योत करे जिम भान । जिन० ॥४॥ मांडलगढ में मुनि नन्दलाल, तिल शिष्य जोड़ बनाई रसाल । जिन० ॥५॥ ४—जिन-वाणी—[तर्ज-पूर्ववत्] जिन वाणी ऐसी रे। जिन वाणी ऐसी। कुमति गई ने म्हारे सुमति वसी । टेर॥ सुनत मिटत दुष्ट कर्म अरी, जो भव जीव सुने भाव धरी। जिन०॥१॥ जो जिन वाणी परकाशे जिनराज, इन्द्रादिक आवे सुनवा के काज, जिन०॥२॥ सुन-सुन उत्तम जीव अनेक, उतर गया भव सागर देख। जिन०॥३॥ काम क्रोध मद लोभ की झाल, शीतल होय सुनता तत्काल । जिन० ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जान, गायो चित्तौड़ में करिये प्रमान । जिन० ॥५॥ ५—परमेष्ठी गुण–[अवधु सो जोगी गुरु मेरा] आछो आनन्द रग बरसायो, मैं तो देख सभा हुलसायो ॥टेर॥ अरिहन्त नमूँ पद पहले, भव जीवा ने शिवपुर मेले, लोकालोक को स्वरूप बतायो। आछो०॥१॥ दूजे पद श्री सिद्ध ध्याऊँ, कर जोड़ी ने शीश नमाऊ जनम मरण को दु ख मिटायो। आछो० ॥२॥ आचारज तीजे पद सोहे, चारों तीरथ के मन मोहे, ज्ञान ध्यान में चित्त रमायो । आछो० ॥३॥ उपाध्याय मेरे मन भावे, कई सन्तों को ज्ञान भणावे, जांकी बुद्धि को पार न पायो ॥ आछो० ॥४॥ सर्व साधुजी गुण का दरिया, जाने पापे सहु पर हरिया, मोकूँ मुक्ति को पंथ बतायो। आछो० ॥५॥ ये तो पाँचों ही पद भज भाई, नित एक चित्त ध्यान लगाई, कारज सिद्ध हुवे मन च्हायो । आछो० ॥६॥ नन्द-लाल मुनि गुणधारी, तस शिष्य कहे हितकारी, मैं तो मगलीक आज मनायो ॥ आछो० ॥७॥ ६—गौतम-गुण–[तर्ज—रे जीवा जिन धर्म कीजिये] गौतम गण धर वदिने। पूरण लब्धि भडार ॥टेर॥ चौवीस मा वर्धमान के, चेला चतुर सुजान । सव साधा में शिरोमणि, ऊगा जगत में भान । गौतम० ॥१॥ चवदे पुरवना पाठीया, ज्ञान चार वखान। तपस्या करी चित निर्मली, नहीं मन्न गिल्यान । गौतम० ॥२॥ परवत में मेरु वड़ा, सीता नदियाँ के माँय । स्वयभू रमण दधियॉ विषे, एरावत गज माय । गौतम० ॥३॥ सब रस में इक्षु रस वड़ा, दान में वड़ा अभयदान । ऐम अनेक है ओपमा, कहाँ लग करूँ जी वखान। गौतम० ॥४॥ सर्व वर्णॉ वर्णनो आउखो, दश जुग रया घर मॉय । पीछे एवा गुरु भेटिया, चौवीस मा जिनराय ॥ गौतम० ॥५॥ तीस वरस छद मस्त रया, पीछे केवल ज्ञान । द्वादश वर्षनो पालने, पहुँचता निर्वान । गौतम० ॥६॥ अनन्त सुखा में विराजिया, माता पृथ्वी का नन्द। खूबचन्द कहे थारा नाम से, भयो मगन आनन्द। गौतम० ॥७॥ ७—सुधर्म गणधर के गुण—(सग चलू जी पिया) कर कुमति विदा २ स्वामी सुधर्मा

जी म जम्बु सदा ।।टेर।। वीरजी के विराज्या परथम पाट सुधर्मा बताई जाणे मुगति की वाट । कर० ।।१।। सो वर्ष को आऊं था पाया तास पचास वर्ष रहीया गृहवास । कर० ।।२।। संजम लियो थार मीके मंग जात, गुरु भेटया जाने त्रिलोकीनाथ । कर० ।।३।। मति श्रुत अवधि मन पर्यव ज्ञान चवदा पुरव विद्या को प्रमान ।। कर० ।।४।। बयालीस वर्ष ध्याता निर्मल ध्यान, प्रकट हुओ पीछे केवल ज्ञान । कर० ।।५।। रूप दीपे जांको जगमग ज्योत, देवता से पण अधिक उद्योत । कर० ।।६।। जम्बू सरिखा जाके शिष्य है वनीत, रात दिवस जांको चरणा में चित ।। कर ।।७।। वाणी प्रकाशी जैसे अमृत धार, सूत्र रच्या जांको मोटा आधार ।।कर०।।८।। आठ वर्ष केवल परपर्याय पाल, मुगतिविराज्या पीछे दीनदयाल ।। कर० ।।९।। पाट विराजे जांके जम्बू अणगार परम वैरागी घणो कियो, उपकार । कर ।।१०।। चम्मालीस वर्ष पाल्यो केवल ज्ञान, ते पण पाया प्रभु शिवपुर स्थान । कर० ।।११।। सुधर्मा स्वामी ने जम्बू अणगार, वन्दन नमूं जांके वारम्बार । कर० ।।१२।। सूरजमल कहे मेरे गुरु नन्दलाल तिण प्रसादे गायो वेपन के साल । कर० ।।१३।।

८—जिनेश्वर जन्म—[तर्ज—हरिश्चन्द्र राजाजी] जिनेश्वर रायाजी, स्वर्ग थकी चय आवे, प्रजा सुख पावे, हो जिनेश्वररायाजी ।।१।। जिनेश्वर रायाजी गगन निर्मलो वर्षे, वर्षा सम वर्षे, हो जिनेश्वर रायाजी ।।२।। जिनेश्वर रायाजी शाखों निपजे सारी, पुण्याई थारी हो जिनेश्वर रायजी ।।४।। जिनेश्वर रायाजी आछो वधायों आवे, के हर्ष मनावे हो जिनेश्वर रायाजी ।।५।। जिनेश्वर रायाजी शकुन मिले सब ताजा, आदर देवे राजा, हो जिनेश्वर रायाजी ।।६।। जिनेश्वर रायाजी, गुरु नन्दलालजी ध्याऊं, सदा गुण गाऊं, हो जिनेश्वर रायाजी ।।७।।

९—जिन जन्म महिमा—[तर्ज—तू सुन म्हारी जननी आज्ञा देवो तो संजम आदरूं] जिन जन्म की महिमा, करवाने आया देवी देवता ।टेर। मथ इन्द्र ईशान इन्द्रजी, तिजा सनतकुमार । महिन्द्र ब्रह्म लतक महा शुकर, वलि इन्द्र संसार ।। पाण इन्द्र और अचू इन्द्र आवे, लेकर सब परिवारजी ।। जिन० ।।१।। सहस्र चौरासी अस्सी बहोतर, सीतर साठ पचास । पचास चाली तीस बीस दश, सामानिक सुर आस ।। चार गुणा सामानिक सुर ने आतम रक्ष परमाणजी ।। जिन० ।।२।। बारा सहस्र चवदा वलि सोला तीन परिषदा मांय । दो दो सहस्र कम करके ऊपर दो दो सहस्र बढ़ाय ।। ये इन्द्र तक एणविध कीजो, चतुर हिसाब लगायजी ।। जिन ।।। सहस्र पाच मे ढाई से अरु फेर सवासो पाय । दुगुणा २ तीन दफे तुम कीजो जोड़ लगाय ।। इतने सुर एक एक इन्द्र के, तीन परिषदा मांयजी ।। जिन० ।।४।। लख योजन का लम्बा चौड़ा, आयारत विमान । एक सहस्र योजन की सबके,

महिन्द्र ध्वजा परिमान ॥ सुघोषा महाघोषा, घटा, पाच पाच के जानजी । जिन० ॥५॥ चमरिन्द्र वलइन्दर प्रमुख, भवनपति के वीस । काल और महाकाल आदि दे व्यतर के वत्तीस ॥ चन्द्र सूर्य इन्द्र मिल होगए, चार वीस चालीसजी ॥ जिन० ॥६॥ अध लक्ष जोजन लम्बा चौडा, असुरा का विमान । धरणिन्द्रादिक अष्टादश के, सहस्र पच्चीस प्रमान । व्यतरिन्द्र और रवि शशि के, सहस्र जोजन का मान जी ॥ जिन० ॥७॥ वैमानिक से आधी ऊची, जानो असुर कुमार । नवनिकाय के ढाई से की, महिन्द्र ध्वजा विस्तार ॥ सौ ऊपर पच्चीस जोजन की, व्यतर जोतिषी धारजी ॥ जिन० ॥८॥ इण विध हुआे समागम सुर को, जिन महिमा के काज । मेरे गुरु गुण आगर मानू, नन्दलाल महाराज । रावलपिन्डी जोड वनाई, सरिया वन्छित काजजी । जिन० ॥० ॥६॥ १०—झूलना—[तर्ज—जिनद जश जग में] माताजी हुलरावे, पुतर ने राग सुनावे रे ॥टेर॥ रतन जड़ित पालनियो जाने रेशम सेती वनियो ॥ धन जननि नन्दन जनियो रे । माता० ॥१॥ सोना की सॉखल वाधी, फिर पालणिया में फाधी । जांके अधवीच झूमर वाधी रे । माता०॥२॥ कोई चकरी भवरा लावे, कोई नृत्य करी रींझावे । कोई घूघरिया घमकावे रे । माता० ॥३॥ कोई सिर पर टोपी मेले, कोई अधर हाथ में झेले । ई ज्यू ज्यू बालक खेले रे ॥ माता० ॥४॥ कोई कान में वाता कहवे, कोई गोदी मॉही लेवे । कोई काजल टीको देवेरे ॥ माता० ॥५॥ जब चमक नींद से जागे, तव रमझम करता भागे । जाकी सूरत सोहनी लागे रे । माता० ॥६॥ माता अचला देवीजी का नन्दा, अश्वसेन राय कुल चदा । जाने सेवे सुर नर वृन्दा रे ॥ माताजी० ॥७॥ खूबचन्द कहे पुन योगे, या ऋद्धि पाई सजोगे । यह तो करनी का फल भोगेरे ॥ माता० ॥८॥ ११—जिनेन्द्र प्रताप—[तर्ज—मुगत पद पाया हो भरतेश्वर मोटा राजवी] आनन्द वरते हो जिनन्दा, थारा नाम सू ॥टेर॥ प्रभु नाम को सुमरण मोटो, जाप जप्या मन मॉय । मन वांछित कारज सिद्ध थावे, पातिक दूर पलाय ॥ आनन्द ॥१॥ समरथ जान शरण में आयो, अवर देव कुण जाचे । आम स्वाद जिण चाख लियो तो, इमली में कुण रांचे । आनन्द ॥२॥ रत्नाकर मिलियो पुन योगे, हियो वहुत हुलसावे । सफल काज हो गया कहो फिर फकर कौन उठावे ॥ आनन्द ॥३॥ कृपानिधि शिवपुर के वासी, यह मेरी अरदास । चार तीर्थ में कुशल रहे, सुख सम्पति लील विलास । आनन्द ॥ क्षीर समुद्र भरयो मुख आगे, कुण करे नाडी आस । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कहे, मुझ प्रगटी सुख की रास । आनन्द० ॥५॥ १२—मुनिराज—[तर्ज—सोरठ] धन जग में मुनि राया, ज्याने कर लीना मन चाया रे ॥टेक॥ सुमति गुपति नित दाव तिरन को,

तामें चित्त रमाया रे ॥ धन ॥१॥ काम क्रोध मद लोभ तरसना, दूर तजी मोह माया रे। धन०॥२॥ कर कर ज्ञान प्रकाश हिया में, वैराग्य रहे नित छाया रे। धन० ॥३॥ कर्मदली कई शिवपुर पाया, कई सुरलोक सिधाया रे। धन०॥४॥ मुनि नन्दलाल तणो शिष्य जग में, जिहाँ तिहाँ यश पाया रे ॥धन० ॥५॥ १३–वीर मिलन की लालसा–[तर्ज—हो नये नीत हीम कितनेक जन्तु के मालवी] मैं तो शिवपुर को वासी वीर जिनन्द से मिलसूं रे ।टेर॥ तिसलादे माता के नन्दन, पिता सिद्धारथ राय। बहत्तर वर्ष की आयुष ज्योंकी, कंचन वरणी काय ॥ मैं तो० ।२॥ सुर नर के पुजनीक प्रभु रया, तीस वर्ष घर माँय। संजम ले फिर कर्म काट कर, मोक्ष पिराजा जाय ॥ मैं तो० ॥२॥ मैं इस भरत क्षेत्र के माँहि, आप मोक्ष के माँय। अब अन्तर को कम्पो समावो, पग्रो करू अब आप। मैं तो० ॥३॥ जिन रस्ते प्रभु आप पधारया, शिवपुर आसन ठायो। यो रस्तो ईकृत फिरयोस पथ, ना मूझ कयी बतायो ॥ मैं तो०॥४ सुधा सीधा बहुत मिल्या मुझ, उसकी राह बताई। मिलोमी सतगुरु मिल्या जब सूधी वाट दिखाई। मैं तो० ॥५॥ अब मैं वाट कभी नहीं छोड़, अस्ती मस्ती दोड़। जहां होगा वहाँ आन मिलूंगा, संग कभी नहीं छोड़ ॥ मैं तो० ॥६॥ नन्दलालजी महाराज प्रसादे, सूरजमल इम गावे। प्रभु थारा प्रताप सेस म्हारे, सदा नवे नन्द पावे मैं तो॥७॥ १४ वीर की क्षमा—[तर्ज—नाम की मिश्री बूटी मिश्र बूटी] मेरे प्रभु वीरजी धोरची। कांई क्षम्या करी भरपूर ॥ टेर ॥ कठिन कर्म को काटवा, गया देश अनार्य सुमदर। मेरे०॥१॥ कम से कम कर तप किया कांई उत्कृष्ट किया छ मास ॥मेरे ॥२॥ मिला चण्ड का वावला, कांई घोर कुटा को आहार ।मेरे० ॥३॥ आप खड़ा जब ध्यान में कांई लम्बी भुजा पसार। मेरे० ॥४॥ बाल बॉच धपका दिया, कांई दी मार अनार्य लोग। मेरे० ॥५॥ कुत्ता लगाया काटना, कांई कर दुत्कार अयोग ॥ मेरे०॥६॥ देव मनुष्य तिर्यंचका, कांई उपसर्ग सहे अपार ॥ मेरे० ॥७। अधिक द्वादश वर्ष में, कांई उपनो केवल ज्ञान ॥ मेरे ॥८॥ दया धर्म फैलाय के, कांई किया मोक्ष में वास ॥ मेरे० ॥९॥ गुरु नन्दलालजी का हुक्म से, किया रामपुरे चोमास। मेरे० ॥१०॥ १५–गुरुदेव दर्शन—[तर्ज—आज रंग बरसे रे] आज मन भायो रे २ गुरुदेव आपका दर्शन पायो रे ।टेर॥ तारन तिरन जहाज आप, शिव मारग सूधो सीधोरे। बहुत दिनों से होती आश, भलो दर्शन दीधोरे। आज० ॥१॥ कल्पवृक्ष गुरु पारस सम छो, पूरण पर उपकारी रे। निज गुण की चहुँ दिशि फैल रही, महिमा थारी रे ॥ आज० ॥२॥ गुरु ज्ञान के भाल थंभ में, अभिमान नहीं राखो रे। संजम रवि वैराग्य मस्तक, सुख ऊपर बरसे रे, आज॥३॥आचारी पूरे ब्रह्मचारी को नव

नव कल्प विहारी रे। करूं कहा तक गुण वर्णन, तुच्छ बुधि हमारी रे ॥ आज० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की, चाहूं निरन्तर सेवा रे। है यकीन मुक्ति का निश्चय मिलसी मेवा रे ॥ आज० ॥५॥ १६-गुरु गुण—[तर्ज—गूथी लावो ए फूलां मालन म्हारे गेंद गजरो] म्हारा गुरुजी गुणवन्त आछो ज्ञान सुनायो ॥टेर॥ जीवयो अनादि मोह नींद में छायो । ज्ञान को जल छांट मोकू आप जगायो ॥ म्हारा० ॥१॥ प्यासीयाने ठार निर्मल नीर ज्यू पायो । भूखा ने खीर खाँड को जिम भात जिमायो ॥ म्हारा० ॥२॥ राग सुण ज्यू नाग रहे बहुत घुमायो । भादवे बरसात ज्यू झड़ आप लगायो ॥ म्हारा० ॥३॥ घोर यो ससार सागर आप फरमायो। डूबतॉ इण मॉय मोकू आप बचायो । म्हारा० ॥४॥ महामुनि नन्दलालजी तस शिष्य हुलसायो । उगणीसे तिरेसठ माँय गढ़ चित्तौड़ में गायो ॥ म्हारा० ॥५॥ १७-दीक्षार्थी को माता की शिक्षा—[तर्ज—पूर्ववत्] सुणो लाल सजम पाल वेगा मोक्ष में जाज्यो ॥टेर॥ विनय करी खूब गुरुदेव रिझाज्यो । होय तो अपराध बारम्बार खमाज्यो । सुणो० ॥१॥ सीखज्यो बहु ज्ञान परमाद घटाजो । मेघ ज्यू तपस्या की झड़ी खूब लगाजो ॥ सुणो० ॥२॥ आज ज्यु दिन रात थे वैराग्य वधाजो । सार दया धर्म तामें चित्त रमाजो । सुणो० ॥३। फेर दूजी मात के मत कूख में आजो । जन्म जरा मर्ण का सब दुःख मिटाजो । सुणो० ॥४॥ पेतली तुम सीख ऊपर ध्यान लगाजो । महा मुनि नन्दलालजी सुख सम्पति पाजो । सुणो० ॥५॥ १८-गुरु की शोभा (तर्ज—गुरु निग्रन्थ नहीं जोया जीव तैंने गुरु) गुरुजी विराजा सोहे सभा में, गुरुजी विराजा सोहे रे ॥टेर॥ समता के सागर गुण रतनागर, सुर नर का मन मोवेरे। ज्ञान सरोवर में करत किलोला, पाप तणा मल धोवेरे। गुरु० । १। नरनारी बहु हिल-मिल आवे, निरख २ मुख जोवेरे। मधुर वचन से भव जीवों का, मिथ्या भर्म सब खोवेरे । गुरु० ॥२॥ ग्राम नगर मेरे गुरुजी पधारे, जहा बीज धर्म को बोवेरे । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कहे, मेरो रोम २ खुश होवेरे । गुरुजी० ॥३॥ १६-पूज्य दर्शन--(तर्ज—चेतन चेतोरे) दर्शन कर सारे २ म्हारा पुन्य योग से पूज्य पधारया रे ॥टेर॥ गाम नगर पुर पाटन विचरत, पूज्यजी आज पधारया रे । सुर तरु सम मन वाञ्छित म्हारा, कारज सारया र । दर्शन० ॥१॥ उपगारी गुणधारी जाकी, सुर नर सेवा सारे रे । भव जीवाँ ने भव सागर से पार उतारे रे । दर्शन०॥२॥ कोई कहे मैं दर्शन करसा, कोई कहे सुणसा वाणी रे । कोई कहे मैं प्रश्न पूछसा, छे बहु नाणी रे । दर्शन०॥३॥ कोई बैठा गज तुरी ऊपरे, कोई कोई पाला जावेरे । कोई चढ़या रथ म्याना में जॉका, हिया हुलसावेरे । दर्शन० ॥४॥ कोई जावे कोई आवे

पाखा जगे मेरी रखी लागीरे। कोइ कहे तू काल में आयो, सर सु मांगी रे। दर्शन० ॥४॥ कोई बैठा निज मन्दिर अपने, पूज्य की भावना भावेरे। कोई एक दर्शि जोय रहा, कोई शकुन मनावेरे। दर्शन० ॥६॥ नन्दलालजी महाराज प्रसादे सूर्यचन्द्र इम गावेरे। धन ओंको अवतार पूज्य की सेवा पावेरे। दर्श० ॥७॥ २०—गुरु सेवा—(तर्ज—रूप तम मोजता र) गुरुजी आपकी र गुरुजी आपकी रे भाग्य सेवा मिली पुन योग ॥टेर॥ समापत धर्माविक गुण के तुम हो सिन्धु समान। मिथ्या तिमिर के नाश करन को, प्रगट हुवे हो भान। गुरु ॥१॥ नाता तोड़ दिया तृष्णा का, नहीं किसकी दरकार। अपने दिल में समझ लिया, कंचन पत्थर इक सार॥ गुरु ॥२॥ मन को जीत लिया विषयों से धर्म ध्यान में लीन। निज आतम सम जान जगत को अभय दान तुम दीन। गुरु० ॥३॥ पल मात्र भी शुभ पुरुषों का संग करे नर कोय। सच्चा ज्ञान मिले फिर उनको क्यों नहीं मुक्ति होय। गुरुजी० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनीश्वर बहु गुणी विद्वान। पर उपकार जान हम सबको भी शिक्षा दिल ध्यान। गुरु० ॥५॥ २१—ज्ञानी गुरु का निर्णय (तर्ज-फाग) ज्ञानी गुरु बिना कौन करे निस्तारो रे। कुँवर सुबाहु पंच शत मध करने। आखिर मोक्ष गति वरणा। ज्ञानी० ॥१॥ परदेशी नृप का हुआ निस्तारा। केशी स्वामी का भेट्या चरणा। ज्ञानी० ॥२॥ मेघ मुनि सुमति मन गज का। न्याय सुनाय के स्थिर करणा। ज्ञानी० ॥३॥ कुण्डरिक पुण्डरिक दोनों भाई। करणी जैसा सुख-दुख भरणा ज्ञानी० ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे। सो देव गुरु धरम शरणा। ज्ञानी० ॥५॥ नं २२—(तर्ज—पूर्ववत्) ज्ञानी गुरु बिना कौन कहे साची ॥टेर॥ कठिन कहे मुनि जो सर्व भाखे। जोर के नाप लगे टाँची। ज्ञानी० ॥१॥ चित्त मुनि कही ब्रह्मदत्त नहीं मानी। नर्क गयो भोगों में राची। ज्ञानी० ॥२॥ जो निज सुख चाहो अहो ! मानव। करणी करो आछी आछी। ज्ञानी ॥३॥ आये हो परभव का सुख देखी। अब यो पाठ मत लीजो पाछी। ज्ञानी ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे। शुद्ध देव गुरु धर्म लीजो जाची। ज्ञानी ॥५॥ २३—वीर वाणी—[सुगत पद पाया हो भरतेश्वर मोटा राजवी] वाणी बाजे म्हाने वीर धीर की वाणी रे ॥टेर॥ सभा बीच जगनाथ विराजे सिंहासन दीदार। शुभ लक्षण तन पूरण ज्ञान गुण करुणा के भंडार॥ वाणी ॥१॥ प्रेम सहित वाणी का प्यासा राजा रिद्ध नरनार। आय-आय चरणों में झुके, गुण बोले वारम्बार। वाणी० ॥२॥ षट् बोल की कह आस्ता, दो विध धर्म उदार। सुर नर इन्द्र विद्याधर सुन सुन, हर्षित होय अपार। वाणी० ॥३॥ महाव्रत अनुव्रत त्याग नेम कहि, धारत है नर नार। धर्म कथा ताजी नहीं जावे, अवश्य होय उपकार। वाणी० ॥४॥

श्रोता चाहे वीर वाणी हम सुनते रहें हर बार। मुनि नन्दलाल तणा शिष्य हिंजी, जोड़ करी तैयार। आछी० ॥५॥ २४--संत--[तर्ज़ पजाबी] सतो में सत वही है, जो पालक पच चार का ॥टेर॥ आतम सम ज ने पर प्राणी, भूठ त्याग बोले सत्य वाणी। रज़ा बिना कछु लहे न जाणी, तज दिया फिकर ससार का, सब जग से निरमोही हैं॥ सतों में० ॥१॥ एक जगह स्थिर वास न रहना, सुन दुर्वचन कुछ नहीं कहना, भिक्षा मॉग गुजर कर लेना, दिल रखे सभी पर सार का। चाहे राजा रक कोई है॥ सतों में० ॥२॥ माया से मुहब्बत नहीं जोड़े, विषयों से अपना मन मोड़े। कोध कपट निन्दा को छोड़े, नहीं सग करे वदकार का। ॥ दुर्मति दूर खोई है। सतों में०। ३॥ दुनिया से हरदम रहे न्यारा, कुव्यसनों से करे किनारा, ऐसा सत ईश्वर को प्यारा, करे धन्धा ज्ञान विचार का, तब सुधरे भव दोई हैं॥ सतों में० ॥४॥ गुरु नन्दलाल महामुनिराया, कृपा कर ज्ञानामृत पाया, नयाशहर में भजन बनाया, गुरु किया काम उपकार का। हिये ज्ञान वेल वोई है॥ सतों में० ॥५॥ २५-गुरु महिमा—[तर्ज़—पूर्ववत्] सब मिथ्या भ्रम खोते हैं, मुनिराज ज्ञान भडार है ॥टेर॥ छोड दिया गृहस्थी का नाता, जोड़े नहीं फिर प्रेम का ताँता, करते फक्त धर्म की वाता, उनका यही व्योपार है। नहीं बुरी नजर जोते हैं॥ सब मिथ्या० ॥२॥ राव रक की रखते नाहीं, सबको देते साफ़ सुनाई, निर्लोभी और बेपरवाही, दृग्दृष्टि बुद्धि अपार है, समकीत का बीज बोते हैं॥ सब मिथ्या० ॥२॥ शम दम और साच के सूरे, निशदिन रहे कपट से दूरे, तप करके कर्मों को चूरे, जो दम्यावंत अनगार है, सुमति की सेज होते हैं॥ सब मिथ्या० ॥३॥ दोष टाल लेते अन पानी, कभी न बोले सावद्य बानी। गुरु हुकम रखते अगवानी, फिर क्यों न सफल अवतार है। सुर नर का मन मोहते हैं॥ सब मिथ्या० ॥४॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनी हैं, जिन शासन में बड़े गुनी हैं, जिसने पहले वानी सुनी है, वह याद करे हरवार है। पुन योग दर्शन होते हैं॥ सब मिथ्या० ॥५॥ २६-अहिंसा—[तर्ज—पूर्ववत्] मत प्राणी के प्राण सतारे, कर दया धर्म का मूल है ॥टेर॥ छोटे बड़े कई जीव विचारे, सबको अपने प्राण पियारे। आतम सम लख न्यारे न्यारे, यह समदृष्टि का रूल है। मरते की जान बचारे। मत० ॥१॥ उच उच अशुभ अकृत्य कमाये, जिनसे योन पशु की पाये, विषम स्थान गिरि जगल माहे, ना कोई जिनके अनुकूल है। फिरे इत उत मारे मारे० ॥ मत०२॥ कई पशु रहते बिच बन के, भूख प्यास और शीत उष्ण के, कभी न कह सकते दुःख तन के, कौन पूछे तेरा क्या शूल है। अब महरबान बन जा रे। मत० ॥३॥ जो था मतग रहम दिल वाला, पॉच तले सुसले को पाला, मर कर हुआ नृप घर

साला, जिनमत का यही असूल है। क्यों दिल से दया बिसारे। मत० ॥३॥ गुरु नन्दलाल हुकम फरमाया, जब चोमास आगरे ठाया लोक सभा में भजन सुनाया, जब सुमरू दया कबूल है। तब होगी माफ खता रे। मत० ॥४॥ २७-सत्य—[तर्ज—पूर्ववत] क्यों असत्य मुँह से भाखे सत्य निर्बंध बोल विचार के ॥टेर॥ सतवादी सब बात बनावे, कर मुख कपट पलट मन आवे, उस नर की परतीत न आवे, सब निन्दे लोग बजार के। फिर कदर कोई नहीं राखे। क्यों० ॥१॥ जो नर सत्य धर्म को चाहते, उनपे कष्ट कभी नहीं आते सुर नर मददगार हो जाते, कहे धन धन सब संसार के। चरणों में झुके आ आके क्यों० ॥२॥ सत्य से विष अमृत होजावे पड़े पहाड़ से चोट न आवे, शास्तर में ज्ञानी फरमावे टसे विघ्न कई प्रकार के। जिया देख ज्ञाता अजमा के, क्यों॥३॥ हरिश्चन्द्र राजा सतधारी, बेची हाथ से तारा नारी जिसने भरा विप्र घर वारी, तब गया सर्व दुख टाल के। सुर इन्द्र स्वर्ग से आके। क्यों ॥४॥ मुनि नन्दलाल साफ फरमावे सत् की महिमा सब जन गावे छोड़ झूंठ जिन से सुख पावे, रख याद हिया में धार के। मेरे गुरु कहे समझा के। क्यों० ॥५॥ २८—जुँआ निषेध-[तर्ज—पूर्ववत] जुँआ का खेल मत खेले, यू सन्त कहे समझाय के। टेर। जुँआ चोर सट्टा यह दोई इन कामों में लगा जो कोई, घर निज सम्पत बैठा खोई, कुछ लम्बी नजर लगाय के। तू सोच हिताहित पहले। जुँआ० ॥१॥ करते रंज दाव जब हारे, मन में खोटी नीत विचारे निर्दय होय मनुष्य को मारे, कोई मरते शस्तर खाय के। कोई डोलत फिरे अकेले। जुँआ ॥२॥ सब दिन रात सरीखे जाते, पर सुख देख देख पछताते, कुमाचरण जिनके हो जाते, कहे अँगुली लोग बताय के। यह कुल कपूत शठ देसे। जुँआ० ॥३॥ पांडु पुत्र जो थे बलधारी राज सहित द्रौपदी हारी, नल राजा भी ले निज नारी, घर निकला राज गमाय के। ग्रन्थों से निर्णय ले ले। जुँआ० ॥४॥ गुरु नन्दलालजी का फरमाना, जो तूं है विद्वान सयाना, प्रथम व्यसन के संग न जाना कहूं राग पजायी गाय के। तेरी कीरत चहुँ दिशि फैले। जुँआ० ॥५॥ २९—सद् बोध—[तर्ज—पूर्ववत] नर क्यों पर आन सतावे, फिर बदला दिया न जायगा। टेर॥ गेंद तरी क्यों फिरा भटकता, मनुष्य जन्म में आया भटकता, पर दुख तुमको नहीं खटकता, कर भला भला हो जायगा, सत गुरु तुझे चेतावे। नर क्यों० ॥१॥ अन्तर कपट मुख मीठो बोले, पर का छिद्र देखतो डोले जाति व्यापि न विप्र पोले, जो फूला पर कुम्हलायगा। यों ऋषि मुनि सब गावे। नर क्यों० ॥२॥ गुरु नाम असली नहीं पाया, वृथा यों ही जन्म गँवाया, रतन छोड़ कर कंकर उठाया, क्यों मोल

कहीं भी पायगा। फिर आखिर में पछतावे। नर क्यों० ॥४॥ मुनि नन्दलाल मेरे गुरु देवा, जिन शासन मे सुरतरु जेवा, तन मन से कोई करले सेवा, गुरु ऐसा ज्ञान वतायगा। सब मिथ्या भ्रम मिट जावे॥ नर क्यों० ॥५॥ नं० ३०–[तर्ज–पूर्ववत्] नर क्यों पच पच मरता है; तेरे कौन साथ में आयगा ॥टेर॥ करे हिफाजत कुटुम्ब को पाले, वह भी तेरे हुकम में चाले, चूक पड़े होंगे मत-वाले, तुझे क्षण में छेय दिखायगा। क्यों पाप पिंड भरता है। नर क्यों ॥१। दुनिया में थोड़ा सा जीना, जिसमें बोल लाभ क्या लीना, सच्चे मारग को तज दीना, न जाने कहाँ धस जायगा। फिर कारज क्या सरता है। नर क्यों ॥२॥ सच्चे गुरु की सुने न वाणी भूठी वात तुरत ले ताणी, न्याय अन्याय की बात न छाणी, तेरा यश अपयश रह जायगा, ना परभव से डरता है। नर क्यो० ॥३॥ फूलो फिरे होय लटपट में, खोया जन्म भूटी खटपट में, करले अब कुछ भी भटपट में, फिर ऐसा न मौका पायगा, तेरा क्षण क्षण आयु खरता है। नर क्यों०। ॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि है, जिन शासन में बड़े गुणी हैं, जिणने पहले वाणी सुनी है, वह हर्ष हर्ष गुण गायगा। जो भवोदधि से तिरता है। नर क्यों०। ॥ ३१–संसार सराय–[तर्ज पूर्ववत्] मेरी मान मुसाफिर अहो रे, क्यों सोवे बीच सराय के ।टेर॥ चार द्वार की यह सराय है, कई आय और कई जाय है, जिनकी गिनती कछु नाय है, कहे गुरुदेव जितलाय के, होशियार हमेशा रहो रे। मेरी मान० ॥१ गाय एक यहाँ सब ही आते, जो आते वही वापिस जाते, कोई खोते और कोई कमाते, कोई पूँजी मूल गवाय के, वह चले गये वद होरे मेरी मान० ॥२॥ तेरा यहाँ पर होगया आना, आलस तज के लाभ कमाना, सोने का है नहीं जमाना, तू भूठा नेह लगाय के। अनमाल वक मत खोरे॥ मेरी मान० ॥३॥ इस सराय मे ठग रहते हैं, गाफिल को वहे ठग लेते हैं, खवरदार अब कर देते हैं, हम तो तुम्हें जगाय के। गफलत की नींद मत सो रे॥ मेरी मान० ।४॥ गुरु नन्दलाल मुनि हैं मेरे, न्याय वात कहे हक में तेरे। सत् पुरुषों का सग करले रे, दुर्लभ अवसर पाय के। लटपट मत कोई से हो रे॥ मेरी मान० ॥५॥ ३२ –सच्चा मेल–[तर्ज– ख्याल] मुगति को मेलो करलो प्रेम से, अवसर मत चूको ॥टेर॥ साधु साध्वी श्रावक श्राविका चार तीर्थ गुणधारी। जिनकी सेवा करो तरो भव सिन्धु रहो हुशियारी रे॥ अवसर ०॥१॥ आगम वाणी सुन हो प्राणी, मिट जावे सब साँसा। चार गति में आवागमन का हो रहा अजब तमाशा रे॥ अवसर० ॥२॥ दया धर्म की गोठ करो नित, भाग भजन की पीवो। नियम नशा की लाली लावो, इण विध जुग जुग जीवो रे। अवसर० ॥३॥ जो होगा पुनवान जिन्हों के,

पद मेला मन मावे । दूजा मेला मोंप आप वह गांठ को दाम गँमावेरे । अवसर० ॥४॥ कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य सुन लेना सब भाया । करी जोड़ अजमेर शहर सावन के महीने गाया । अवसर० ॥५॥ ३३ धर्म की दुकान—[तर्ज- ख्याल] तुम माल खरीदो निरमा मन्दन की खुला दुकान रे ॥ टेर ॥ श्रमण रूप मदा पेटियाँ मुनिवर बड़े बजाजी । बजाजी बजाज का माल देखलो कर अपना मन राजी रे ॥ तुम० ॥१॥ जिन वाणी को गज है साचो जरा फर्क मत जाण । भाव भाव सत्गुरु देवे छे मत कर खेंचा ताण रे ॥ तुम० ॥२॥ जीव दया की मखमल भारी शुद्ध मन मिसरू लीजे । दयस शील समता तणो सरे चाहे सो कह दीजे रे ॥ तुम० ॥३॥ तपस्या को पचारण भारी साडी है संतोष । ऐसा कर व्यौपार जिन्हों से येसन पावे मोक्ष रे ॥ तुम० ॥४॥ महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य खूबचन्द कहे सार । काम नहीं टोटा रहो सदैं नफो मिले व्यौपार रे ॥ तुम० ॥५॥ नं० ३४—वैद्य गुरु—[तर्ज पूर्ववत्]

ज्ञानी गुरु मिलिया वैद्य हकीम जी तुम दवा करीजो ॥ टेर ॥ अष्ट कर्म का रोग अभ्यन्तर जनम मरण दुःख भारी । तुरत फुरत तब रोग मिटे तो दवा बहुत गुण कारी रे ॥ तुम दवा० ॥१॥ छोटी बड़ी कई मीठी कड़वी तप गोली तैयार । भाँत भाँत कर मतपर से सो मत कर और विचार रे ॥ तुम० ॥२॥ समझ सयाना वार वार यह जोग मिले नहीं ऐसा । हित मुफ्त की दवा खिलावे कौड़ी लगे पैसा रे ॥ तुम ॥३॥ जिन वाणी का चूर्ण लिया कर व्याधि हरे तमाम । जो इतना भी शौक रखे तो हुवे परम आराम रे ॥ तुम० ॥४॥ महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जोड़ करी इम गावे । ऐसा मौका आन मिला कि रोग सोग मिट जावे रे ॥ तुम दवा ॥५॥

नं० ३५—गुरु वाणी— तर्ज—पनजी मुंडे बोल] वाणी साँची रे २ म्हारा ज्ञानी गुरु कही सो हियड़े राखी रे ॥ टेर ॥ अनन्त गुणी मारग से मीठी भी जिनवर की वाणी रे । ठाम ठाम सूत्रों के माँही जाने दया बखाणी रे ॥ वाणी० ॥१॥ अनन्त जीव सुन सुन ने तिरिया घणी अनन्ता तिरसी रे । कई जीव अत माल काल में एक भव करसी रे ॥ वाणी० ॥२॥ तीन तत्त्व कोई चतुर हुवे तो धारे अमल हिया में रे । देव अरिहन्त गुरु निग्रन्थ अरु धर्म दया में रे ॥ वाणी० ॥३॥ अनन्त काल कुगुरु ने भोळ्या भ्रम जाल में फँसी मोरे । अब के सत गुरु ज्ञानी मिलिया मन सुमति को रसीयो रे ॥ वाणी० ॥४॥ अमूल बोल हसे मन मूरख जहर हलाहल चाखे रे । जोग योग दश देरे मिलियो अब कोई लाके रे ॥ वाणी० ॥५॥ भाँत भाँत मुनिवर समझावे चेते सो सुख पासी रे । इणी वास्ता वचन ऊपर निष्फल नहीं जासी रे ॥ वाणी० ॥६॥ महा मुनि नन्दलाल गुरुजी भाखो धाम बतायो रे । शिष्य मयाले खूबचन्द कहे तन मन

हुलसायो रे ॥ वाणी० ॥७॥ नं० ३६—क्रोध निषेध—[तर्जः—पूर्ववत] क्रोध मत कीजो रे २ इण न्याय सुजान क्षम्या कर लीजो रे ॥ टेर ॥ परदेशी नृप को रानी विष मिश्रित आहार जिमायोरे। सबर करी सम भाव पणे सुर लोक सिधायो रे ॥ क्रोध० ॥१॥ गज सुख माल मुनि शम शाने नेम ध्यान को लीनो रे। सिर पर आग सही सोमिल पर कोप न कीनो रे ॥ क्रोध० ॥२॥ खन्दक मुनि की खाल उतारन भूप हुक्म फरमायो रे। सञ्चित वैर चुकाय आप मुक्ति पद पायो रे ॥ क्रोध० ॥३॥ कामदेवजी श्रावक श्रण उपसर्ग से से चलिया नाही रे। दृढ़ताई सुर देख गयो अपराध खमाई रे ॥ क्रोध० ॥४॥ मेतारज मुनि गुणी आप शुद्ध सजम में चित राख्यो रे। दया काज मर मिट्या कुरकट को नाम न दाख्यो रे ॥ क्रोध० ॥५॥ वीर प्रभु सुर नर तिर्यंच का सह्या परीषह भारी रे। मेरु जिम रह्या अचल आप समता दिल धारी रे। क्रोध० ॥६॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की यही सिखावण खासा रे। उगणी से अस्सी के साल अजमेर चौमासा रे ॥ क्रोध० ॥७॥ नं ३७—मान निषेध—[तर्ज —पूर्ववत] मान मत कर जो रे २ श्री वीर प्रभु शास्तर में वरजो रे ॥ टेर ॥ तन को मान घणो मन मॉही नव नव नखरा करतो रे। काल बली से जोर ने चाले ज्यू घणो अकड़तो रे ॥ मान० ॥१॥ जो नर धन को मान कियो वह धन खोई न बैठा रे। आरम्भ कर कर कर्म बाँध वह नर्क में पैठा रे ॥ मान० ॥२॥ जोबन में रग रातो मातो ऊँची रखतो अखियाँ रे। वृद्ध भयो तव पर वश पडियो उड़े न मखिया रे ॥ मान० ॥३॥ विद्या बहुत पढ्यो मन चाही वुद्धि को विस्तारो रे। दया धर्म बिन सिख्यां गयो योंही हार जमारो रे ॥ मान० ॥४॥ तीन पांच मद में सुध भूल्यो सत्सगत से दूरो रे। मातग कुल में जन्म लेही हो गयो भड मुरो रे ॥ मान० ॥५॥ नीठ नीठ मानव भव पायो निर अभिमानी रहिज्योरे। कहे मुनि नन्द-लाल तणां शिष्य शिवपुर लीज्योरे ॥ मान० ॥६॥ नं ३८—कपट निषेध—[तर्जः—पूर्ववत] कपट मत कीजो रे २ थांने न्याय बात कहूँ सो सुन लीजो रे ॥ टेर ॥ कपट करी सीता को रावण ले गयो लका मॉही रे। काम कछु न सरयो जिसने अप कीरति पाई रे ॥ कपट० ॥१॥ तीजे अगे चौथे ठाणे फरमान वीर जिनवर को रे। माया गुढ माया से आयुष बाँधे तिर्यंच को रे ॥ कपट० ॥२॥ मल्ली जिन पूरव भव में तपस्या में कपट कमायो रे। जयन्त विमान से चवी वेद स्त्री को पायो रे ॥ कपट० ॥३॥ कपट करी कुड माप तोल कर मन में अति सुख पायो रे। पावे सजा सरकार बीज अब वह पछतायो रे ॥ कपट० ॥४॥ नर से नारी होय कपट से नारी नपु-सक थावे रे। गोतम पृच्छा मॉही साफ ज्ञानी फरमावे रे ॥ कपट० ॥५॥ कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कपट बुरो जग माही रे।

स्वामी से बस्ती में ओढ़ अजमेर बनाई रे ॥ कपट० ॥६॥ नं—३९ लोभ निषेध—[तर्ज—पूर्ववत] लोभ बस्ती जो रे २ अब भलो होय कई सो सुन लीजे रे ॥ टेर ॥ वो माया सुभट ने अभिषेको कम्पिल लोभ बढ़ायो रे। लोभ थकी मन फिरयो अभी केवल पद पायो रे ॥ लोभ० ॥१॥ जिन रिख ने जिनपाल दोऊ मिलके पर दीप सिधाया रे। जहाज फटी समुदर में जिनरिख प्राण गमाया रे ॥ लोभ० ॥२॥ लोभ अपार कह्यो जिनवर ज्यूं गगन को अन्त न आवे रे। धन्य मुनि जो लोभ त्याग जग में यश पावे रे ॥ लोभ० ॥३॥ कई लोभ वश अकृत्य कर कर मन माँही सुख पावे रे। लाभ पाप को बाप साफ यों सब जग गावे रे ॥ लोभ० ॥४॥ क्रोध मान और माया लोभ इन चारों का संग छोड़ रे। जब वितरागी होय कर्म बन्धन को तोड़े रे ॥ लोभ० ॥५॥ मेरे गुरु नन्दलाल कहे सन्तोष सदा सुख दायी रे। चतुर्मास अजमेर कियो सितर दश माँही रे ॥ लोभ० ॥६॥ नं ४०—हितोपदेश—[तर्ज—पूर्ववत] समझ अभिमानी रे २ थारी गयो पूर ज्यों जाय जवानी रे ॥ टेर ॥ मैला स्याल जोबन आवे बागों में गोठ बनावरे। सन्तन की सेवा में आवतों काम बताये रे ॥ समझ० ॥१॥ करी काम संध्या का भान ज्यों डाभ अग्र को पानी रे। बिजली का भल कासी सम्पति और जवानी रे ॥ समझ० ॥२॥ एक सरीखी टाली मिल गप्पा में वक्त गमाये रे। प्रभु भजन नित नेम करत तुझे आलस आवे रे ॥ समझ० ॥३॥ टेढ़ी पगड़ी टेढ़ चली नित नया कर सिनगारा रे। धर्म किया कई गया पशु जिम हार जमारा रे ॥ समझ ॥४॥ कोई जीव को मती सता तू प्याला प्रेम का पीजे रे। दुर्लभ नर भव पाय सार सत्संगत कीजे रे ॥ समझ० ।५॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि तो न्याय बात फरमाई रे। जोड़ करी अजमेर पैंठ पन्द्रह के माँई रे ॥ समझ० ॥६॥ नं०—४१ बुढ़ापा—[तर्ज—पूर्ववत] बुढ़ापा ऐसो रे २ मैं सांच कहुं यो है जम जैसो रे ॥ टेर ॥ जोबन जब लग बण्यो रहे नित मौज करे मनमानी रे। बुढ़ापा आ बण्यो तो फिर नहीं रहे जवानी रे ॥ बुढ़ापो० ॥१॥ अंजन मंजन का सब नखरा देवे भुलाई मोला रे। खाती मूढ़ बोटी ने पटर करदे सब पोला रे ॥ बुढ़ापो० ॥२॥ नाक झरे मुख लार पड़े सब इन्द्रिया पल हठ जावे रे। पड्यो रहे पोली में कोई नजदीक न आवे रे ॥ बुढ़ापो० ॥३॥ उठत बैठत हालत चालत बुड्ढा को तन कम्पे रे। डगमग डगमग पांव पड़े मुख से कुछ जपे रे ॥ बुढ़ापो ॥४॥ सखा साथी कोई न हेरे दिल में बात समझलेरे। जब लग जरा न आई तब लग धर्म कमाले रे ॥ बुढ़ापो० ॥५॥ तन से धन से ले ले लाभ यह वक्त फेर कब आवे रे। मेरे गुरु नन्दलाल मुनि साँची फरमावे रे ॥ बुढ़ापो० ॥६॥ नं०—४१ बधाई—[तर्ज—पूर्ववत] बधाई गावा रे २

आनन्द से यहां पर हुआ चौमासा रे। टेर॥ जो जो भाव शास्तर के मांही वीर जिनन्द प्रकाशा रे। सुन सुन के भव जीव सफल कीनी मन आशा रे॥ बधाई ॥१॥ दया धर्म का बजा नगारा झूठ नहीं एक माशा रे। चार सघ में रही खुशी यह बात खुलासा रे। बधाई०। ॥२॥ मैंरे मुख से आज दिन तक निकली कड़वी भाषा रे। कर खमावना सबके साथ अतिहर्ष मनासॉ रे॥ बधाई०॥३॥ सब भाया मिल झुलने रहिजो मैं तो विहार कर जासॉ रे। दया धर्म का शरणा से पासो सुख खासा रे। बधाई० ॥४। साधु-साध्वी उत्तम पुरुष की रखजो फिर अभिलाषा रे। लीजो लाभ भक्ति का फले मुक्ति की आशा रे॥ बधाई० ॥५॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि के चरणों शीष नमासॉं रे। दिल में लग रही बहुत उमंग अब दर्शन पासॉ रे॥ बधाई० ॥६॥ नं०-४३ जिन वाणी—[तर्ज -पूर्ववत] सुन जिन वाणी रे २ मत धर्म विना खोवे जिन्दगानी रे॥ टेर॥ मनुष्य जन्म अरु आरज क्षेतर उत्तम कुल में आयो रे। दिर्घायु तन निरोग इन्द्रीय पूरण पायो रे॥ सुन० ॥१॥ श्रमण महाण की सेवा करके ज्ञानामृत रस पीजे रे। सॉची श्रद्धा धार धर्म में पराक्रम कीजे रे॥ सुन० ॥२। यह दश बातों सर्व जीव को दुर्लभ श्री जिन भाखी रे। खोजी हो तो कर निर्णय शास्तर है साखी रे॥ सुन० ॥३॥ मुढ हिताहित सुकृत दुष्कृत कबहू नाहिं विचारयो रे। चिंतामणि सम मनुष्य जन्म सब फोकट हारयो रे॥ सुन० ॥४॥ क्रूर कर्म हिंसादिक तजने भली भावना भावो रे। मेरे गुरु नन्दलाल मुनि को है फरमावो रे॥ सुन० ॥५॥ नं०—४४ पाप छिपाया नहिं छिपे—[तर्जः—पूर्व वत] जिन फरमाया रे २ यह गुपत पाप नहीं छिपे छिपाया रे॥ टेर॥ बोयो बीज खेत में पूछॉं नाम नहीं बतलावे रे। उन यारने निकले तब चौड़े दर्शावे रे॥ जिन० ॥१॥ घास फूस को ढेर करीने भीतर आग छिपावेरे। मशक मशक बलती बलती वह बाहिर आवे रे॥ जिन० ॥२॥ आम पाल में दिया कहाँ तक छिपा छिपा कर रखसी रे। पाक गया तब हाथों हाथ हटियों पर बिकसी रे॥ जिन० ॥३॥ लस्सण आदिक बॉट मसाला स्वाद करन मिल ठानी रे। गुप चुप दियो बघार रहे नहीं बदबू छानी रे॥ जिन०। ४॥ या विध जुल्मी जुल्म करीने खूब किया मन भीठा रे। गुरु नन्दलाल कहे वह आखिर पडसी फीटा रे॥ जिन० ॥५॥ नं०-४५ नर तन से लाभ—[तर्ज —पूर्ववत] लाहो ले ले रे २ नर भव को टाणों नीट मिल्यो छे रे॥ टेर॥ पायो लक्ष्मी पुण्य प्रमाणे हालो तू सगलाने रे। करे राज को काज बात सब दुनियाँ माने रे॥ लाहो० ॥१॥ कमठाणो चल रह्यो रात दिन बहुविध आरम्भ कीनो रे। खर्च किया बहु दाम नाम जग में कर लीनो रे॥ लाहो० ॥२॥ बड़े बड़े रईसां से तूं ने मोहब्बत भी कर लीनी रे।

सन्त मुनि गुणी जन की अंत पक मर न्या कामा रे ॥ साहो० ॥३॥ वही होय पूजे मव चारे कौन कौन धंम चासी रे। धर्म धरी हरी जिनवर पद पासी रे ॥ साहो० ॥४॥ कहे मुनि नन्दलाल तणो शिष्य सुख सो चित लगाई रे। मारवाड़ की शहर साबर जोड़ बनाई रे ॥ साहो० ॥५॥ नं०-४६ शील—[तर्ज—पूर्ववत] शील सुखदाई रे २ सुखपाल कई गया सुमति माई रे ॥ टेर ॥ राजमती संजम लेकर गई गिरि गुफा क माई रे। राखो शील मुनि को मति बाधी मोक्ष सिधाई रे॥ शील ॥ १ ॥ काम अंध रावण सीता को ले गया लंका माई रे। पूरण राख्यो शील लेर अब सुरपद पाई रे ॥ शील ॥ २ ॥ पदमनाम नृप हुर लावन कर द्रोपदि को मगाइ रे। चतुराइ से राख्यो शील हरि लाय्यो आइ रे ॥ शील ॥३॥ सुभद्रा के शिर सासू ने दीनो कलंक चढाई रे दूर कियो सुर कलंक जगत में सुयश पाई रे ॥ शील । ४ ॥ कुगति टले मिले सुख साता शममें सयम माई रे। मुनिनन्द लाल तणा शिष्य रिखी जोड़ बनाइ रे ॥ शील ॥ ५ ॥ नं०-४७—कठिन कहेगा—[तर्ज — पूर्व वत] कठिन कहेगा रे २ जो वे पर नारी नहीं वपेगारे ॥ टेर ॥ इक्षुकार नृप मम्रू पुरोहित का धंन्या धन मँगवायो रे। वमन किया क्यों लियो राणियां साफ सुनायो रे। कठिन ॥१॥ रहनेमी मुनि को चित चलियो आयो विषय धिकारो रे। राजमती स्थिर कियो वचन को दे धिकारो रे॥ कठिन० ॥२॥ राजा पर देशी को भइ गुरु कहा केशी मुनी गुणधारी रे। धर्म पंथ में लाय आप कियो भस्म छुपा ? रे॥ कठिन० ॥३॥ सेणिक नृप को मुनि अनाथी दियो साफ फटकारी रे। राजा तू भी खुद अनाथ कहा बोल बिचारी रे॥ कठिन० ॥४॥ कमपीस भरली पल्ली में जेठ मास क माँई रे। मुनि नन्दलाल तणों शिष्य रिखी जोड़ बनाइ रे ॥ कठिन० ॥५॥ नं०-बिगाड चार जनों से—[तर्ज—पूर्ववत] चतुर विचारा रे २ ई चार जणा नहीं करे सुधारा रे ॥ टेर ॥ राजा का परधान लोम वश सुरत न्याय को बेचे रे। झूठ ले सांचो कर द सांचा न रहे र। ॥ चतुर० ॥१॥ ज्ञाति न्याति में मोटो बाजे मुखियो प र कहावे र। मूठा आप चौमेर में भर भर खाव छटाये र ॥ चतुर० ॥२॥ साधु होकर बैठ सभा में कुगति पंथ बतावे रे। धनवंता को लिहाज रखे नहीं साफ सुनावे रे॥ चतुर० ॥३॥ मूरख वैद्य दया नहीं आन जलद दवा करावे रे। आयुष बल से बचे नहीं तो माल गंमाये रे। चतुर ॥४॥ महामुनि नन्दलाल तणों शिष्य शहर आपरे गायेर। फूटे पाप को माँडे तब चारों पछताये रे॥ चतुर० ॥५ नं०-४९—सुधार चार जनों से—[तर्ज— पूर्ववत] चतुर विचारा र २ इण चार जणां स हुवे सुधारो रे॥ टेर ॥ निर्लोभी परधान होय सुख सदा देश में चाहे रे। नीतिवंत

प्रतीतवंत प्रजा को पाले रे ॥ चतुर० ॥१॥ करे जाति की हमदर्दी जो मुखियो पंच कहावे रे ॥ मर्याद भंग को सुद्ध करे रिश्वत नहीं लावे रे ॥ चतुर० ॥२॥ साधु बैठ सभा के माहीं सत्यात्य दर्शावे रे। राजा होय चाहे रंक सभी को साफ सुनावे रे॥ चतुर० ॥३॥ वैद्यराज वैद्यक के वेता बुद्धिवंत कहावे रे। चारों कारण मिल्यों तुरत ही रोग मिटावे रे॥ चतुर० ॥४॥ महा मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य जोड़ करी इम गावे रे। सांच कहूं यह चारों जणाँ जग में जश पावे रे॥ चतुर० ॥५॥ नं०-५०—बाई का कहना—[तर्ज-पूर्ववत] किण विध आऊ रे ? म्हारा घर सब थाने हाल सुनाऊ रे॥ टेर॥ देवर, जेठ ननद भौजाई सब ही को मन राखूं रे। घर में दानो सुसरो मागे अमल तमाखू रे॥ किण० ॥१॥ घर मोटो छोटा नहीं मैं तो बड़ा घरों की बाजूं रे। पग में बीछों नहीं बाजना आता लाजूं रे॥ किण० ॥२॥ घर में टाबर छोटा मॉगे गेहूँ का फुलका पोऊं रे। भोजन थाल परोसी पीछे छाछ बिलोऊ रे॥ किण० ॥३॥ सारो दिन धंधा में बीते पहर रात की पोहूं रे। पहर रात की पाछी उठूं घट्टी घमोडूं रे॥ किण० ॥४॥ मटकी ले पनघट के ऊपर पानी भरवा जाऊ रे दिन दोपहर चढ़े तब तक फुरसत नहीं पाऊ रे॥ किण० ॥५॥ कहे मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य घर धंधा यों ही चाले रे। उस बाई को धन्यवाद जो टाईम निकाले रे॥ किण० ॥६॥ नं०—५१—पैसे का खेल—[तर्ज.—आसावरी] पैसा देखो जगत में ऐसा, यह तो काम बनावे कैसा। टेर॥ जो जो वस्तु चाहत दिल में ते ते ही जोग मिलावे। जो पैसा नहीं पास हुवे तो कोई नहीं बतलावे॥ पैसा० ॥१॥ राजादिक को वश कर लेवे न्याय अन्याय करावे। बैर विरोध करावन वाला पैसा ही भूंठ बुलावे॥ पैसा० ॥२॥ द्वादश जुग में होगया ऐसा बुड्ढे का ब्याह करावे। बिन पैसे बिन रहत कुंवारा यही तो अचरज आवे॥ पैसा० ॥३॥ बड़े बड़े विद्वान जिन्हों को देश परदेश भ्रमावे। हस हस बात करावन वाला पैसा ही हेत तुड़ावे॥ पैसा० ॥४॥ पुण्य छता पुण्य बाध ले प्राणी यह अवसर कब आवे। मुनि नन्द लाल तणां शिष्य तुझने हित कर ज्ञान सुनावे॥ पैसा० ॥५॥ नं.—५२—काची काया—[तर्ज़.—मल्हार] काची काया को रे कौन विसास ॥ टेर॥ हाड को पिंजर चाम लपेट्यो, जीव कियो तामें वास॥ काची० ॥१॥ दरपन देख देख तन निरखे, उपजावे मन हांस॥ काची० ॥२॥ कर कर स्नान, सिन्गार बनावे, कर तो भोग विलास॥ काची० ॥३। मन ममता मेवा मिष्ठ आरोगे, आखिर जंगल वास॥ काची० ॥४॥ मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य अपनो, कर कर गुण पर कास॥ काची० ॥५॥ नं०—५३—अजब तमाशा—[तर्ज —तूं सुन म्हारी जननी आज्ञा देवो संजम

पूरण नहीं हो तो परभव मे पहुँचावे ॥ भाग्य० ॥४॥ कहे मुनिलाल तणा शिष्य दमडी संग नहीं जावे । दया धर्म दिल धार जिन्हा से भव भव में सुख पावे ॥ भाग्य० ॥५॥ नं०—५७—दो मुखी दुनियां—[नर्ज —आसावरी] ऐसी दुनिया को काई पतियारो या न, वच कर रहिये न्यारो ॥ टेर ॥ साँच भी बोले झूँट भी बोले बोल बोल नट जावे । पचा में परतीत न जाकी सौ सौ सौगन्द खावे ॥ ऐसी० ॥१॥ झूंठी लाख भरे मतिहीना साँचा कर दर्शावे । पल में पलटतों देर न लागे लाज शरम नहीं आवे ॥ ऐसी० ॥२॥ ज्योंटा दूना करे वस्तु में तोपण कसर बनावे । कर कर बहुत बढाव जुगत से भोला ने भरमावे ॥ ऐसी० ॥३॥ मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य गावे कई नर झूँठ चलावे । अन्त के तन्त तो न्याय चलेगा साँच ने आँच न आवे ॥ ऐसी० ॥४॥ नं०—५८—काची काया का गर्व—[तर्ज—ज्ञानी गुरु मत भूलो एक घड़ी] जीया कॉई फूले रे काची काया, काची काया रे ज्ञानी फरमाया ॥ टेर ॥ गोरो बदन सुख माल घणेरो, हारे रूप मनोहर तू पाया ॥ जीया० ॥१॥ माता को रुद्र ने शुक्र पिता को हाँरे दोहू मिल बन्धी ॥ काया ॥ जीया० ॥२॥ नौ महीना तू रह्यो मात गर्भ मे हारे चाम चिडी जिम लटकाया ॥ जीया० ॥३॥ महा अशुचि को ठाम जणी में हारे वास वस्यो कॉई सुख पाया ॥ जीया० ॥४॥ जन्म ले इने दु ख भूल गयो तू हारे नखरा करे अब मन चायो ॥ जीया० ॥५॥ नर भव पाय निरंजन जपले हाँरे साँच कहे तुझे मुनिराया ॥ जीया० ॥६॥ मुनि नन्दलाल तणाँ शिष्य ऐसे सजीत जोड करी ने गाया ॥ जीया० ॥७॥ नं०-५९--ज्ञान को फटको—[तर्ज—लाल त्रिशला को प्यारो रे] सुनावे गुरु ज्ञान को फटको रे ॥ टेर ॥ ज्ञान उजेला होत हिया में, मिटे मिथ्या तम घटको रे ॥ सुनावे० ॥१॥ जागो जागो जिया आख उघाड़ो, नीर वैराग्य को छिटकोरे ॥ सुनावे० ॥२॥ अशुचि पिण्ड अनित्य तन यह तो, जैसे मिट्टी को मटको रे ॥ सुनावे० ॥३॥ कर पर निन्दा अनाहुत बोली, मक्खी जिम मृत द्रो चटुको रे ॥ सुनावे० ॥४॥ सध्या को भान करी कान ज्यू थारो, अथिर जोवन को लटको रे ॥ सुनावे० ॥५॥ तप जप दान दया मग सूधो, कभी बीच में नहीं अटको रे ॥ सुनावे० ॥६॥ यह सब ठाठ रैन सुपने का, रखो पर भव को खटकोरे ॥ सुनावे० ॥७॥ मुनि नन्दलाल दयाल की वाणी, सुन्या से मिटे भव भव भटको रे ॥ सुनावे० ॥८॥ नं०-६०-कर्म गति—[तर्ज—पदम प्रभु पावन नाम तिहारो] चेतन रे या कर्मन की गति न्यारी, कर सुकृत एम विचारी ॥ टेर ॥ रावण राय त्रिखंड को नायक ले गयो राम की नारी । लक्ष्मण हाथे परभव पहुचो, जाने दुनिया सारी ॥ चेतन० ॥१॥ अयोध्या नगरी को हरिश्चन्द्र राजा तारा दे तस घर

मारा । माथे पुरा लेय हाट में विकिया कु वर पादवास लारा ॥ चेतन० ॥३॥ कृष्ण नरेश्वर विनोद मुगता वासेष कुल अवतारी । अन्त समय आय मुआ भाइला बन कुसुम्बी मुझारी ॥ चेतन० ॥२॥ कुण्डरीक राय वैराग्य धरी न लीनो सजम भारी । कायर होय पीछा घर माही आया पहुँचे नरक मुझारी ॥ चेतन० ॥४॥ चन्दनराम मलयागिरि रानी पुत्र सायर नीर मारी । कम जोगे बिछुड़े पदपा आफ पुण्य से सम्पति पायो सारी ॥ चेतन० ॥५॥ सूत्र धर्म करे या कर्मों की रचना सुन लीजो नर नारी । इम जाणी न धर्म भराधो सुख मिले भाग रयारी ॥ चेतन० ॥६॥ नं०-६१—भलाई—[तर्ज—पूर्वोक्त] चेतन रे तू से जग भीच भलाइ पाओ जोग मिले कब भाइ ॥ टेर ॥ पुण्य प्रभाव सब ही सम्पति पायो नर भव मांही । कुछ सुकृत का काम बने तो कर तेरी है समभाई ॥ चेतन० ॥१॥ कृष्ण नरेश्वर पहले बसायो नगरी द्वारका मांही । उत्तम जन सब सजम लीनो देवो करता मांही ॥ चेतन० ॥२॥ चरण तल सुरक्षा न रापया दुखी का भय मांही । शुभ परिणाम ससार घटायो कीनी अमर कमाई ॥ चेतन० ॥३॥ नेम प्रभु न पम्म आशा गायिन्द मारग माई । दुखों का दुःख हर दुख का फेदा दिया मिटाई ॥ चेतन० ॥४॥ भवसागर तिरजाए मीला सतगुरु देत बताइ । मुनि नन्दलाल तणों शिष्य गाय पारसोली के माँहि ॥ चेतन० ॥५॥ नं०—६२—कैसे निस्तार—[तर्ज—प्रभु मान आपको आभार] कैसे तेरा होयगो निस्तार, नर भव की तुझे नाय परवा करत कुछ विचार ॥ टेर ॥ अल्प आयुष अनन्त तृष्णा रहत मद मुझार । सूत रम रम पाँच लीनो पाप को सिर भार ॥ कैसे० ॥१॥ मन मते बहु ज्ञान पढ़न दीमने नर नार । धार विवाद कर अन्न खायो कारण नहीं कुछ सार ॥ कैसे० ॥२॥ आलसी धम नेम करता पाप में हुशियार । जनम भर इस माँहि लीनो नहीं कीना उपकार ॥ कैसे० ॥३॥ महा मुनि नन्द लालजी अति दीपता अनगार । कहत यों तस शिष्य निश्चय झूठ यो संसार ॥ कैसे० ॥४॥ नं०—६३—विरकी आत्मा—[तर्ज—क्या तन मांजता र एक दिन मिट्टी म मिल जाना] विरकी आत्मा दे अरे तू अब तो निर्मल होजा ॥ टेर ॥ गुरु सेवा की गंगा इसमें पाप मैल का धोजा । भारी हो रहा बहुत दिनों से हलका करले बोझा ॥ विरकी० ॥१॥ ज्ञान रूप वपत्र क अम्बर निज आतम को ओजा । बार बार सतगुरु समझावे पत्र छोप सब खोजा ॥ विरकी० ॥२॥ मुक्ति का मगा चले तो ममता नहीं बिसाजा । जो अब मौका चूक गया तो मुझे नर्क में रोजा ॥ विरकी० ॥३॥ अमृत फल की इच्छा होय तो बीज धर्म का बोजा । कर नेकी का काम अभी से अब तो दूर बलोजा ॥ विरकी ॥ ४ ॥ सत्य धर्म की

नेज विन्नी है सोना हो तो सोजा। कहे मुनि नन्दलाल तणॉ शिष्य मिले मोक्ष मोजा ॥ विवेकी ॥ ५ ॥ —परदेशी मानवी—

नं० ६४ [तर्ज पूर्व वत] प्रदेशी मानवी रे अरे तू इधर उधर क्या जोता ॥ टेर ॥ मेरा मेरा कहे मुँह से कहने से क्या होता। विन स्वारथ विन कोई न तेरा पुत्र नार क्या पोता ॥प्रदेशी०॥१॥ घर धन्धा में लदा फिरे ज्यो परजापत का खोता। ठाठ पडा रहेगा पृथ्वी पर कुटुम्ब रहेगा रोता ॥ प्रदेशी ॥ २ ॥ तन मंदिर को छोड़ जायगा ज्यों पिंजरे से तोता। खडे रहेंगे मित्र देखते आप खायेगा गोता ॥ प्रदेसी० ॥३॥ हुवा उजेला जागो नींद से बहुत वक्त का सोता। सच्चा मोती छोड दिवाने झूठा पोत क्यो पोता॥ प्र देशी० ॥ ॥ ४ ॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की वाणी सुनले श्रोता। नैया पार लगे एक क्षण में सब कारज सिध होता ॥ प्रदेशी० ॥ ५ ॥

नं० ६५ — सच्चाझूला —[चतुर नर ईण विध चौपड खेलरे] चतुर नर इण विध झूले झूलरे, अरे म्हारा प्राणीयाँ ॥ टेर ॥ भाई विनय मूल दरख्त बोईंगे, चतुर नर ज्ञानकी शाख फैलायरे। अरे म्हारा प्राणीया ॥ चतुर ॥ १ ॥ भाई दृग इरजा की रासड़ी चतुर नर गाडी गाठ लगायरे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ २ ॥ भाई पाट कडी समकीत भली चतुर नर गाडा पाव ठेरायरे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ३ ॥ भाई तप सजम गोडी लीजिये चतुर नर डर मत आन लगार रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ४ ॥ भाई सन्मुख हींदो मोक्ष को चतुर नर सूधो हीजाजे ठेठ रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ५ ॥ भाई पच्छिम हींदो पुठनो चतुरनर तो पण है सुरलोक रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥६॥ भाई गह झूलो ऋषि झूलते चतुर नर जावे मोक्ष मुझार रे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ७ ॥ भाई श्री श्री गुरु नन्दलाल जी चतुर नर नित नित नमो चरणारे ॥ अरे ॥ चतुर ॥ ८ ॥ भाई खूबचन्द कहे नीमच विषे चतुर नर पहिज झूलो साररे ॥ अरे ॥ चतुर ९ ॥ नं० —६६—अर्ज— [तर्ज —ख याल]

अर्ज हमारी सुन लीजिये श्री मंदिर जिनजी ॥ टेर ॥ विदेह क्षेत्र में आप विराजो मैं इण भरत मुझार। किण विध अतर बात सुनाऊ लग रही दिलमुझार हो ॥ श्री ०॥१॥ चर्म जिनेश्वर हुआ भरत में त्रिशला नन्दन वीर। जिनके आगे था चहुँ नाणी गोतम जैसा वजीर हो॥श्री०॥ २ ॥ सेणिक राजा थो पर मत में नहीं त्याग पच्च खान। भव अतर पहिला जिन होसी भाख्यो श्री भगवान हो ॥श्री०॥ ३ ॥ राज गृही को अर्जुन माली पाप किया था भारी। छःमहीना के मॉयने सरे मेल्यो मोक्ष मझारी हो ॥ श्री ॥ ६ ॥ परदेशी राजा का रहता लोही खरड्या हाथ। उनको एक भव अतरे सरे मोक्ष कही साक्षात हो ॥ श्री ० ॥ ५ ॥ एवंता कुमार लघु था तिण द्विज भव के मांय। वीर जिनन्द सुदृष्टि करने दीना मोक्ष पहुचाय हो ॥ श्री० ॥६॥ कई स्वर्ग कई शिवपुर मेल्या एक भव में शिव पासी।

[तर्ज -पूर्ववत] थारो धर्म बिना यो मनुष्य जन्म काई काम को ॥ टेर॥ सज पोशाक सेल करवाने जाव सुबह और श्याम को । धन जोबन का मद में छकियो भूल गयो प्रभू नामको ॥ थारो ॥१॥ सत्गुरू की परवा नहीं थारे लोभ लग्यो नित दाम को । पाप कर्म में मन दौडे ज्यों घोडो बिना लगाम को ॥ थारो ॥ २ ॥ क्या फूले तू देख देख तन हाड मास लोही चाम को । उमर भर जस नाहीं लियो थें कियो काम बद नाम को ॥ थारो ॥३॥ कुटुम्ब काज मेहनत कर कर धन भेलो कियो हराम को । निज हाथों से कभी नहीं सुकृत दियो छदाम को ॥ थारो ॥४॥ मेरे गुरू नन्दलाल मुनी बतलावे पथ शिव धाम को । दया दान तप नेम पाल पद मिले तुझे आराम को ॥

नं० ७१ —निन्दक— [तर्ज-म्हाने वीतराग की वाणी प्यारी लागे रे] निन्दक पर के मास सदा खुश रेवे रे ॥ टेर ॥ दिया ज्ञान गुरू देव दया कर धर्म पथ में लाया । भूल गया उपकार जहां शठ उलटी करे बुराया ॥ निन्दक ॥ १ ॥ चौपद माहीं श्वान नीच पक्षी में काग विशेष । निन्दक सब में नीच बतायो नीती शास्त्र लो देख ॥ निन्दक० ॥ २ ॥ भडशूरो कणकु डो छाडी विष्टा पर चित देवे । ज्यों निन्दक अवगुण के काजे छिद्र ताकता रेवे ॥ निन्दक० ॥ ३ ॥ सुनी बात साची झूठी को निर्णय करे न कोय । फक्त रहे निन्दा कर या में दियो जमारो खोय ॥ निन्दक० ॥ ४ ॥ होय अशुचि साफ उदक से निन्दक मुख से चाटे । जुग जुग सदा जीवता रहिजे मुझ आतम हित माटे ॥ निन्दक० ॥ ५ ॥ पाप पन्दर मो लागे निन्दक निन्दा छोड़ पराई । महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य दिल्ली जोड बनाई ॥ निन्दक ॥६॥ नं० ७२-ज्ञान बिना--[तर्ज.-पूर्ववत] ज्ञान बिन कभी नहीं तिरना, करो तुम अच्छी तरह निरना ॥टेर॥ ज्ञान दया का मूल रुल यह फरमाया वीत राग । ज्ञान बिना सोहे नहीं ज्यू हंस सभा में काग ॥ ज्ञान० ॥ १ ॥ गृहस्थ धर्म और मुनि धर्म ये दोनो ज्ञान आधार । ज्ञान बिना संसार का सरे नहीं व्यवहार । ज्ञान० ॥ २ ॥ पहिले सीखने ज्ञान गुरू से देखो सूत्र का न्याय । फिर शक्ति अनुसार तपस्या करते वो मुनि राय ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ विद्या बिन नर पशु सरिखा फक्त मनुष्य को रूप । विद्या है धन मित्र सभा मे आदर देवे भूप ॥ ज्ञान० ॥ ४ ॥ ज्ञानी रहे पाप से बचकर ज्ञान पढो दिन रैन । मेरे गुरु नन्दलाल मुनि की यही हमेशा केन ॥ ज्ञान० ॥ ५ ॥ नं०७३—हितोपदेश —[तर्ज -फाग] काई फिर तो रे जोर जवानी में ॥ टेर ॥ हित कर ज्ञान सुनावत ज्ञानी तूं क्यू नहीं समझ इण सानी में ॥ काँई ॥ १ ॥ नर भव रत्न चिंतामणी सरीखो, क्यू तू हारे इक आनी में ॥ काँई ॥२॥ उस दिन और कौन छीपने की, जब आवेगो काल निशानी में ॥ काई० ॥ ३ ॥ पाप की पोट धरी शिर ते, प्रभु नहीं भज्यो जिंदगानी में ॥ काई० ॥ ४ ॥ मुनि

नन्दलाल तथा शिष्य मन में, मगत मीन जिम पानी में ॥ कोई० ॥ ५ ॥ नं०७४—हितोपदेश—[तर्ज—पूर्ववत] पर भव में तब पछ
ताये लो ॥टेर॥ मानी गुरु ज्ञान झड़ी बरसाय। जो इनमें नहीं नहाये लो ॥पर०॥१॥ वाल ज्यों जिम नर पोदी। जो तू गे न गमाये लो ॥
पर ॥२॥ कर कर पाप कर्म धन संचे। तू संग कोई ले जावेला ॥ पर० ॥३॥ स्वजनादिक तेरे कोई न साथी। अब ब न नर्क में धाये
लो ॥ पर० ॥ ४ ॥ मुनि नन्दलाल तथा शिष्य गावे। तू करसी जैसा फल पाये लो ॥ पर० ॥ ५ ॥ नं०७५—रसना—[तर्ज गोटा लोसनी
यो] रसना मतवाली मत बिना बिचारी बोल ॥ टेर ॥ पर निन्दा में मगन भयी तू। कलह करावन हार ॥ रसना० ॥१॥ तोड़न स्नेही
मित्र के। तू भेद पड़ावन हार ॥ रसना० ॥२॥ स्वाद में पड़ी चटोकड़ी। कई सर किया नर नार ॥ रसना ॥३॥ बात दि म बाजने में।
तू नाय बिगाड़े भटार ॥ रसना० ॥ ४ ॥ पूज्य मुनि ता इम कहे। गुणि का गुण आदर धार ॥ रसना ॥५॥ नं० ७६—पट की शिक्षा
[तर्ज—पूर्ववत] बाई सुन हित शिक्षा तू आतिवंत कुलवंत ॥ टेर ॥ सासू सुसरा जेठ की। तू करजे शर्म सदीव॥ बाई० ॥१॥ चूक पड्या
दये आगम्यो। तू ग्रहसी सीजे मान ॥ बाई० ॥२॥ कभी करे मत रूसनो। तू सपस रखजे प्रेम ॥ बाई० ॥३॥ करजे सेवा संतन की तू
पालजे धर्म आचार ॥ बाई ॥४॥ पूज्य मुनि सिल्ली लिखे। करी शिक्षा समझाय ॥ बाई० ॥५॥ नं०७७—तपस्या—[तर्ज—कैसो जोग
मिल्यो छूरे] तपस्या घणी कठिन छूरे। धन त्याग मन का बश करनो घणो कठिन छूरे ॥ टेर ॥ दिन में जाये निस में पाने आये सांक
सवेर। कलह मचाये तप तपाये जो होये कुछ देर ॥ तपस्या० ॥१॥ धन पेठ में पड़्या बिना कुम्हलावे कोमल मुखा। काया पाको कुछ
गिन नहीं मू डी धरन भूख ॥तपस्या० ॥ २ ॥ बस्तर बेष शस्तर पेखे बरतन पेथी लाये। जिम तिम करने पेट भरे पन भूखो प्यों
न जाये॥ तपस्या ॥ ४ ॥ महा मुनि नन्दलाल तथा शिष्य जोड़ करी रतलाम। साको धन्य तपस्या करत मन को राज मुकाम ॥
तपस्या ॥ ५ ॥ नं०७८—जोबन—[तर्ज—महाड] जोबन थारो है यह पतंग को रंग, इम जाणी करो सतसंग ॥ जोबन ॥ टेर ०॥
श्याम घन की बीजली रे ज्यूं पीपल का पान। नदी पूर किलोल दधि को मान चाहे मत मान ॥ जोबन० ॥१॥ बाट पराङ्ग पंखियो
रे जम पालागो धान। बाजीगर का खेल सरीखो जेम संध्या को भान ॥ जोबन० ॥ २ ॥ मधुर प्याला सुर्खी भरि भौंरो जैसे रसपान
रस। धनुष थी बाण छूटा जिम जावे पवन के मार्ग पेस ॥ जोबन० ॥ ३ ॥ भूले मती जोबन के मद में सब भूपना को ठठ। कर ले
कमाई है मनुष्य देसा यह सुधारयो हाट ॥ जोबन० ॥ ४ ॥ मेरे गुरु ...

कर्म गति जाने कौन सुजान, कोई मत करज्यो
दूरी नं पाल धर्म को नेम ॥ जीवन० ॥ ५ ॥ नं०७९—कर्म गति—[तर्ज -पूर्ववत] कर्म गति जाने कौन सुजान, कोई मत करज्यो
अभिमान ॥ टेर ॥ म हिज हुं सुख सम्पति वाला मुझ सम जग में नाय । लाखों विमान के नाथ सुरेन्द्र उपजे एक इन्द्री में आय ॥
कर्म० ॥ १ ॥ पुत्र पिता बंधव निज नारी कोई न किसका होय । सूरो कथा कोणिक मणि रथ को सुत्र से लीजि जोय ॥ कर्म० ॥२॥
पांचों ही पांडव बारह वर्ष तक दुख भुगते वनवास । नगरी वैराट रहे छिप छाने नृपति के घर दास ॥ कर्म० ॥३॥ भूखा मरता मानवी
रे माल छवन के माँय । कई मूवा कई भ्रष्ट थया ॥ रडवडिया अकुलाय ॥ कर्म० ॥४॥ शास्त्र की वाणी सुन ले प्राणी कर ज्यो दीर्घ विचार
मेरे गुरु नन्दलाल मुनिश्वर कहे छे वारम्बार ॥कर्म०॥५॥ नं० ८०-तपस्या-[तर्ज पूर्ववत] मानव शुद्ध तपस्या कर गुण न्याय थारा
कर्म पुंज झड जाय ॥ टेर ॥ सिंह तणा सुण शब्द तुरत ही मृग भागे वन मॉय । सूर्य प्रकाश के आगल जैसे अंधकार विर लाय
॥ मानव० ॥ १ ॥ बिजली की फट कार लगया जिम जाय रूई नो पेल । आग के आगे वारूद न ठहरे साबुन के सग मेल ॥ मानव० ॥
॥ २ ॥ सहस्र वर्ष म नर्क जीवों के कर्म क्षय नहीं थाय । इतना कर्म मुनिवर जी तोड़े चउथ भक्त के माय ॥ मानव० ॥ ३ ॥ जिव
मगन जिम काया कटोरी तप अग्नि की आच । कर्म मेल की जलत खटाई समझु मानो साच ॥ मानव० ॥ ४ ॥ मेरे गुरू नन्दलाल
मुनिश्वर कहे छे वारम्बार । भव भव में सुख होय निरन्तर निज आतम गुण धार ॥ मानव० ॥ ५ ॥ नं०८१-पाप की काट जंजीर-
[तर्ज-पूर्ववत] समझ नर पाप की काट जंजीर पायो दुर्लभ मनुष्य शरीर ॥टेर॥ आतम गुण सेवन कर प्राणी निर्भय थई मत सोय ।
नरेन्द्र आस करे इस तन की फोकट में मत खोय ॥ समझ० ॥ १ ॥ यह तन साधन मोक्ष को रे और गति में नाय । समझु थई ने क्यों
न विचारे मानव नाम धराय ॥ समझ० ॥ ॥ काचो कुम्भ ज्यों काच की शीशी जिम वालू नो ढग । विनशत वार कछु नहीं लागे छिन
छिन म रग विरग ॥ समझ० ॥ ३ ॥ माणक हीरा मोती से मुंघो मोले मिलतो नाय ॥ मोक्ष पहुचा मुनिवर केई आवागमन मिटाय ॥
॥ समझ० ॥ ४ ॥ मेरे गुरू नन्दलाल कहे तुझे प्यारा लगे पकवान । आखिर यह तन तेरो नहीं मान चहे मत मान ॥ समझ० ॥ ५ ॥
नं०८२--सद् बोध— [तर्ज पूर्ववत्] कुमति सग छोड़ो छोडो छोड़ो छोड़ो छोडो रे । सुमति सग जोड़ो जोडो जोडो जोडो जोड़ोरे
॥ टेर ॥ मानुष्य को भव दुर्लभ पायो देव करे तेहनी आश । मायो मिले नहीं मोल मिले नहीं मिलिये तो करिये तलाश हो ॥ कुमति०
॥ १ ॥ रतन जडित की सुवर्ण चर्वी चुल्हे दीनी चढाय । चन्दन वाले माही खल रॉधे एहवो तू मत थाय हो ॥ कुमति० ॥ २ ॥ करज-

शार पहले हाई बैठा फिर लावे करज उधार। चुकाया बिन मूल सम्भाला नहीं होगा छुटकार हो ॥ कुमति० ॥ ३ ॥ अन अन सेती घिर कमावे होय रह्यो मस्त॰न्न। पीपल पान ज्यों मान सेमना को आखिर होवे है मस्त हो ॥ कुमति० ॥ ४ ॥ अब के जोग मिल्यो मन चुको मत् करोला फेर। मुनि नन्दलाल तणा शिष्य कहे है जोड़ करी अजमेर हो ॥ कुमति० ॥ ५ ॥ नं० ८ —सत्योपदेश—
[तर्ज़—पूरणमल] कलयुग का मानव मानो मानो मानो मानो रे घाने पर भय निश्चय आनो जानो आनो मानो रे ॥ टेर ॥ साधु जन की भाव समीपे सुने न हित की बात दुनियां की खट पट में तेरा बीत गया दिन रात रे ॥ कलयुग० । १ ॥ ये तन ये धन ये बल बुद्धि ये सामर्थ्य सब भाग। करना होय सो करले भला फिर ऐसा मिले कब जोग रे ॥ कलयुग ॥ २ ॥ निज स्वजन पालन पोषण में पच्यो रहे इक ध्यान। धर्म कियो नहीं नेम कियो नहीं कर से दियो नहीं दानरे ॥कलयुग० ॥३॥ रक्त को राज मिल्यो जो घड़ी.को कीनो न कगुआर। इस विध पछतावो पड़सी जद पहुँचेला भान करार रे ॥ कलयुग ॥४॥ दगणी से सियन्तरे रे असधर राम स्थान। कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य अब भी चेत सुजान रे ॥ कलयुग० ॥ ५ ॥ नं ८४—वर्ष का तरूवर—[तर्ज़-पूर्ववत्] चेतन थारा तरुवर का फल सूण। थान सोंच कहेला फेर कूण ॥ टेर ॥ दश स॰न्नयसी आठ सेरे फल लागे सब फूल। अठा॰से ऊपरे कोई मस्सी उपजे फूल ॥ चेतन० ॥ १ ॥ मोटो पेड़ सुहावणो रे शाखा दो दो आठ। छोटी शाखा है घणी कोई तीन सो ऊपर साठ ॥ चेतन० ॥ २ ॥ मोंघ कई सहर पकी रै पत्र असंख्या थाय। एक भी फूलो निकले कोई तुरत फुरत झड़ जाय ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ तज आलस्य प्रमाद ने रे शुद्ध किया के साथ। जो सेवे तन मन थकी जांके विघ्न सब टल जाव ॥चेतन ॥४॥ महा मुनि नन्दलाल भी ने पंडित में परमाण। गुरु भेद तस्य शिष्य कहे कोई समझे चतुरसुजान ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ न० ८५—फोकट श्रावक—[तर्ज़—पूरो सुख नहीं पंच में भारे]
ऐसो श्रावक मो नहीं आधारो ॥ टेर ॥ श्रावक नाम धराय लिया, जांके असस्थावरकी नहीं छे दया, शुद्ध नहीं जाके नवकारो ॥ऐसो॥ ॥ १ ॥ थापण मेले जोका दम्भ करे, सु म खाय खाय ने झूठो शाख भरे, डर नहीं पर भव जावा रो ॥ ऐसो ॥ २ ॥ चोरीकरे पर धन हरे, ब॰ा कुड़ा तोला न कुड़ा माप करे, थोड़ा बणज करे म्यारो ॥ ऐसो० ॥ ३ ॥ पर की नहीं मरजाद करे, पर दारा सेती गमन करे, काम कामना नहीं जारो ॥ ऐसो० ॥ ४ ॥ धन के काज अराज करे, तेवो किय बिध का॰ संसार तिरे, आरम्भ करे अति विस्तारो ॥ ऐसो० ॥ ५ ॥ बध कराये पशु मार मरे, बलि गस्तरमा मयोग करे, ताल सरोवर की फोड़ा वेपारो ॥ ऐसो० ॥ ६ ॥ धर्म ध्यान कभी

नहीं आने, वलि रामत देखण ने जावे, काम नहीं प्रति क्रमणा रो ॥ ऐसो० ॥ ७ ॥ निरमल पाल्यो आने श्रावक पणो, जाँको सुरार में विस्तार घणो, जोर लगाई कियो खेवा पारो ॥ ऐसो० ॥ ८ ॥ छप्पन वैशाख शुद्ध चौदश खरी, शहर सीतामहु में जोड़ करी, खूब कहे धारःधारो ॥ ऐसो ॥ ९ ॥ नं० ८६—फोकट श्रावक—[तर्जः-ख्याल] प्रगट कहूं सो तुम सुण लेना उसे फोकट श्रावक कहना ॥ टेर ॥ जीव दया में कछू न समझे भाषा मर्म की बोले। सूत्र खाय कुलेख लिखे पर मार ताकतो डोले ॥ प्रगट० ॥१॥ ख्याल देखतो फिरे आप सतां के आवता लाजे। सौगन लेकर देवे तोड़ खुद धोरी धर्म को बाजे ॥ प्रगट० ॥ २ ॥ त्रस स्थावर को हणे पहाड़ चढ मेले जाय मिजाजी। पुण्य पाप को भेद न जाने पर निन्दा में राजी ॥ प्रगट० ॥ ३ ॥ हुका चिलम बीड़ी भग पीवे उलटी धात जचावे। नीर निवाणा मांय कूद कर भैंसा रोल मचावे ॥ प्रगट० ॥ ४ ॥ सन्ता सेती करे कपट शठ उलट पुलट समझावे। आप छे न्यारो को न्यारो कुबुद्धि कुवध भिडावे ॥ प्रगट० ॥ ५ ॥ पक्ष ग्रही अभिमानी द्वेष वश कूडा कलक चढावे। ऐसा कर्म कमाय जैन को नाहक नाम लजावे ॥ प्रगट० ॥६। अवगुण तज गुण को पाले जब शुद्ध श्रावक कहलावे, । परभव सुधरे आप को सरे इण भव शोभा पावे ॥ प्रगट० ॥ ७ ॥ उगणी से अस्सी को कीनो चतुर मास चित चावे। जोड़ करी अजमेर मुनि नन्दलाल तणॉ शिष्य गावे ॥ प्रगट० ॥ ८ ॥ नं० ८७ —जीव दया से नरक दूर—[तर्ज --ठूमरी] जो जिन वचन प्रमान करे, ऐसी जीव दया से नरक परे रे ॥ टेर ॥ सर्व धर्म को मूल दया है, पूरे पडित साख भरे रे ॥ ऐसी० ॥ १ ॥ आतम सम पर आतम जाने, फिर उन के दुःख दूर करे रे ॥ ऐसी० ॥ २ ॥ त्रसस्थावर सुख के अभिलाषी, दुःख स्थानक से दूर टरे रे ॥ ऐसी० ॥ ३ ॥ मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे, रावलपिंडी जोड़ करे रे ॥ ऐसी० ॥ ४ ॥ नं० ८८—तम्बाकू निषेध— [तर्जः-ख्याल] पिया छोड तम्बाकू वदबू की लपटॉ मुख से नीकले ॥ टेर ॥ महीने की महीने धरेस तु आठाना पर आग, । एक वर्ष का खर्च में स थारे वजे सभी पोशागरे ॥ पिया० ॥ १ ॥ हाथ होठ कपडा जलेस थारो जले कलेजो दत। बार बार मैं मना करूं मत पिवो तमाखू कत रे ॥ ॥ पिया० ॥ २ ॥ टोली मिल हट्टी के ऊपर सुलफा आप उडावे, । लाभ खर्च जान्यो नहींस थाने उगली लोग बतावे रे ॥ पिया० ॥ ३ ॥ भर भर कुरला डाले जात को कारण नहीं छे कोय, । दक्षिण देश गुजरात में सरे इण विध जरदो होय ॥ पिया० ॥ ४ ॥ लीप्यो छाव्यो बहुत मजा को कियो आंगणो कारो, । सासू घर में राख बखेरी देख्यो माजनो थारो रे ॥ पिया० ॥ ५ ॥ फोड चिलम और

॥१॥ नाचे पत्रावे तिहाँ गान मिलाय मृगयात जाय न ी मन वश में ॥ कुबुद्धे० ॥२॥ सांठा मिपोड़ा गिरि वेर छुवारा, स्वाद करे नहीं मन वश में । ३ ४ ॥ ॥ रूसर बनाये ा इतर लगाये नैना मंजन नहीं मन वश में ॥ कुबुद्धे० ॥४॥ इसी कतूहल अति मन भाय हासी में अन्य नहा मन वश में ॥ उपद ॥४॥ पांचों इन्द्रिय की चाह विषय को अप तक नहीं किया मम वश में ॥ कुबुद्धे ॥ ॥५॥ मुनि नन्दलाल नर्मा शिष्य गाय कहाँ तक कहूँ नहीं मन वश में ॥ कुबुद्धे० ।७। नं० ८४—मानव जन्म की खेती—

[तर्ज़— पूर्ववत] खेती करमी रे मानव भव तू पायो खेती करले रे ॥ टेर ॥ काया को कूप न गो अति भारी आयुष पूर्ण भरयो वारी ॥ खेती ॥१॥ प्राणायाम की चड़स पवारी रात दिवस जुनिया धोरी ॥ खेती० ॥२॥ ज्ञान की खेती म बीज धर्म को, परउ करवा मोह माठों कर्म का ॥ खेती ॥३॥ ध्यान का गोफ कर्मों के ोकंकड़, काक प्रमाद उड़ायो मनकर । खेती० ॥४॥ मम की नाड़ी म हाग त्प की ऐसा खेती कर नर भव की ॥ खेती० । ५। श्रद्धा को सर ने प्रतीत का जूड़ो, यह सब देवे सद्गुरु रूड़ो ॥ खेती ॥६॥ ऐसी खेती कोइ भव जीव करसी लूंब कढ़े माला मह फलसी ॥ खेती० ।७। नं० ६५—चंचल माया

[तर्ज़—भजन] चंचल माया म करो मनन समझावे । टेर । स्वजन और पर जन मित्रादिक जिनसे नह लगावे । जैसे मेलो बिछुड़ जाय जिम यह सब निज निज स्थान सिधावे चंचल ॥१॥ ख्याल रच्यो बाजीगर समकृत होइ दीठ न आय । डुगडुगी दूर बन्द गहा फिर खाली फिरे नग सब भग जावे ॥ चंचल० ॥२॥ गाज बीज पावस और वर्षा उमड़ उमड़ कर आवे । हवा चली जब मेघ घटा मिट तुरत गगन निर्मल दर्शावे ॥ चंचल० ॥३॥ नाना विध पक्षी मिल तरुवर निशिभर वास बसावे । दिवस भयो सब उड़ों दिशि उड़ जहाँ मे भागे और किधर सिधाय ॥ चंचल ।४॥ राम रंक को मिला सुपन में इच्छित मौज उड़ावे । आंख खुली तब कहाँ ठठ वह कहूँ दिशि देख देख पछतावे ॥ चंचल ॥५॥ गधीमे अस्सी सोलह सुद तीज जेष्ठ की आये । मुनि नन्द लाल नर्मा शिष्य चिठ्ठी जोड़ करी जग में जस पाय ॥ चं ा० ॥६। नं० ६६—सीताजी से मिलन हनुमान का आगमन—

[तर्ज़ - पूर्ववत] सीताजी म मिलन पवन सुत आयो ॥ टेर ॥ सीताजी की सुध मई तब राम अति मूर पायो । सब राजेश्वर कर मन्त्रणो हनुमत कपर ने लंक पठायो ॥ सीताजी० ॥१॥ देय फू पर ज्यों सम्मुख ऊभो मुद्रा में दि ो । सीता पूछे कुण तू बीरा, तब हनुमत सब भेद सुनायो ॥ सीता जी० ॥२॥ पिय हाथ की मैख मुन्दरी नैना नीर भरायो । राम मिलन की है अब तयारी

हनुमंत कुंवर यो गाढ बधायो ॥ सीताजी० ॥३॥ सीता को दुःख देख हनुमंत बन्दर रूप बनायो । लंकपति को बाग विनास्यो देख रही सीता बहु समझायो ॥ सीताजी० ॥४॥ रावण राणो रोष भराणो बन्दर पकड़ मगायो । नमक हरामी लाज न आई रावण करडो बोल सुनायो ॥ सीताजी० ॥५॥ रोष चढ्यो हनुमत तुरत ही बन्धन तोड वधायो । लकपति का मुकुट पाडने उछल गगन में वेग सिधायो ॥ सीताजी० ॥६॥ सोध करी हनुमत आयो तब सबको मन हुलसायो । कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य जोड करी जग में जश पायो ॥ सीताजी० ॥७॥ नं० ९७—रावण को मंदोदरी की शिक्षा—[तर्ज—सीता सतवंती नार सदा गुण गावनारे] राजा रावण से इम बोले नार मन्दोदरी रे । सुन सुन लकपति सिरदार अनीति क्यों करी रे ॥ टेर ॥ थारे इन्द्राणी सम राण्याँ कई हजार छेरे । तो पण जरा सबर नहीं आई, छल कर लायो नार पराई । जग में बाज्यो चोर अन्याई, ऐसी कठिन सुनाई पतनी पति से ना डरी रे ॥ राजा रावण० ॥१॥ मैं तो खुद जाकर समझाई, नाटिक माडनेरे । सीता रही शील में राची, वह मर मिटे हटे नहीं पाछी, उनको अच्छी तरह ली जाची, कहूं छू साँची जिनकी च ज है उनको दो परी रे ॥ राजा रावण० ॥२॥ स्याणी सुन्दर सुन पर नार लाय किम आप सू रे । उसको चित खुश करके, निज नारी कर थाप सू रे ॥ टेर ॥ माने सीख त्रिया की जो नर मूढ अजान छे रे । सीता पाछी उसे दिलावे, तोकू जरा शरम नहीं आवे । मोकू ऐसी राह बतावे, रावला आगे कोई न आवे, पुण्य प्रताप सू रे ॥ स्याणी० ॥३॥ चचल हनुमान श्रीराम लक्ष्मण महा बली रे । दल ले लेकर जब वो चढसी, नभचर उछल उछल कर पडसी, कहो तब कौन सामने अड़सी, सुवरण लका मिलसी नास, आज कहूँ छू खरी रे ॥ राजा रावण० ॥४॥ फिरता दोनों जगल माय युगल बनबासिया रे । बिच में सागर भरयो अपारे, यहा तक कब वो आवे बिचारे । शूरे सुत और भ्रात हमारे, पडसी उनके लारे, थारे वेग सिताप सू रे ॥ स्याणी० ॥५॥ थारे सगा विभीषण कुम्भकरण दोई भ्रात छे रे । प्यारा इन्द्रमेघ सुत शूर, यह सब रहेंगे बदल कर दूर । दिल में सोचो नाथ जरूर, मेलो दूर गरूर, नहीं तो मरजी रावरी रे ॥ राजा रावण० ॥६॥ हित की शिक्षा देवे कोई सत्य कर मानिए रे । सित्तर ऊपर नव के साल, मेरे गुरु मुनि नन्दलाल । मोकू दीनो हुकम दयाल, कीनो रामपुरे चौमास, जोड सुगतो करी रे ॥ राजा रावण० ॥७॥ नं० ९८—रावण को समझाना—[तर्ज—ख्याल] कहे यों रावण को समझाय भविषण कुम्भकरण दोई भाय ॥ टेर ॥ राजन पति राजा बाज्यो थाने ई बातां नहीं छाजे । पर नारी पर धन हर्ता वह चोर अन्यायी

ने काई इम कही गया मुनिराज ॥ मुनिवर जी ॥ विनय ॥ ७ ॥ हो जी देवकी सिंगाड़े आज ॥ मुनिवर जी ॥ वे का वे ही मत जान जे काई इम कही गया मुनिराज ॥ मुनिवर जी ॥ रत्न सरीखा निज पुत्र ने काई दिया जिनवर जी ने सूप ॥ मुनिवर जी ॥ मन प्रसन्न हुई काई धन धन मात अनूप ॥ मुनिवर जी ॥ रत्न सरीखा निज पुत्र ने काई दिया जिनवर जी ने सूप ॥ मुनिवर जी ॥ महा मुनि नन्द लाल जी काई तस्य ॥ विनय ॥ ८ ॥ हो जी सवत उगणी से छियोतरे काई अलवर शहर चौमास ॥ मुनिवर जी ॥ महा मुनि नन्द लाल जी काई तस्य शिष्य कहत हुलास ॥ मुनिवर जी ॥ विनय० ॥ ६ ॥ -माता देवकी का चिन्तन- न० १०४ धीरा चालो ब्रज का वासी) बोलो बोलो माजी मन खोली। सब बात हिया में तोली रे ॥ टेर ॥ माता देवकी जिनवर भेंटी, सब मन को भ्रमणा मेटी, घर आय सिंहासन बैठी रे ॥ बोलो० ॥ १ ॥ तब हरी शृंगार बनाया, माता का दर्शन पाया। चरणों में शीप नमाया रे ॥ बोलो० ॥ २ ॥ कर जोड़ी ने गिरधर भाखे, माजी किम आसू नाखे। करू सफल कहो दिल थॉके रे ॥ बोलो० ॥ ३ ॥ माजी सब वृत्तान्त सुनायो, तब वचन दियो हरी राया। सब मन का सोच मिटाया रे ॥ बोलो० ॥ ४ ॥ पौषधशाला में आई, सुर समरयो ध्यान लगाई। थारो होसी म्हालो लघु भाई रे ॥ बोलो० ॥ ५ ॥ दिन ऊगा पौषध पारा, माजीका क ज सुधारा। हुआ गज सुखमाल कुमारा रे ॥ बोलो० ॥६॥ नन्दलाल मुनि गुण धारी, तस्य शिष्य कहे हितकारी। निन पुण्य से जय जय कारी रे ॥ बोलो० ॥ ७ ॥ गजसुखमाल मुनिकी क्षमा न० १०५ (तर्ज—मेवाडा जी हुकम करो तो हाजर ऊभी) मुनिवर जी साध पणो शुद्ध आदरयो काई धन धन गज सुखमाल ॥ मुनिवर जी ॥ टेर ॥ होजी नेम जिनन्द भगवान की, काई आज्ञा लेई ऋषिराय ॥ मुनिवर जी ॥ तरु हेठे जाई शमशान में ॥ काई ऊभा ध्यान लगाय ॥ मुनिवर जी ॥ साधपणो ॥ १ ॥ हो जी सोमिल ब्राह्मण तिण समे, काई जातो नगरी मुझार ॥ मुनिवर जी ॥ तिण वाटेथई निकल्यो, कॉई ओल खिया अनगार ॥ मुनिवर जी ॥ साध पणो० ॥ २ ॥ हो जी लघु भाई गोविन्दना, म्हारी बेटी में बतायो कांई दोष ॥ मुनिवर जी ॥ विन अपराधे पर हरी, कांई अधिक भरानो रोष। मुनिवरजी॥ साधपणो० । ३ ॥ हो जी आली माटी लायो सरतणी, कॉई वाधी मुनि के सिर पाल ॥ मुविवर जी ॥ दुष्ट दया आनी नहीं, काई सिर धरया खैर अंगार ॥ मुनिवर जी ॥ साधपणो ॥ ४ ॥ हो जी मुनिवर मन्दिर गिरि समो, कॉई नहीं कियो क्रोध लगार ॥ मुनिवर जी॥ ध्यान थकी चूक्या नहीं कांई चढ़ियो परणाम की धार ॥ मुनिवर जी ॥ साध पणो० ॥ ५ । हो जी चार कर्म दूरा हुआ, कॉई पाया केवल ज्ञान ॥मुनिवरजी॥ आठों ही कर्म खपायने, कॉई पहुचा शिवपुर स्थान ॥ मुनिवर जी ॥ साधपणो ॥ ६ ॥ हो जी एहवा मुनि का गुण गावता कांई पावे

कसरी हो कांई थाग में धर्यो पचरंग हो ॥ यादव० ॥ ५ ॥ सन्मुख आय बरात में हो कांई हरि जी से करे है सवाल हो ॥ यादव० ॥ ६ ॥ रहसी कुंवारा नेम जी हो कांई कभी नहीं होये यांको ब्याह हो ॥ यादव० ॥ ७ ॥ दीनी दक्षिणा तेहने हो कांई विदा करि दीना तत्काल हो ॥ यादव० ॥ ८ ॥ यह तो ब्राह्मण इम कहे हो कांई अब जानू सासो पर माप हो ॥ यादव० ॥ ९ ॥ महा मुनि नन्दलाल जी हो कांई तस्य शिष्य नेमजी को दास हो ॥ यादव० ॥ १० ॥ —नेमजी की बरात नं० १०२ (तर्ज-माज रंग बरस रे) नेम बनड़ा के रे ॰ सग बरात चढ़ी बड़ी धूम धड़ाके रे ॥ टेर ॥ कृष्ण और बलभद्र साथ दोई बरात के मांई र। समुद्र विजय राजा कि संग कर कर मलुसाई रे ॥ नेम० ॥ १ ॥ यादव वंशी राज कुंवर का जोड़ जगामग चमके रे। मणि सुवर्ण का भूषण अंग दामन ज्यों दमके रे ॥नेम०॥२॥ पचरंगी पोशाकां कर कर आग्या रंगिया चंगिया रे। गज रथ घोड़ा बैठ पालकी चले उमगिया रे ॥नेम०॥३॥ गज इन्द्र पर नेम कुंवर जी सुर इन्द्र सम दर्शे रे। साँवरिया की छवि देख सुर नर मन हर्षे रे ॥नेम०॥४॥ जीव दया के काज ब्याह तज मुख नेमजी फिरिया रे। संयम ले फिर कर्म काट मुगति सुख वरियारे ॥ नेम० ॥ ५ ॥ उगणी से छी स तर तेरस माघ सुध के मांई रे। मुनि नन्दलाल तणों शिष्य अमरचन्द जोड़ बनाई रे ॥ नेम० ॥ ६ ॥ महारानी देवकी ए। सज्झाय नियारस-नं० १०३ (तर्ज—मेवाड़ा जी हुकम करावो तो हाजर ऊभी) विनय करीने पूछे देवकी कांई संशय मेटण काज मुनिवरजी। टेर ॥ हो जी आज्ञा लेई प्रभु नेम की कांई आठा में है अनगार ॥ मुनिवर जी० ॥ तीन सिंघाड़े आया गोचरी, कांई द्वारिका नगरी मुझार ॥ मुनिवर जी। विनय० ॥ १ ॥ होजी प्रथम सिंघाड़ो फिरतों थकां कांई देवकी के आयो आवास ॥ मुनिवर जी ॥ देवकी सन्मुख आय ने कांई पांच्या चित्त हुलास ॥ मुनिवर जी। विनय करी ॥ २ ॥ हो जी मोदक बहराया निज हाथ से, कांई ते तो फिर पारवा अनगार ॥ मुनिवर जी ॥ दूजो भी सिंघाड़ो इम आय यो कांई तीजो भी आयो तिणवार ॥ मुनिवर जी ॥ विनय० ॥ ३ ॥ हो जी प्रतिलाभी ने पूछे देवकी, कांई धन धन तुम अनगार। मुनिवर जी ॥ तुम मुझ पुण्य उदय करी कांई फिर फिर आया तीजी वार। मुनिवरजी ॥ विनय० ।४॥ हो जी मुनिवर कहे सुण देवकी, कांई में छां सगा छै भाय ॥ मुनिवर जी ॥ नाग सेठ का सुत हमें कांई सुलसा भी की माय ॥ मुनिवर जी ॥ विनय० ॥५॥ हो जी बत्तीस २ नारयाँ तजी, कांई परिग्रह से तज दियो प्रेम ॥ मुनिवर जी ॥ संयम लियो जिण दिवस थी कांई छठ छठ कीनो नेम ॥ मुनिवर जी ॥ विनय ॥ ६ ॥ हो जी थारे घर आया गोचरी कांई तीन

सुख भरपूर ॥ मुनिवर जी ॥ खुबचन्द कहे तस नाम से कोई कारज सिद्ध जरूर ॥ मुनिवर जी ॥ साधपणो० ॥ ७ ॥ दिक्षार्थी को माता का कहना न० १०६ (तर्ज—पन जी मुंडे बोल) म्हाला मोरी मान, मान मान मुगति का लोभी, कोई हठ लागो रे ॥ टेर ॥ सजम जाया अति दोहिलो, शूरवीर कोई लेसी रे । कोमल तन बावीस परीसा तू किम सहसी रे ॥ म्हाला० ॥ १ ॥ सन्मुख जोय रही तुझ अबला, इनको छेय न दीजे रे । तृप्त थई फिर विषय भोग तज सजम लीजेरे ॥ म्हाला ॥ २ ॥ सच्यो धन वड़ेरा घर में ले ले हाथ को लावो रे । ऊमर तक नहीं निठे रीतसर खर्चो खावो रे ॥ म्हाला ॥ ३ ॥ कुल वृद्धिकर मैं भी जितने हो जावा परलोके रे । जोवन वय ढल गया बार, थाने कुण रोके रे ॥ म्हाला ॥ ४ ॥ महामुनि नन्द लाल तणां शिष्य शहर आगरे राजे रे । चढ्यो रग वैराग्य कहो फिर किम ललचावेरे ॥ म्हाला० ॥ ५ ॥ माता का दीक्षार्थी को सजम की कठिनता दिखाना न० १०७ (तर्ज—राजा भरथरी रे राजाभरथरी) म्हाला लालजी रे म्हाला लाल जी ॥ टेर ॥ लाल जी साधपणो अति दोहिलो, नहीं सोहिलो, पहिले जोहिलो, थाने कहू समझाय मानो मानो मोरी वाय, हठ कीजिये नाय ॥ म्हाला० ॥ १ ॥ लाल जी इश पलग पर पोढनो, सीरक ओढनो, दिन चोढनो, ऊगां जंगल माय, जो भी तरुवर छाय, दुख सह्यो नहीं जाय ॥ म्हाला ॥ २ ॥ लालजी घर घर भिक्षा जावणो, नहीं शरमावणो मांगी खावणो, लेणो शुद्ध आहार, दे या नहीं दे दातार, दूषण होणो नहीं लगार ॥ म्हाला ॥ ३ ॥ लालजी सजम भार उठावणो, पार लगावणो, गम्म खावणो निर्वद्य बोलणो बैन, चालणो गुरूजी की कैन, नहीं लोपणी पेन ॥ म्हाला० ॥ ४ ॥ लाल जो वैराग्य रग छायो सही, माता कह रही, ललच्यो नहीं, मेरे गुरु नन्द लाल, षट काया प्रतिपाल, दीन्यो ज्ञान रसाल ॥ म्हाला० ॥ ५ ॥ दीक्षार्थी को भगवान के समर्पण करना न० १०८ (मढाड) प्यारो लाल हमारो, भवसागर तारो, तारो दीन दयाल ॥ टेर ॥ कोमल काया सरल स्वभावी वड़भागी गुण खान । उमर पुष्प ज्यों दुर्लभ दर्शन, रतना का करड समानणे प्यारो ॥ १ ॥ आज सुणी वानी प्रभु थारी । विषय भोग रोग सम जानी, ललच्यो नहीं महासागरे ॥ प्यारो ॥ २ ॥ मात पिता ने अति सुख देसी, ये हतो पूर्ण विचार । जायो तो आज हुई निर्मोही, शिव मग लीनो धाररे ॥ प्यारो ॥ ३ ॥ यह मुझ म्हालो आप भरोसे, छोड़े जग जजाल, शीत उष्ण वर्षा ऋतु माहो, कर जो सार सम्भालरे ॥ प्यारो ॥ ४ ॥ मेरे गुरु नन्दलाल मुनीश्वर, तारण तिरन जहाज, सुगुरु चरण की शरण लियासे सरसी वछित काजरे ॥ प्यारो ॥ ५ ॥ ताराराना का नृपति को दृढ करना नं० १०६ (म्हारो मही मत तुटा जी मैं छू गोकल

की काला गूजरी] राजा मत घबराओजी, सत्य से निज सम्पति निश्चय पाओगे ॥ टेर ॥ काशी के बाजार बीच में बेची तारा रानी जाती देख हरिश्चन्द्र नृप के नैना बह रयो पानी जी ॥ राजा ॥ १ ॥ रानी बोली सुण महाराजा क्यों इतना घबराय, सुख दुख का जोड़ा जगमांही शास्तर में सब गावेजी ॥ राजा ॥ २ ॥ मोती महल सुवर्ण का सजा ज्योतीवान रसाला । दासी दास नौकर चौर चाकर हुकम उठानवाले जी ॥ राजा ॥ ३ ॥ गज घोड़ा रथ पालकी सरे, पलटन फौज रसाला । राज तखत धन का भंडार, नृप विजय बजाने वाला जी ॥ राजा ॥ ४ ॥ शिर का मुकट कान का कुण्डल गल मोत्यों की माला । कर भूषण कटि सूत सुवरन का कम्बल सर्व सुहाला जी ॥ राजा ॥ ५ ॥ राम लखमन दोनों भाई सीता जिनके साथ । दुख सहा वनवास में सरे दुःखा द्वारिका नाथ जी । राजा ॥ ६ ॥ सत्य के कारण राज तज्यो तुम ही शूरा रजपूत । निज सम्पति के नाथ बनोगे रहो सदा मजबूत जी ॥ राजा ॥ ७ ॥ वनिता होय विनीत पति को दे पूरण विश्वास मुनि मन्नालाल तणा शिष्य कहे मैं गुरु चरण को दास जी ॥ राजा ॥ ८ ॥ भिक्षाक लिये भावंग्रह। नं० ११० [तर्ज मैं तो माथे मन्नू नी कांई गाड़ा होय रय] जियो गुरुजी आओ क्यूँ नी गाड़ा होयरया ॥ टेर ॥ मैं तो नित की जावां थारी भावना मैं तो नित की जोवां थारी वाट, ॥ जियो ॥ १ ॥ म्हारे कमी नहीं किस बात री, म्हारे लग रया पुण्य का ठाठ ॥ जियो ॥ २ ॥ म्हारे दूध दही घृत मोकला, सीजे गारस गुलवडी लौंद ॥ जियो ॥ ३ ॥ म्हारे चावल दालने की पकड़ी, मरी मालपूआ तणी खाण ॥ जियो ॥ ४ ॥ म्हारे बाजा पूड़ी घणा पीपीया, तरिया पापड़ लेवो तइयार ॥ जियो ॥ ५ ॥ म्हारे दही पड़ाने कचौरियाँ, तार फीकी न पेवर सार ॥ जियो ॥ ६ ॥ म्हारे घणा पेठाने पकौड़ियाँ, सूखा पेवा भने सब खास ॥ जियो ॥ ७ ॥ मन्नलाल मुनि याँ शिष्य कहे इम कर रया मन मनवार ॥ जियो ॥ ८ ॥ तप में शूरा ॥ नं० १११ [तर्ज पूर्ववत] शूरा हो तप में झूलिया ॥ टेर ॥ ऐसो सुन्दर का बाजा बजरया टाल चौपी का धुल रया होल ॥ शूरा ॥ १ ॥ ऐसो शूरा बजया समभम में, ऐसो कायर रया उभा देख ॥ शूरा ॥ २ ॥ आने तपस्या का तीर चलाविया, सन्तोष को शेल सम्भाल ॥ शूरा ॥ ३ ॥ पद तो ढाल क्षमा की पीठ पे हुआ शुद्ध मन अश्व सवार ॥ शूरा ॥ ४ ॥ सब समता का पाखर परिया, निर्लोभकी कर तलवार ॥ शूरा ॥ ५ ॥ आने सेना लीधी साधे साँमझ दर्शन शील तप भाव ॥ शूरा ॥ ६ ॥ आने आठ करम बैरी जीतिया, लीनो मोक्ष को लिस्तो वास ॥ शूरा ॥ ७ ॥ नन्दन मुनि कहे सांभलो, कुम पराक्रम दीजे बताय ॥ शूरा ॥ ८ ॥ काया की रेल नं० ११२ [तर्ज—शुद्ध निश्चय नहीं

जोया जीव तेने २] काया की रेल हमारी रे लोगो काया की रेल हमारो रे ॥ टेर ॥ सीधी सड़क शुद्ध सजम पाले जंकशन मोक्ष मु मारी रे, । धोखा मेट दिया दुर्गति का, उपट राह हम टारी रे ॥ काया ॥१॥ तन अजन मन पेच दवाते, जाते इच्छा अनुसारी रे सत्य उपदेश की सीटी देते, फिरते मुल्क मुफारीरे ॥ काया ॥ २ ॥ तप अगनी और कर्म कोयले डाल के करते छारी रे । नाडी तार का लग रया खटका, प्रतिबन्ध सिगनल डाली रे ॥ काया ॥ ३ ॥ समदृष्टि दुर्बीन लगाकर करते करुणा तुम्हारी रे, । दानादिक अच्छे डिब्बे की करते कोई यक सवारी रे ॥ काया ॥ ४ ॥ नेम का टिकट दिया मुझ सतगुरू बाबू जी पर उपकारी रे, । स्टेशन सुरलोक ठहर फिर लेंगे अचल पुर धारी रे ॥ काया ॥ ५ ॥ कहे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य, सुन लेना नरनारी रे, । उणीसे तेहत्तर अलवर माही जोड़ कीनी तइयारी रे ॥ काया ॥ ६ ॥ जम्बू स्वामी के गुणानो ११३ [तर्ज —पुज मुन्नालाल जी नित ध्यावोरे] वंदो नित जम्बू स्वामी सौभागी रे, हुआ जगत में परम वैरागो रे ॥ टेर ॥ माता धरणी नन्दन जाया रे, पूर्व पुण्य से वहु ऋद्ध पाया रे । इम सोलह वर्ष में आया ॥ वंदो ॥ १ ॥ तिण अवसर सुधर्मा स्वामीरे, पान से मुनि संग शिवगामी रे, आया विचरत अन्तर्यामी रे ॥ वदो ॥ २ ॥ आया जम्बूजी वन्दन काजेर, तिहाँ सुधर्म स्वामी विराजे रे सुन वाणी वैराग्य में छाजे ॥ वदो ॥ ॥ ३ ॥ अष्टनारी एक दिन परणीरे, । जाकी काया कचन वरणी रे, । नहीं जोया सन्मुख जान वैतरणी ॥ वदो ॥ ॥ ४ ॥ पान से सत्तावीस साथेरे, समभाग एकण राते रे । लीनो सजम सहू परभाते ॥ वदो ॥ ५ ॥ सुधर्म स्वामी जैसे गुरू भेट्या रे, सब फद जगत का मेट्यारे, करनी कर ससार समेट्या ॥ वदो ॥ ६ ॥ सोलह वर्ष रहे घर मांही रे, फिर साधू हुये हुलसाई रे । रहे छद्मस्त वीस वष ताई ॥ वंदो ॥ ७ ॥ वहु गुण रतनों की खानो रे, ध्याता अहो निशि निर्मल ध्यानो रे । पीछे पाया केवल ज्ञानो ॥ वंदो ॥ ८ ॥ चम्मालीस वर्ष केवल पालो रे, मुनि अष्ट कर्म ने बाली रे, पहुंचा मोक्ष चहु गति टाली ॥ वंदो ॥ ९ ॥ कहे खूब मुनि तस नामो र, सहू सीजे वांछित कामोरे । ऋद्धि सिद्धि नवे नन्द पामो ॥ वंदो ॥ १० ॥ लोभ त्याग न. ११४ [तर्ज —डगमग नहीं करना नहीं करना] काम नहीं आसी रे माया २ तज ललच भज जिन राया ॥ टेर ॥ ब्राह्मण कुल में जनम लियो, धन धन कपिल ऋषिराया । सुवर्ण लोभ तज राज सभ में, केवल पद पाया ॥ काम ॥ १॥ जिनरिख जिन पाल दोनों भाई, ते परदेश सिधाया, । वार ग्यारह लाभ कमाई वापिस निज घर आया ॥ काम ॥ २ ॥ द्वादसमी विरियां फिर

जुदा माने जीव काया रे ॥ सतगुरु ॥४॥ चर्चा करतने राय परदेशी तुरत मुनि पे आया रे, केशी श्रमण सा सतगुरु भेट्या तो छिन माही भरम मिटाया रे ॥ सतगुरु ॥५॥ जहर जोग मे अनशन करते तै सुर पदवी पाया रे, विदेह क्षेत्र में मुक्त जावेगा सूतर में फरमाया रे ॥ सतगुरु ॥७॥ माल पिचावन किया चामासो श्रावक बहु हुलसाया रे मुनि नन्दलाल प्रसाद खूबचन्द नीमच माही गाया रे ॥ सतगुरु ॥ ८ ॥ -नारी प्रेम- न ११७ [तर्ज -द सुन म्हारी जननी] सुन चतुर सयाना नारी को नेह निवार जे ॥ टेर ॥ परदेशी राजा तणीसरे सूरी कन्ता नार। एक दिन जाग्रण जागतासरे मन मे कियो विचार ॥ पिउजी तो इण राजकोसरे नहीं करे सार सम्भाल रे ॥ सुन चतुर ॥ १ ॥ इण विध कर विचारता सरे दिन ऊगो तिणवार, तत्त्क्षण वेग बुलावियो सरे सूरी कन्त कुमार। प्रछन्न पणे पुत्र भणीसरे बोले वचन विचार रे ॥सुन २॥ धर्म गलियो तुझ पिता सरे छोड दियो सब राज, जहर शस्त्र प्रयोग से सरे पूरण करदे काज। महोत्सव कर मटाण स मरं ह्मु तुझन राज रे ॥ सुन ॥ ३ ॥ पुत्र सुनी या वार्ता थर थर कपी काय, बोल्यो अण बोल्यो रह्यो सरे आयो तिन दिश जाय। पुत्र पिता ने कह हेमी तो कीजे कोन उपायरे॥सुन॥४॥भोजन सरस बणा वियोसरे माही नाख्यो जहर, । नरपति नौत जिमावियासर दिया नशा न वेर ॥ आतम ज्ञान लगावियोसरे जरा न आनी लहर रे॥सुन ॥ ५ ॥ ततक्षण उठ्यो नरपतिसरे आयो पोषधशाला माय अवसर आयो जाणनसरे दियो सथारो ठाय। साचो जिण धर्म पालने सरे गयो स्वर्ग के माय रे ॥ सुन ॥ ६ ॥ इम जाणी ने नीकलेसरे नारी नेह छिटकाया शुद्ध सजम आराधता सरे धन धन ते मुनिराय ॥ खूब मुनि कहते मुनिवर का नित नित प्रणमू पायरे ॥ सुन ॥ ७ ॥ -भरत वैराग्य- न ११८ [तर्ज -आज रग वरसे रे] भरत मन माही रे २ वैराग्य भाव मे रहे सदा ही रे ॥ टेर ॥ प्रथम जिनेश्वर समो शरण में प्रगट वात फरमाई रे भारत भूपति जासी मोक्ष इणहिज भव मांही रे ॥ भरत ॥ १ ॥ विषय भाग आरम्भ परिग्रह में रहे सदा मुरझाई रे कैसे मोक्ष होगा एक नर यूं वात चलाई रे ॥ भरत ॥ २ ॥ भरत सुनी यह वात तुरत ही लीनो उसे बुलाई रे, पूर्ण कटोरो भर के तेल दियो हाथ के माही रे ॥ भरत ॥ ३ ॥ बीच बजार होकर लावो तुम रहीजो सग सिपाही रे एक बूद भी गिरे तो दीजो शीष उडाई रे ॥ भरत ॥ ४ ॥ विविध भाति वस्तु हटियों पर दीनी खूब सजाई रे, उस रस्ते होकर उस नर को सोंप्यो लाई रे ॥ भरत ॥ ५ ॥ क्या क्या देखी चगी चीज आवत रस्ता के मांई रे, एक कटोरा बीच ध्यान [illegible] रे ॥ भरत ॥ ६ ॥ यो मुझ मन वैराग्य वसे, नहीं

नामा छे रायरे। धर्मनो पूरण अनुरागी थ गोरे ॥ तिण दिनथी भेज्या मुनिरायरे ॥ समकीत॥१॥ मनमेंतो भावे नितभावनारे, जो इहां प्रभू महर करायरे ॥ तो हर्ष धरी ने वंदू वीर ने रे, सफल दीहाड़ो मुझ थाय रे॥ समकीत॥ २॥ राजगृही ने भीतर वाहरणे रे पडहो फेरायो महिपाल रे, । प्रभु पधारया मुझ मालूम करे रे, करसू मैं तिणने निहालरे॥सम॥३॥ भगवत विचरत आया तिण समे रे, लोकों मिल खबर दी तत्काल रे। जे जे वधाई आपी तेहने रे कीना छे नृप निहाल रे॥ समकीत॥ ॥ सजी सवारी आयो वधवारे, तिहां विराजे नाथरे, श्रेणिक नृप रानी चेलना रे, प्रभु ने बॉध्या जोडी हाथ रे॥ समकीत ॥ ५॥ सेवा तो कीनी निर्मल जोग सूं रे, वाणी सुन आयो निज गेह रे। कर कर दलाल्या अति धर्मनीरे, गोत्र तीर्थ कर वाध्यो तेहरे॥ समकीत ॥६॥ पहला तीर्थ कर होसी भरतमें रे, शास्तर में घणो अधिकार रे; मुनि नन्दलाल तणा शिष्य इम कहेरे, जिन धर्म पाल्या जै जै काररे॥ समकीत ॥ ७॥ --सुदर्शन सेठ-- न० १२२ (तर्ज:-ख्याल) सुदर्शन श्रावक पूरण प्रिय धर्मी श्री महावीर नो॥ टेर॥ राजगृही का बाग में सर वीर विचरता आया, । सुनी बात सुदर्शन श्रावक हृदय हर्ष भराया, ॥ ले आज्ञा निज मात तातरी तुरत वंदवा आया रे॥ सुदर्शन ॥ १। देवाधिष्ट कोप्यो थको स तिण अवसर अर्जुन माली। नगरी के चहुं फेर फिरे स कर में मुद्गल झाली॥ वीत गया छै मास हणे नित छ' छ पुरुष एक नारी रे॥सुदर्शन ॥ २॥ ते तिणने रस्ता में मिलियो देख रह्या नर नारी। सागारी अनशन कर लीनो मन में निश्चय धारी॥ कुछ नहीं चाल्यो जोर देवता निकल गयो तिणवारी रे॥ सुदर्शन ॥ ३॥ अनशन पार लार लेई तिण को आया बाग में चाली, वीर धाइ वाणी सुन सजम लीनो अर्जुन माली। छ महीने में मोक्ष गये सब जनम मरण दुःख टाली रे॥ सुदर्शन ॥ ४॥ ऐसा श्रावक होय गुरु की सदा भक्ति मन भावे, कभी कष्ट व्यापे नहीं सरे जगत माही जश पावे॥ महा मुनि नन्दलाल तणॉ शिष्य जोड़ करी इम गावे रे॥ सुदर्शन ॥ ५॥ गोपीचन्द की क्षमा— न० १२३ (तर्ज -मारग में कॉइ को खड़ा रे चले जाना) चले जाना, अरे हां रे चले जाना, महलों के नीचे काहे कूं खडा रे॥टेर॥ गोपीचन्द को भेख देख कर बहिन बैन फरमावे। भोग छोड़ कर जोग लिया क्या यहां पर अलख जगावे रे॥ चले० १। मरजो मा मैनावती जो तुझ बालक ने भरमायो। दूजो मरजो सतगुरु थारो तुझे भेख पहनायो रे ॥चले० २। धन माल सब छोड़ दिया तुझ दिया कुमति न घर। भगत न का राज छोडकर हुआ गुरु की लार रे॥ चले० ३॥ वह आदर कहो

मा सरलोक में होके भवियण पाया सुर अवतार के ॥ श्रावक ७ ॥ विदेह क्षेत्र में सीझसी होके भवियण करसी शिवपुर वास। माहि मुनि नन्दलालजी होके भवियण तस शिष्य कहत हुल्लास के ॥श्रावक ८॥मुनि नन्दीसेन कुमार—नं० १२६ (तर्ज—चंद गुपत राजा सुनो) नदीसेण मुनि वादीए ।टेर॥सेणिक राय नो टीकरो,नदीसेण कुमारो रे । वीर तणी वाणी सुनी, वैरागी थयो दिगवारो रे॥ नदीसेण ॥१॥ सजम लेवा त्यारीहुश्रो, एक सुर कहे आई ने मोरे । कर्म भोगावली थारे, हिवड़ा संजम लेवे के मोरे ॥ नदीसेण २॥ बहु विध कर समझावियो,मानी नहीं एक वातारे । सजम लीनो वैराग्य से, वीर डियो माथे हाता र ॥ नंदीसेण ३ ॥ ज्ञान भणया स्थेवर कने, थया छे एकल विहारी रे । विना उपयोग चलता गया वेश्या के घर तिणवारी रे ॥ नदीसेण४॥ वेश्या मर्म प्रकाशियो, वचन सुणी ने मुनीरागा रे । साड़ा बारा क्रोड सो नैया, लब्धि कर्ण बरसाया रे ॥ नदीसेण५॥ वैश्या तुरत आडी फिरी, लिया मुनि ने ललचाई रे । समकीत में सेठा रह्या, यह पणथई अधिकाई रे ॥ नदीसेण ६॥ ऐहवो अभिग्रह धारीयो, दश दश नित समझावेरे। वीर समी पर मोकले, धर्मी पुर्ण बनावे रे ॥नदीसेण ७ ॥इम साड़ा बारानरस निकल्या, एक दिन नव समझायारे । एक मटे योग ना मिल्यो, विविध उपाव लगायारे॥नदीसेण८॥ वैश्या कहे किम साहिबा, थया हो आप उदासी रे । सब वृतान्त सुणावियो, वैश्या बोली कर हासी रे ॥ नंदीसेण ६ ॥ दशमा तुम पुरा हुश्रो, ढील न करी रे लगा गो रे । वचन लग्यो जिम ताजणो, निकल्या थई अणगारो रे ॥ नंदीसेण १० ॥ बहु वर्षां का संजम पालने, निर्मल केवल लीधोरे । खूब कहे रे मुनिवरू, काम किया सब सिधोरे ॥ नदीसेण ११ ॥धर्म-रुचि-नं० १२७ (तर्ज —जला की)मुनिवर धर्म घोषना शिष्य तपस्वी गुणधारी हो, धर्म रुचि अणगार थी पर वारी अणगार । धर्म घोषना शिष्य तपस्वी गुणधारी हो मुनि ॥१॥ मुनिवर विचरत २ चम्पानगरी आया हो, धर्म रुचि अणगार । विचरत २ चम्पानगरी आया हो मुनि ॥२॥ मुनिवर आज्ञा लई शिष्य गोचरी सिधायाहो। धर्मरुचि अणगार आज्ञा लई शिष्य गोचरी सिधायाहो मुनि॥३॥मुनिवर मास खमणके पारने शहरमें आयाहो । धर्म रुचि अणगार मास खमणके पारने शहर में आयाहो मुनि॥४॥ मुनिवर फिरतां नाग श्री के घर आयाहो । धर्म रुचि अणगार फिरतां नाग श्री के घर आया हो मुनि ॥५॥ मुनिवर कड़वा तुम्बा की आहार मुनि ने बहरायो हो । धर्म रुचि अणगार कड़वा तुम्बा को आहार मुनि ने बहरायोहो मुनि ॥६॥ मुनिवर जबर हलाहल जाण गुरुजी फरमायो हो । धर्म रुचि अणगार जबर हलाहल जाण गुरुजी फरमायोहो मुनि ॥७॥ मुनिवर देखो निरवद्य स्थानजाई

छप्पन छाल्या ॥ ४ ॥ गया कठेई आज सम्भाल्या, दूजगो तो दी तो नो गाग्या । रूमाल धोती रेशमी वावां, नी की छ म नया ... गिलास गडवा गोटादार रेशमी साड़ो, खोल गांठरी लेगया काडी । ढोल ा पल । गोदड गाया, व्होई खघाई ने हो गया यावा ॥ ६ ॥ सग जूआ को छोडो ले गया ताणी, अबे काहि से पीओगा पाणी । पैसो एक कभी न ी बाट्यो, घर को कीधो आट्यो पाट्यो ॥ ७ ॥ समचे वात करी मय आगे, सट्टे वाज ने आगो, नेम धर्म के मारग लागो । शिक्षा दी घर वालो मागे नस फट्ट के कछू न लागे ॥ ८ ॥ खूब मुनि सट्टा को राख्यो, झडप चन्द नीडे प्रकाश्यो । जूआ अवकी लागे । पक्ष खेचने कमको केम, बुरी लगे तो कर दो नेम । ६ ॥ खेल कभी मत खेलो, सुख चाहो तो सौगद लेलो ॥ १० ॥ --धन्ना सेठ-- नं० १३० । तर्ज.—महला में बैठो हो रानी कमलावती) सांभल हो श्रोता शूरा ने लागे वचन ज्यु ताजणो, कायर ने लागे नाहीं कोय ॥ टेर ॥ नगरी राजगृही ना वासीया, सेठ धन्ना जी जग में सार । पूर्व पुण्य थी बहु रिद्ध पामीया आठ नारया ना भरतार ॥ सामल ॥ १ ॥ एक दिन धन्नो जी बैठा पाठने, स्नान कर छे तिण वार । आठो ही नारयां मिलने प्रेम से, कूड रहो छे जलधार ॥ सामल ॥ २ ॥ सुभद्रा नारी चौथी तेहनी मन में थई छे दिलगीर । आसू तो निकाल्या तेहना नैन से, सजम लेवे छे मुझ वीर ॥ सामल । ४ ॥ प्रेम धरी ने धन जी पूछियो भामण क्यों थई छे उदास । शका मन राखो ये मुझ आगले कारण तो कहो नी विमास ॥ सामल ॥ ५ ॥ कामण कहे छे कथा माहरा, वीरा ने चढियो छे वैराग । एक एक नारी नित की परिहरे, सजम लेवा की रही छे लाग ॥ सामल । ५ । धन्नजी कहे छे भोली बावली कायर दीसे छे थारो वीर । सजम लेणो तो दिल में धारियो तो किम करनी फिर ढील ॥ सामल ॥ ७ ॥ सुभद्रा नारी कहे छे कन्त ने मुख से बनावो फोकट वात । यह सुख छांडी ने वाज्यो शूरमा प्रीतम जब जानू थाँकी वात ॥ सामल ॥ ७ । तत्क्षण धन्नो जी उठने बोलीया कामन री जो तुम दूर । सजम लेवांगा अब इन अवसरे जब मै वाज्या सा जग में श ॥ साम त । = ॥ वे कर जोडीने सुन्दर बीनवे कह्यो हसी के वस बोल । काची की सांची न कीजे साहिबा हिवडे विचारी ने वाहिर खोल ॥ सामल ॥ ६ ॥ सजम लेनो तो साहिबा मोहिलो चलनो छे कठिन विचार । वावीस परीसा सहना दोहिला ममता मागी ने समता धार ॥ सामल ॥ १० ॥ उत्तर पर उत्तर हुआ अति घणा आया साला के भवन उच्छाव । दोऊ मिल साथे सजम आदर्यो कायर उतरेनो नोवे ... ॥ सामल ॥ ११ ॥ साला बहनोई मिल सजम लीयो ... वीर जिनन्द जी के पास । सालीभद्र जी स्वार्थ सिद्ध गया धन्ना जी शिवपुर वास ॥ सामल ॥ १२ ॥ समत उगणो से इकसठ साल में कीनो गढ

ऋषभ जिनराया । चौरासी लाख पुर्वनो आयु, पांन से धनुष नी ऊची काया ॥ चौबीसी ॥ १ ॥ अयोध्या नगरी जित शत्रु ...
ऋषभ जिनराया । चौरासी लाख पुर्वनो आयु, पांन से धनुषनी ऊची काया ॥ चौबीसी ॥ २ ॥ सावत्थी नगरी जितारथ नन्द अजित जिनराया । बहत्तर लाख पुर्वनो आयु, साडो चार से धनुषनी ऊची काया ॥ चौबीसी ॥ ३ ॥ वनिता नगरी सम्वर राजा, सेना दे रानी सभव जिनराया । साठ लाख पुर्वनो आयु, चार से धनुषनी ऊ ची काया ॥ चौबीसी ॥ ४ ॥ कौशम्बी राजा सिद्धारथ नन्द चौथा जिनराया । पचास लाख पुवनो आयु, साडो तीन से धनुषनो ऊ नो काया ॥ चौबीसी ॥ ५ ॥ नगरी मेघरथ राजा, सुमगलानन्द सुमति जिनराया । चालीस लाखे पुर्वनो आयु, तीन से धनुपनी ऊ ची काया ॥ चौबीसी कौशम्बी नगरी श्रीधर राजा, सुखमा दे नन्द पद्म प्रभु जिनराया । तीस लाख पुर्वनो आयु, अढाई से धनुषनी ऊ ची काया ॥ चौबीसी ॥ ६ ॥ वाणारसी नगरी प्रतिष्ट राजा, पृथ्वी दे नन्द सुपास जिनराया वीस लाख पुवनो आयु, दो से धनुषना ऊ नी काया ॥ चौबीसी ॥ ७ ॥ चन्द्रपुरी नगरी महासेन राजा, लक्ष्मादे नन्द चन्द प्रभु जिन राया । दस लाख पुर्वनो आयु, डेढ से धनुपनी ऊ नी काया ॥ चौबीसी ॥ ८ ॥ काकन्दी नगरी सुग्रीव राजा, रामा दे नन्द सुविधि जिन राया । दोय लाख पुर्वनो आयु, एक सो धनुषनी ऊ ची काया ॥ चौबीसी ॥ ९ ॥ भद्दिल पुर नगरी दृढरथ राजा, नदा दे नन्द शीतल जिनराया । एक लाख पुर्वनो आयु नेऊ धनुषनी ऊ चो काया ॥ चौबीसी ॥ १० ॥ सिद्धपुर नगरी विष्णु राजा, विष्णु दे नन्द श्रयांस जिनराया । चौरासी लाख वर्षनो आयु अस्सी धनुपनी ऊ ची काया ॥ चौबीसी ॥ ११ ॥ नाग पुर नगरी वसु पुज्य राजा, जयादे नन्द वासु पुज्य जिनराया । बहत्तर लाख वर्षनो आयु, सित्तर धनुषनी ऊ ची काया चौबीसी ॥ १२ ॥ कपिल पुर नगरी कीर्त वर्म राजा, सामादे रानी विमल जिनराया । साठ लाख वर्षनो आयु साठ धनुषनी ऊ ची काया ॥ चौबीसी ॥ १३ ॥ अयोध्या नगरी सिंहसेन राजा, सुजसा नन्द अनन्त जिनराया । तीस लाख वर्षनो आयु, पचास धनुष नी ऊ ची काया ॥ चौबीसी ॥ १४ ॥ रतनपुर नगरी भानु राजा, सुव्रता धर्म जिनराया । दीन लाख वर्षनो आयु पेतालीस धनुषनी ऊची काया ॥ चौबीसी ॥१५॥ हस्तनापुर नगर अश्वसेन राजा, अचलादे नन्द शान्ति जिनराया । एक लाख वर्षनो आयु, चालीस धनुपनी ऊची काया ॥ चौबीसी ॥ १६ ॥ गजपुरी नगरी सिंहसुर राजा, सुरादे नन्द कुन्थु जिनराया । पिचानु सहस्र वर्षनो आयु पैंतीस धनुपनी ऊची काया ॥ चौबीसी ॥ १७ ॥ नागपुरी नगरी सुदर्शन राजा देवकी नन्द अरह जिन राया । चौरासी सहस्र वर्षनो आयु तीस धनुपनी ऊची काया ॥ चौबीसी ॥ १८ ॥ मिथिला नगरी तिहां कुम्भ राजा, प्रभावती नन्द मल्ली जिनराया । पचावन सहस्र वर्षनो आयु, तीस धनुषनी

नर शीप नवावे रे जाका गुणानुवाद गुण गावे ॥ अहो ॥ ७ ॥ -पूज्य श्री मुन्नालाल जी महाराज के गुणानुवाद- नं १३६ (तर्ज — ख्याल की] पूज्य मुन्नालाल जी शीतल स्वभावी गुण भंडार है ॥ टेर ॥ बैठ सभा के बीच करते ज्ञान प्रकाश । वाणी सुन श्रोता के हृदय सुमति कर निवास रे ॥ पूज्य ॥ १ ॥ गुरु गम्य करी वरणा पूज्य जी बहुत सूत्र के जान । अर्थ पाठ भिन्न २ समझावे सबको पडे पिछान रे ॥ पूज्य ॥ २ । क्रियावंत बाल ब्रह्मचारी सागर वर गंभीर । क्षम्या भाव शुद्ध संजम पालक शूरवीर महावीर रे। पूज्य ॥ ३ ॥ दर्शन किया मन प्रसन्न होत है शशी सम सोम दिदार । क्या तारीफ करूं पूज्य जी का, गुण है अपरम्पार रे ॥ पूज्य ॥ ४ ॥ सोमवार शुद्ध चौथ इक्यासी श्रावण मास शुभ आया । महा मुनि नन्दलाल तणा शिष्य हर्ष हर्ष गुण गाया रे ॥ पूज्य ॥ ५ ॥

-पूज्य श्री मुन्नालाल जी का गुणानुवाद- नं० ४० [तर्ज —मन डो मोसो रे प्यारा लागे रे २ श्री मुन्नालाल जी है पूज्य सागे रे ॥ टेर ॥ रतनपुरी प्रसिद्ध शहर है, मुल्कों में सब जाने रे जणी नगर के बीच जनम पूज्य लीनो थाने रे ॥ प्यारा ॥ १ ॥ नान्ही वय में संजम पूज जी, पिता संग में लीनो रे । उदय सागर के चरण कमल में चित धर दीनो रे । प्यारा ॥ २ ॥ सेवा करके पूज्य पाद की, सूत्र ज्ञान बहु कीना रे । संजम मांही लीन चित, वैराग्य में भीना रे ॥ प्यारा ॥ ३ ॥ सागर सम गंभीर पूज्य के, मान दंभ नहीं दरसे रे । वाणी जैन मधुर आपकी, अमृत बरसे रे ॥ प्यारा ॥ ४ ॥ प्रकृति बडी शान्त आपकी, क्रोध नजर नहीं आवे रे । करके दर्शन पूज्य राज का, आनन्द पावे रे ॥ प्यारा ॥ ५ । न्यायवंत और सरल स्वभाव, ज्ञान गुणाकर भारी रे, कहां तक करूं बखान पूज्य जी का, है बलिहारी रे ॥ प्यारा ॥६॥ जय विजय सदा होवे आपकी, जहां पर आप पधारो रे, धर्मध्यान का लगे ठाट, होवे उपकारो रे ॥ प्यारा ॥ ७ ॥ उगणी से गुणयासी भादवो, मदसोर के मांही रे मुनि नन्दलाल तणा शिष्य, ऐसे जोड़ बनाई रे ॥ प्यारा ॥

-मुनिराजों के गुणानुवाद- नं० १४१ (तर्ज - ख्याल) पूज्य मुन्नालाल जी, मीठी मनोहर वाणी आप की ॥ टेर ॥ मही मंडल में विहार विचरते बहुत वर्षों में, आये । ज्ञान वंत गुणवंत सात गुण तीस लग में लाय । रतनपुरी महाराज पधारे रोम राम हुल-साये रे ॥ पूज्य ॥ १ ॥ गादी मांग नदेक स्थवर, मुनि नन्दलाल विद्वान । पंडित है मुनि देवीलाल जी सूत्र रहस्य के जान ॥ भीम राज जी मुनि गुणी भद्रीक भाव ला जान रे ॥ पूज्य ॥ २ ॥ कूक मुनि सन्तों का दास मुनि चौथमल विख्यात । केशरीमल कस्तूर-चन्दजी सन्त है दोनो भ्रात, शंकर लाल और राधाकृष्ण जी सेवा करे दिन रात रे ॥ पूज्य ॥ ३ मोतीलाल जी विनय वान और

से नाटक ओढ़ते थे ॥ वे नर मर मिट्टी में मिल गये तेरा काल महा...

कहलाता है। घड़ी घड़ी अनमोल वक्त तू नाहक मुफ्त गवाता है ॥ नेम धर्म सुकृत करनी का क्यों नहीं लाभ ... हवा इस कलुकाल की तुझे फिक्र नहीं आता है ॥ महामुनि नन्दलाल तर्ज शिव जोड़ आगरे गाता है ॥ तेरे । ४ ॥

-काल महा बलवान- नं० १४७ [तर्ज -पूर्ववत] काल महा बलवान जगतमें इनसे किस का नाता है। ना मालूम होशियार रहो किस रोज अचानक आता है ॥ टेर ॥ जो वकील बैरिष्टर थे वो ऐसी अक्ल घुमाते थे। बात में बात कि काल दफा कनून किताब लाते थे ॥ सच्चे को झूठा नित करके झूठे को खरी कराते थे। करते सवाल जवाब जहां पर हाकिम को नाच नचाते थे ॥ उनकी एक चली नहीं नर क्यों औरों पर अकड़ता है ॥ ना मालूम ॥ १ ॥ अरब पति कई खरब पति कई क्रोड पति लखपतियन का। देख देख सम्पत निज घर की खुश करते अपने मन को ॥ सुवर्ण की सेजा पर सोते खाते हवा जाकर बन को। अच्छी तरह फाजत करते कभी न दुःख देते तन को ॥ वे भी गये ना रहे यहां पर तू किस पर घुमराता है ॥ नामालूम ॥ २ ॥ अर्जुन भीम रावण से राजा बडे मर्द कहलाते थे। बैठ तख्तपर करते न्याय एक छत्तर राज चलातेथे ॥ नहीं मरेंगे रहेंगे यहीं हम शीशेकी नाम लगाते थे। नहीं था पार जिनके बल का पैरों से जमीन धुजाते थे ॥ वो भी हो गये निर्बल इससे तू किस पर जोर जमाता है ॥ न मालूम ॥ ३ ॥ वैद्य हकीम औषध के वेता जो धन्वन्तर खुद कहलाते थे। नब्ज देख फिर सोच समझ कर वैसी दवा खिलाते थे ॥ उनको भी काल सम्भाल लिया जो औरों का रोग मिटाते थे। शुभ काम बना फिर याद करेगा ऋषि मुनि फरमाते थे ॥ महा मुनि नन्दलाल तथा शिष्य ज्ञान की दुगल सुनाता है ॥ नामालूम ॥ ४ ॥

-पैसे से अनर्थ- नं० १४८ (तर्ज -पूर्ववत पैसे के परवा सब रखते थे जग बोहन गारा है। इनको त्याग वैराग्य लहे वोधन जग में अणगार है । टेर ॥ क्या बालक क्या बुड्ढा देखो सब का मन ललचाता है। है अनर्थ का मूल साफ वीत राग देव फरमाता है ॥ पुत्र पिता और पति नार के वैर विरोध कराता है। कहो जी किसके साथ गया हम सुनते कौन सुनाता है ॥ तू कहता धन मेरा मेरा इसका क्या इतबाराहै ॥ इनको ॥ १ ॥ क्या कहूं इस धन के कारण काज अकारज करते हैं निर्भय होकर आप फिरे पर भव से जरा नहीं डरते हैं ॥ गिन गिन के बहु माया जोड जोड़ जमीं में धरते हैं ॥ भूख प्यास सी उष्ण सही मूरख पच पच के मरते हैं। तृष्णा रूपी जाल जगत में इनका खूब पसारा है ॥ इनको ॥ २ । महारातक

विचार मन वश कीनो, मन वश कीन। सती महल मन्दिर सिणगार सभी तज दीनो। सती लेकर सजम भार काम जिथ कीनो काम जिथ कीनो। सती विहार कियो वर्षा से चीर सब भीना। गिरनार गुफा में गई धार हुशियारी, धार हुशियारी ॥ क्रम ३ ॥ तिण गुफा माय रहनेमजी किया है ध्याना किया है ध्याना। राजुलजी नग्न देख अंग कपाना। यों कहे नेम राजुलजी श मन आनो। श्री समुद्रविजयजी का लघुनन्द मोय जानो। ससार तणा सुख भोग लब्या ब्रह्मचारी, सरणॉ ब्रह्मचारी ॥ क्रम ४ ॥ सुन राजमती रहनेम को एम समझावे, एम समझावे। तुम भोग छाडकर योग लियो किम दावे। थे मोटा कुल का महाराज लाज नहीं आवे लाज नहीं आवे। मन कर नहीं वछु इन्द्र यहा सुर आवे। थाने वार वार धिक्कार बोलोनी विचारी, बोलानी विचारी ॥ क्रम ५॥ सुन राजमती का वैन नैन शरमाया, नैन शरमाया। सुवचन महासतीजी आप फरमाया। इम धम ठिकाने लाय कर्म खपाया। श्री रहनेम राजुलजी मोक्षपद पाया। मुझे लगी आश दिल मांय दर्श कर थारी दर्श कर थारी ॥ क्रम० ६ ॥ मैं अरज करू कर जोड नाथ मोय तारो, नाथ मोय तारो। तेरे शरणागत आधार काय मेरा म्हारो। श्री नन्दलालजी महाराज ज्ञान दातारो, शान भण्डारा। तस्य शिष्य खूबचन्द कहे दास चरणारो। ये चोपन साल छोटी सादड़ी स्तवन कियो त्यारी, स्तवन कियो त्यारी ॥ क्रम० ७ ॥

अरणक श्रावक की दृढता—नं० १५१ (तर्ज—मत जान गिरनार नेम फिर क्या करना घन को) समकीत दृढ देखन सुर आया रे। धन धन अरणक श्रावकजी शुद्ध धर्म ध्यान ध्याया ॥टेर॥ चपा नगरी को बहु वाणया मिल मनसूबे धारी। लूण समुद्र म जहाज चलाना, हुआ वेग त्यारी ॥ किराणो लीनो महाराज किराणो लीनो। बहु जहाज जिपे भर दीना, आनो भी जापतो कीनो ॥ महूरत शुभ देख्यो चित चाया रे महूरत शुभ देखो चित चाया रे, धन धन ॥ ॥ जहाज चला समुद्र के अन्दर, मिलयो जोग ऐसो, हुई उलकापात गगन में अब कीजे कैसो ॥ वज बहु गाजे, महाराज वज बहु गाजे। बहु दिशि बादल वाजे, आगा में बीजली छाजे ॥ लोग बहु जहाज में घबरायो रे लोग बहु जहाज म घबराया ॥ धन धन० ॥२॥ कर पिशाच को रूप एक सुर ऊभा गगन माही। वार वार नाचे अति कूदे खडग हाथ मॉही ॥ लार मुख पडती, महाराज लार मुख पडती। कोई आँख्या लाल फरकती, मुख अग्नि ज्वाल निकलती ॥ भुजा दोई ऊची कर आया॥ धन धन० ॥३॥ सर्प लपेट्या तन ऊपर रुड माल गला माई। मनरूप शियाला घुघू कान पर लाग बेठाइ ॥ कायर जन कप, महाराज कायर जन

महोत्सव सुर कीनो । ओघा पात्र हाजर कर दीनो, मुनिराज हाथ यश लीनो ॥ पाच से चोर को समझाया रे, पाचसे चोर को समझाया ॥ धन्य॥ ६ ॥ कर्म खपाई मोक्ष पहुँता कपिल ऋषिराया । जिनके दर्शन काज मेरातो मन निशदिन हुलसाय जिन के दर्श कब पाऊ, महाराज दर्श कब पाऊ । पद पाचों का गुण गाऊ, शिव पुर का सुख नित चाऊ ॥ खूबचन्द यही मन भाया रे, खूबचन्द यही मन भाया ॥ धन्य ॥ ७ ॥-धर्म की नाव- न १५३ [तर्ज —द्रोण] तुम सुनो मोक्ष का पथ सत फरमावे, महाराज, जीव का जतना करना जी ॥ येहीज धर्म की नाव हुवे भव सागर तिरना जी ॥ टेर ॥ सब जीव जगत में अपना जीना चाहे, महाराज किसी को नहीं सताना जी ॥ हुवे जीवों का उपकार वहा कुछ राह बताना जी ॥ यह झूठ पाप का मूल कभी मत बोलो, महाराज झूठ जिसने नहीं छोडाजी । ताको होत बहुत सताप पडे परभवमें फोडाजी ॥ इम जान साच नित खूब तोल कर बोलो, महाराज बोल फिर नहीं बदलनाजी॥येई ज॥१॥ यह चोरी करना तीजा पाप सुन प्यारे महाराज किसी की वस्तु उठाना जी । अपने ही करसे आप करो पर तीत घटानाजी ॥ ये चोर चोर यों सबही दुनिया बोले, महाराज जिनसे अहवाडा जी । गिनो परधन धूल समान रखो अपना दिल गाढा जी । आज्ञा से जो कोई चीज देवे तो लेना, महाराज ऐसी वृत्ति दिल धरना जी ॥ येहीज ॥ २ ॥ जो काम अ ध पर नार तके मतिहीना, महाराज कहो कैसे रहे आवी ? ॥ यह रोग शोग का भवन झूठ मत जानो, महाराज हुवे तन धन की हानि जी । इम रावण पदमोत्तर देख जिन्हो की हुई खरावी जी ॥ तुम शील शिरोमणि जग उत्तम व्रत धारो, महाराज बिपति सब दुख दूर हरना जी ॥ जान तजो कुकर्म यह शास्त्र की वानी जी ॥ अब धार धार सतोष ममता तुम मेटो ये हीज ॥ ३ ॥ यह पाप पाचमा अति लोभ का करना, महाराज लालसा लग रही धन की जी ॥ हुवे कर्मों से निर्लेप सिधा मुक्ति पद पावे मन क जी । यह पाचों अवगुण तजो पाच गुण धारो, महाराज जीव जिनसे शुख पावे जी ॥ येहोजी ॥ ४ ॥ -हितोपदेश- न १५४ [तर्ज — पूर्वत] दुनिया के बीच जो मनुष्य जन्म में आया, महाराज किया कुछ पर उपकारा जी ॥ फिर प्रभु नाम भज लिया तो उसका सफल जमारा जी ॥ टेर ॥ ये मात तात बन्धव सुत दारा भगिनी, महाराज तू जाने यह है सब मेरा जी ॥ पण मान चाहे मन मान है आखिर ना कोई तेरा जी ॥ ज्यों सराय में ले आय मुसाफिर वासा, महाराज भोर भये सब उठ जावेगी । यो अपने दिल मे समझ जी । श्री नन्दलाल जी मुनि तणा शिष्य गावे, महाराज मुझे सतगुरु का शरणा जी ॥ फिर॥ १ ॥ धन कारण नाहक यो ही कर्म कमावे जी ॥ जो पर भव में निज आतम का सुख चाहे, महाराज लवेगा पाप से टारा जी ॥

महाराज सफल नर भव कर लीनो जी ॥ इसी ढुदम मां निन राज सूत्र में निर्णय कीनो जी ॥ श्री नन्दलाल जी मुनि तणा शिष्य गावे, महाराज जोड चित्तौडबनाई जी ॥लियो॥५-सुमति कुमति का निर्णय- न १५८ [तर्ज —पूर्ववत , ये कुमति सुमति का जिकर सुनो सब भाई, महाराज दोनों अपनी हठ ताने जी ॥ है कौन अच्छी और कौन बुरी नर शठ क्या जाने जी ॥ टेर ॥ मिथ्यात्व सहल मे चेतन की मति मोई, महाराज कुमति कष्टन जग माई जी ॥ सुमति से मिलन दे नाय आप लीनो बिलमाई जी ॥ कहे सुमति पिया से थें कुमति का सग माई, महाराज रहो छो क्यो मुरझाई जी ॥ खट खड पति सग लाग जिन्हों न दुर्गति पाई जी ॥ सुर असर नर इन्द्र कई ऋषियों को, महाराज कुमति छल लीना छानेजी, है ॥ कौन ॥ १ ॥ कर रोप कुमति यो सुमति भोक से बोली, महाराज रहम तुझको नहीं आया जी ॥ जो राजा राज कुमार थी जिनकी कोमल काया जी ॥ हीरा पन्ना माणक मोती सुवर्ण का, महाराज सबधा भडार सवाया जी ॥ जिनका निज भवन छुडाय जोग तेंने दिलवाया जी ॥ ले झोली पातरा घर घर भीख मगाइ, महाराज पडा जो तेरे पाने जी है ॥ कौन ॥ २ ॥ कहे सुमति कुमति तू सुन काले मुख वाली, महाराज यहा तू किसे डरावे जी ॥ जितने दुनिया मे पाप है व सब आप करावे जी ॥ इस भव में तू प्रत्यक्ष सुख बतावे, महाराज पीछे तू नर्क पठावे जी ॥ विष मिश्रित का दृष्टान्त साफ ज्ञानी फरमावे जी ॥ जो है नुगरा वे समझ तेरे सग लागे, महाराज पूछ जाकर पडिताने जी ॥ है कौन ॥ ३ ॥ जो लकपति राजा रावण बलवत थो, महाराज नीयत तेंने पलटाई जी ॥ श्री रामचन्द्र महाराज की सीता नारि हराई जी ॥ तेंने सोने की लका का नाश कराया, महाराज इसे दिया नर्क पठाई जी ॥ तू बुरी बुरी फिर बुरी न्यारी दुर्भागन, महाराज सत जन तुझे बखाने जी ॥ है कौन ॥ ४ ॥ कहे सुमति मैं न पापों का पाप गमाया, महाराज जिन्हों का काज सुधारा जी ॥ कई मेल दिया सुर लोक कई को मोक्ष मझारा जी ॥ श्री नन्दलाल जी मुनि तणाँ शिष्य गावे, महाराज गुरु मेरा है उपकारी जी ॥ उपदेश छटा जो सुने उनका दे भर्म निवारी जी ॥ जो गुरु कहे वो सीख हिया में धारो, महाराज सुमति सुख देगा थाने जी ॥ है कौन ॥ ५ ॥ -संयति राजा का त्याग- नं० १५६ तर्ज —पूर्ववत) कपिल पुर का था नाम संयति राजा, महाराज मोह अज्ञान का छाया जी जब मिले गुरु गुणवान ज्ञान का रग लगाया जी ॥ टेर ॥ कोई दिन माथ लेकर चतुरगी सेना, महाराज अहेडे करी चढाई जी ॥ लिये पशु जीव को घेर नृप जाकर बन माही जी तब देख दूर से एक मृग का टोला, महाराज कुछ भी नहीं सोचे अन्यायी जी ॥ वे रहम बाण दिया फेंक वींद दी जान पराई जी ॥ चलत ॥ उप केशरी बन मे मुग गी

चलत ॥ इतनी सुन क्षत्रीय राज ऋषि फरमावे ॥ महाराज सयति नाम हमाराजी । मैंने सुनके सत्य उपदेश किया त्यागन ससाराजी ॥ चलत ॥ इतनी सुन क्षत्रीय राज ऋषि फरमावे ॥ सुख से विचरो मुनि आप जिधर दिल चाव ॥ दुनिया में बहुत कुपथ जो चले चलावे ॥ उनको सगती हरगिज होनी नहीं चावे ॥ मिलाप॥ वैराग सहित दृढ रहो सदा सजम में, महाराज करो पराक्रम मनचायाजी जव० ॥ ६ ॥ फिर सुनो मुनि हुए पहले जिन शासन मे, महाराज भरतसागर महारायाजी ॥ मघवजी सनतकुमार रूप अति सुन्दर पायाजी ॥ श्री सत कुन्थ अरे नाथ पुण्य प्रतापी, महाराज छे छे प्रभु पदवी पायाजी ॥ महापद्म और हरिसेन करी एक छत्तर छायाजी ॥ चलत ॥ दशमा चक्री जयसेन नाम कहवाया ॥ जाने छे छे खण्ड का राज तुरत छिटकाया ॥ लेकर सजम फिर आतम जोर लगाया ॥ यो कर्म काट केवल ले मोक्ष सिधाया ॥ मिलाप ॥ तज दिया राज भडार दशारण भद्र, महाराज मान जाका रहा सवायाजी ॥ जव० ॥७॥ प्रत्येक बुद्धि कर कहू परमुख राज महाराज राज-पुत्रों को दीनाजी ॥ हुवे ऐमे ऐसे भूप जिन्होंने सजम लीनाजी ॥ कर अष्ट कर्म का अन्तमोक्ष पद पाया,महाराज काज आतम का कीनाजी मुनि निश्चल रहना आप मिला जिन मारग झीनाजी ॥ चलत ॥ देकर शिक्षा कर गये विहार ऋषिराया ॥ शुद्ध जोग पाल मुनि सयति मोक्ष सिधाया ॥ एक तिम्बाहेडा शहर सुनो सब भाया ॥ उगणो से सित्तर के साल चोमास ठाया ॥ मिलाप ॥ नन्दलाल मुनि है गुणी ज्ञान के सागर, महाराज सत्य उपदेश सुनाया जी। जव० ॥८॥ भृगु पुरोहित व इक्षुकार राजा का वैराग्य—नं० १६० तर्ज — [पूर्ववत]जो जान लिया ससार का सगपण कचा,महाराज कहो फिर कैसे रहेगाजी ॥ तब छाया निगर वैराग तो आखिर सजम लेगाजी जी ॥टेर॥ था राज पुरोहित इक्षुकार नगर का वासी, महाराज जिनके यससा घरनारीजी फिर युगल पुत्र पुण्यवान प्राण वल्लभसुखकारी जी ॥ धन का पूरण भडार बहुविध भरिया, महाराज कमी जिनके कुछ नाहीजी ॥ तब पुरोहित को यह बात याद पहले की आईजी॥चलत॥ एक दिन जैन के साधु कही मुझ ऐसी ॥ क्यों फिकर करे तू पुत्र तणो फल लेसी ॥ चाहे जितना करो उपाय कमी नहीं रहसी ॥ वो बालपणे में आखिर सजम लहसी ॥ मिलाप ॥ ये मोटी वस्ती जान विचरता साधु, महाराज आया बिन कैसे रहेगाजी ॥ तव० ॥९॥ यो करके हृदय विचार पुत्र के कारण, महाराज वन्न मे वास वसायाजी ॥ निज नन्दन को बुलवाय पुरोहित कैसा भरमाया जी ॥ कोई दिन की हो तुम देखो जैन के साधु, महाराज नजर उनके मत आनाजी ॥ दिल चाहे वहा चुप-चाप होके जल्दी छिपजानाजी ॥ चलत ॥ रहसीस उघाडो मुडे मुँह पति बाके ॥ वो बांचे सरस बखान दया मुख भाखे ॥ कर में झोली फिर काख में ओघो राखे ॥ नित चाले हलवी चाल

लेवे निर्दपण अनपणी हो ॥ पिताजी ॥ २ ॥ लावे अनलावे समता राखे, पण दीन वचन नहीं भाखे, हो ॥ पिता जी ॥ ३ ॥ ना किणने दु ख उपजावे, ते तो पाप लग्या पछतावे हो ॥ पिताजी ॥ ४ ॥ गुरु गुणवन्त विवेकी, मैं तो प्रत्यक्ष लीना देखी हो ॥ पिता जी ॥ ५ ॥ ॥ द्रोण ॥ अब दो आज्ञा मैं सजम का पद लागा, महाराज नहीं तुमसे ललचाता जी ॥ है कौन पुत्र कौन मात तात झूठा सब नाता जी ॥ चलत ॥ सुन बात पुरोहित के आसू आ गये नैना यो कहे पुत्र स तात मोह वश लेना । । नित नये करो शृगार पहनो गहना ॥ तुम गृह वास में पालो धर्म की ऐना ॥ मिलाप ॥ फिर तुम साथे मैं भी सजम लेऊ गा, महाराज फेर फिर कौन कहेगा जी ॥ तब ॥ ॥ ७ ॥ कहे पुत्र धर्म ढील कभी नहीं करना, महाराज तात हो गये वैरागी जी ॥ तब जसा नामा नार पति से बोलन लागी जी ॥ ये दोनों पुत्र तो निश्चय ही सजमे लेगा, महाराज होन गत कौन मिटावे जी ॥ जो जैन मुनि के नैन कहो खाली किम जावे जी चलत ॥ नहीं माने पुरोहित पुरोहितानी मन मे विचारे। मुझ पति पुत्र निज आतम कारज सारे । घरमांहि रह कर योंही जनमको नहारे ॥ मुझे लेना सजम भार इन्हों के लारे ॥ मिलाप ॥ धन माल त्याग कर चरों ही सजम लीना, महाराज कीर्ति क्यों नहीं पसरेगा जी ॥ तब ॥ ८ ॥ तब इक्षुकार नृप भगू पुरोहित को छड्यो, महाराज सभी धन माल मगायो जी ॥ भर भर गाडा के माँय लाय भडार नखायो जी ॥ य सुनी बात रानी जी कहे राजा से. महाराज काम आछो नहीं कीनो जी ॥ इन बाते शोभा नाय दान दे पाछो लीनो जी ॥ चलत ॥ यो बिना विचार बात हमे कहवो ॥ तो जान बूझ कर फिर घर में क्यो रहवो ॥ सब विषय भोग तज जल्दी सजम लेवो ॥ हुवे आत्म का कल्याण धर्म सुध सोवे ॥ मिलाप ॥ ऐसा तो वचन हलुकर्मी जीव को लागे, महाराज पाप से वही डरेगा जी ॥ तब ॥ ९ ॥ कमलावती रानी सजम की दिल धारी, महाराज भूप निज मन समझावे जी ॥ एक धर्म बिना कोई और जीव के सग न आवे जी ॥ यो कर विचार राजा रानी मिल दोई, महाराज भोग छिन में छिटकाया जी अनुक्रमे छेहू जीव वास मुक्ति का पाया जी ॥ ॥ चलत ॥ हो गये सिद्ध भगवान भजो सब भाई ॥ जिनके सुमरण से कमी रहे कुछ नाई ॥ ये दिल्ली शहर उगणीसे मनपठ माई ॥ मगसर बुध बारस के दिन जोड बनाई ॥ मिलाप ॥ श्री नन्द लाल जी मुनि तणा शिष्य गावे, महाराज गुणी को ज्ञान लगेगाजी ॥ तब ॥ ॥ १० ॥ थावरच्या पुत्र-न० १६१ [तर्ज — लगड़ी जो होवे पुन्यवान जीव, उपदेश उसी को तुरत लगे ॥ ससार त्याग के मुनि पद धार, मोक्षके पथ लगे ॥टेर॥ सोरठ देश द्वारिका नगरी धनपतो देव बसाई है, सुरलोक सरीखी सूत्रमें वरणन कर दर्शाई है, करे राज नद जी के

अच्छी तरह लिया समझाई । पर एक न मानी, पुत्र को आखिर आज्ञा फरमाई ॥ शेर—भेट मुश्किल नाई । दे दे न्याय थावरच्या माता अच्छी तरह लिया समझाई । पर एक न मानी, पुत्र को आखिर आज्ञा फरमाई ॥ शेर—भेट
मुश्किल नाई । दे दे न्याय थावरच्या माता कहो मात जी किम आवीया दीजे मुझे दर्शायजी ॥ प्राण प्यारा पुत्र आज गया वन्धा जिन-
ना हरिराय के नजराना कीना जायजी, कहो मात जी किम आवीया दीजे मुझे दर्शायजी ॥ खडी ॥ मैं दिया बहुत दृष्टांत कमर नहीं राखी, नहीं माना एक समझा समझा
राजजी, वाणी सुनता प्रभु की वैराग्य दिल में छायजी ॥ खडी ॥ मैं दिया बहुत दृष्टांत कमर नहीं राखी, मैं छत्र चवर के काज राज पे आई,
कर थाकी, फिर दीनी आज्ञा उसको सजम लेवा की, है मुझ इच्छा दीक्षा महोत्सव करना की, मैं छत्र चवर के काज राज पे आई,
महाराज लवाजमा भी बख्शावोजी । सुन बात कहे हरीराय मात अपने घर जावोजी । तुझ पुत्र को दीक्षा महोत्सव मे करसूं, महाराज
और होय सो फरमावोजी । करू सफल मनोरथ आज कोई शका मत लावोजी ॥ पणिहारी ॥ राजन पति महाराजवी सुनो गुणीजन
हो २, बस ये ही अरज महाराज गुणीजन हो ॥१॥ इम कह निज घर आगई सुनो गुणी जन हो २, तब पीछे से हरिराय, गुणी जन हो
॥२॥ वहु परिवार सं परवरया सुनो गुणीजन हो २, हो गज हौदे असवार गुणीजन हो ॥३॥ थावरचा माता के घर सुनो गुणी जन हो २
आया त्रीखड का नाथ गुणीजन हो ॥४॥ मिलाप—दिया मात सन्मान जहा पर गोविन्द के गुण होने लगे, समार ॥२॥ लाल बुलाकर
लेई गोद में शिर पर हरिजी हाथ धरे । सजम मत लेवो, भोगवो रिद्ध मौज में रहो घरे । द्वारिका नगरी स्वर्ग सरीखी देख जिन्हों का नेन
ठरे । जहा खुशी तुम्हारी, करो दिल चाहे कोई नहीं दखल करे ॥ शेर ॥ सुख से वसो नगरी विषे तुम मुझ भुजा की छाय जी, कहो माफ
दिल खोल के मुझ से तू मत शरमाय जी, जो कुछ भी तकलीफ तो तुम दीजिये दर्शाय जी जिसका करदे उपाय वह मैं करू सब रोग ही
मिटाय जी, ॥ खडी ॥ तब कहे कुंवर कर जोड अरज सुन लीजे, मेरें जन्म मरण के दुःख दूर कर दीजे, जो ऐसी दवा देने मे ढील
नहीं कीजे, मैं मानूंगा उपकार आप यश लीजे, ॥ द्रोण ॥ जो घर बैठा सहज ही रोग मिटजावे, महाराज तो फिर सजम क्यों लेनाजी
क्षुधादिक जो बावीस परीषा नाहक मे सहना भी सुर असुर मनुष्य की भीये समर्थ नाइ, महाराजकृष्ण यों बोले बैना जी, [illegible] करना
के अनुसार मिटे सब दुख की रैना, ॥ पणिहारी ॥ इसीलिये महाराज यों सुनो गुणी जन हो २ मैं लेऊ सजम भार गुणी जन हो ॥१॥
कर्म रोग सब मेटने सुनो गुणी जन हो २ मैं जाऊ मोक्ष मझार गुणी जन हो ॥ २ ॥ मुझको मना मत कीजिये सुनो गुणी जन हो २
दो आज्ञा बकसाय गुणी जन हो ॥ ३ ॥ इतनी बात सुनी हरि सुनो गुणी जन हो २ तब जान्यो दृढ वैराग्य गुणी जन हो ॥ ४ ॥
॥ मिलाप ॥ जिम हो तिम करो लाल हरि बार बार यों कहन लगे ससार ॥ ४ ॥ आज्ञाकारी पुरुष भेजकर कृष्ण पडहो दियो बजवाई,

पर्णे गोविन्द को, महा० बाग में लिया बुलाई जी । वहां पूजा के मिस जाय आप हरिसंग सिधाई जी ॥ कर गई फजीती
दुर्जन लोग हसाया, महा० वश में छाप लगाई जी । केई शूरवीर सरदार जिन्हों की बात गमाई जी ॥ यो मेरी तरफ से मरगई वहिन
रुक्मणी, महा० रोशकर भाग्य सुनाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ ४ ॥ मुझ इष्ट कान्त वल्लभ वेदरवी कुंवरी, महा० डूम को दूं
परणाई जी । पिण भूल चूक में कभी न दूं यादव कुल माही जी ॥ यूं कही दूत को तुरत विदा कर दीना, महा० द्वारिका नगरी
आया जी । रुक्मणी पूछे घर प्रेम दूत सब हाल सुनाया जी ॥ वो सुणी पिहर की बात हरि पटराणी, महा० कई मन घड़ा
उठाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ ५ ॥ या बात सुण्या बिन बिम रहे भामा राणी, महा० और जादम की नारी जी । जो आंसोगा
तो आज, हमी करली गिरधारी जी ॥ यों बैठी करत विचार महल के माही, महा० कुंवर इतने चल आया जी । दो हाथ जोड़
धर प्रेम मात को शीश नवाया जी ॥ क्यों फिकर करो मुझ आत बात फरमावो, महा० करूं सब मनका चाया जी ॥ ज्याने भोग
छोड़ ॥ ६ ॥ तब माता रुक्मणी कही हकीकत सारी, महा० कुंवर यूं कहे मैं जाऊं जी ॥ जो है मामा को वचन वो हीं में पार
लगाऊं जी ॥ मुझ मामा की जो है वेदरवी कुंवरी, महा० परण कर निज घर आऊं जी सुण मात आपके लाय बिदणी पाय लगाऊं
जी ॥ कर विनय सर्व ही मन का सोच मिटाया महा० कुंवर अब करत चढाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ ७ ॥ एक शाम्ब कुंवर
श्री जाम्बवती का जाया, महा० जिन्हा से राह मिलाईजी । है खीर नीर सम वीर दोउन के प्रीत सवाईजी ॥ मिल सलाह करी यूं युगल
वीर की जोड़' महा० तुरत कुन्दनपुर आया जी विद्या के जोर से आप डूम का रूप बनाया जी ॥ केई घोड़ा ऊंट और साथे पाडा
धकरा, महा० बाग ले डेरा लगाया जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ ८ ॥ वहां दोनों भाई ऊठे आप मध्यराते, महा० वंशी और वीणा बजा-
वेजी । छः राग और छत्तीस रागिनी मिल कर गावेजी ॥ सुन राग कई जङ्गल का जीव लुभाना, महा० राग पसरयो पुर माई जी
सब राजादिक नर नार सुने एक धुन लगाई जी ॥ परभात हुआ तो सुख स्वशब्द उचारे, महा० राग में खूब रिझाया जी ॥ ज्याने
भोग छोड़ ॥ ९ ॥ वो चारों दिशि में फिरता राग अलापे, महा० कौन यह कहाँ पर गावे जी । बनमाय ढूंढता फिरे लोक पण भेद
न पावे जी ॥ इमकरता इक दिन कुन्दनपुर में आया, महा० फिरे सग लोग लुगाई जी । या सुनी बात नर नाथ डूम को लिया बुलाई
जी । दिया बैठा ज्ञान हाल भूप के आगे, महा० मनुष्य नहीं जाय गिनायो जी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ १० ॥ वा वेदरवी कुंवरी पिण

॥ ज्याने ॥ १५ ॥ कुवरी के पास दिन ऊँगत दासी आई, महा० अति मन अचरज पाई जी । परणे तुं वेश लख तुरत राय को बात जणाई जी ॥ सुनते ही दौड राजा राणी मिल आया, महा० मौन कुवरी कीनी जी ॥ रे वश लजावण हार ते भी चोखी गति कीनीजी ॥ तुझ कारण दुष्टन वचन डूम से हारा, महा०बहिन से वैर वसायाजी । ज्याने भोग छोड ॥ १५ ॥ कर कोप दूत को भेजा उपनन माही, महा० डूम को लिया बुलाईजी । निज पुत्री दीनी सौंप नहीं सोची दिलमाईजी॥ कुवरी को लेकर डूम वाग मे आया, महा० मोरनी पीछी जागीजी । मैं दी डूमड़ को सौंप बात आछी नहीं लागीजी ॥ पीछी लेवन को भूप वाग में आया, महा० डूम का पता न पायाजी ॥ ज्याने भोग० ॥१६॥ बैठा गम खाई भूपति बात विसारी, महा० कुवर तव तव फौज बनाईजी । दिया वनके बीच पडाव राय को बात जणाईजी ॥ सुन मामाजी मैं प्रजन कुवर चढ आया, महा० मुझे कुवरी परनावोजी । या करो युद्ध तो आओ सामने जोर जनावोजी । नरपति घबरायो या कैसी बनि आई, महा० करू, अब कोना उपायाजी ॥ ज्याने० १७॥ जो करू युद्ध तो वेर वसेगा दुगुणो महा० जोर जादव को पूरोजी । है कौन अधिक बलवान इन्द्रो से सूर सनूरोजी ॥ मैं प्रजन कुवर से जाय करू नरमाई, महा० बात जब रहे हमारीजी । यों करके खूब विचार आप झट हुआ तैयारो जी ॥ जब मामाजी को आता देख कुवर के, महा० हिये अति हर्ष भराया जी ॥ ज्याने भोग० ॥१८॥ मारग में कियो मिलाप हेत कर लीन्हो, महा० तुरत तम्बू में पेठाजी । मामाजी और भाणेज दोउ आसन पर बैठाजी ॥ इतने तो ऊठ वेदर वो कुवरी आई, महाराज, । तात को शीश निवायाजी । मिट गयो सकल जजाल प्रेम से वटे बधायोजी ॥ पुनि करी व्याह की रीति डायचो दीन्हो, महा० सीख ले कुवर सिधायाजी । ज्याने भोग छोड़ ॥१९॥ श्री प्रजन कुवर कर फतह द्वारिका आया, महा० कामण्यां कलश वधावेजी । घर घर में मगलाचार लोक मुख २ यश गावेजी ॥ निजामात तात को नमे कुवर कर जोडी, महा० कीर्नि पसरी पुरमाई जी । इन वोही वेदरवी परण मात के पॉव लगाई जो ॥ तब मात रुखमणि मगन हुई मन माही, महा० खुशी का पार न पायाजो ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥२०॥ निज भामणि सग में राज कुवर सुख भोगे, महा० करी मोजा मनमानीजी, फिर लीन्हा सयम भार सुनी जिनवर की वानीजी ॥ कर विनय अग द्वादश कठे कर लीना, महा० तपस्या खूब कमाईजी । था राज कुवर सुखमाल जिन्हो की यह अधिकाईजी ॥ जिन सोलह वर्ष का पूरण सयम पाला, महा० वास मुक्ति का पायाजी ॥ ज्याने भोग छोड़ ॥ २१॥ सवत्

हाल सुनाया जी ॥ तब तड़क फड़क कर महाराणी जी बोले, महा० विनय इतनी सुन लीजेजी । ये लोग उड़ावे बात आप नो चित्त
न दीजेजी ॥ यदि झूठ होय तो प्रत्यक्ष आज दिखाऊ, महा० ऊठ चल सग हमारी जी ॥ है तीन ॥६॥ तब जाम्वती जट उठ पति सग
चाली ॥ महा० हरिजी होगया आगे जी ॥ खुद बहुत वर्ष का बुड्ढा बाबा बन गया रागे जा। उस जाम्बवति को गूजरी आप
बनाई ॥ महा० वरस सोलह परमाणे जी इम किया वैक्रिय रूप लोग कोई भेद न जाणे जी ॥ तर्ज – राम सुन मोहनी मो नी ॥
हरिजी चालिया चालीया काई कंपित तास शरीर ॥ हरिजी ॥ टेर ॥ अति दीपती गूजरी, ज्यों इन्द्राणी अवतार ॥ हरिजी ॥१॥ दीसे
वेष सुहावणो, काई नेवर को झणकार ॥ हरिजी ॥ २ । माथा की सिर चूमरी, काँइ मटकी लीनी मेल ॥ हरिजी ॥ ३ ॥ लोक देख
हासी करे, काई जोड़ मिली परमाण ॥ हरिजी ॥ ४ ॥ गोविन्द क परवा नहीं, काई चाहता मध्य बाजार ॥ हरिजी ॥ ५ ॥ मिलाप ॥
दोउ फिरता २ राज द्वार पे आया ॥ महा० जावतया नीचे उतारी जी ॥ है तीन खड ॥ ७ ॥ लो दूध दही लो दूध दही यों बोले, महा०
कु वर सुन बाहिर आयाजी ॥ लख गूजरनी का रूप तुरत मन में मुरझाया जी ॥ कहे कु वर सुन तू गूजरनी बात हमारी, महाराज ।
नहीं हम लूट मचावाँजी ॥ तू चाल महल में दूध दही का भाव जचावाजी ॥ बुड्ढा बालम यों कहे यही पर लेला, महा० नहीं ना मरजी
तुम्हारी जी ॥ है तीन ॥ ८ ॥ मैं हू बुड्ढो या बालक वधू हमारी, महा अवस्था योवन थारी जी ॥ को जाने मन का बात नहीं पर
तीत तुम्हारी जी ॥ दोउ हाथ पकड कर खेंचा खेंच मचावे महा० झपट ले चाल्या मांही जी । अर मान मूढ मतिहीन एसी क्यों
करत अन्याई जी ॥ तब कृष्ण आप निज रूप प्रगट कर लीन्हा, महा० पुत्र से कहे लल कारी जी । हे तीन ॥ ९॥ रे लाज हीन तू देख
मात या तेरी , महा० कहाँ ले जाता आगी जी ॥ झट छोड मात को हाथ गयो महल में भागी जी ॥ तब कृष्ण और महाराणी जी
मिल दोनों, महा० आये निज भवन मुझारी जी ॥ देखो तब नन्दन एव बोल यू कहे गिरधारी जी ॥ तब, जाम्बवती कर जोड़
कत से बोली, महा० अभी बालक बुध ज्यारी जी ॥ है तीन खड ॥ १० ॥ फिर दूजे दिन गोपाल सिंहासन बैठा, महा० भरी थी
सभा रसीली जी । तिहा आया शाम्भकु वार, हाथ से घडता खीला जी ॥ कहा चीज बनाओ तात बात यू पूछे, महा० कु वर कहे
रोश भराई जी । ज्यों करे काल की बात, ठोकू उनका मुख माही जी ॥ कोपित हो गोविन्द देश निकाला दीन्हा, महा० कर्म गति
टारे न टारी जी ॥ है तीन खड ॥ ११ ॥ सुन पज्जन कु वर यह बात तात पै आया । महा० बहुत कान्ही नरमाई जी । ह मुझ बान्धव

कहे नयना जल वरसाई, महा मात सुन वान हमारी जी ॥ इस मृत्युलोक के माय, मैं हूं इक दुखनी नारी जो ॥ मैं विद्याधर राजा की वल्लभ कुंवरी, महा० यहा मामो लेई आवो जी ॥ सूती तरु तले भर नीन्द दुष्ट मुझ छोड सिधायाजी ॥ तर्ज —
है सुण मायडली, चिंता है वे परवाह जो, मात ने मैं छू वल्लभ डीकरी रे लो ॥ १ ॥ है सुण मायडली, चक्रवर्ती पाले राजजो, तिण थी अर्धराज छे म्हारा तात नेरे लो ॥ २ ॥ है सुण मायडली, वात सुणेगा मात जो, झुर झुर ने पिंजर ते होसी सहीरे लो ॥ ३ ॥ है सुण मायडली, यह मुझ बालक वयजो, भोलो ढालो कुछ समझू नही रेलो ॥ ४ ॥ है सुण मायडली, कौन करे मुझसार जो, सुख दुख की वात कौन मुझे पूछसीरेलो ॥ ५ ॥ है सुण मायडली, अब मुझ रहा बताव जो, गुण नहीं भुलू मैं जीवू जहाँ लगे रेलो ॥ ६ । मिलाप ॥ कहे सत्य भामाजी वाई रुदन मत कर तू, महा खुली तकदीर तुम्हारीजी ॥ है तीन खण्ड ॥ १७ ॥ सुभानू कुंवर मुझ पुत्र दीपतो भारी, महा० कहावे नन्द हरिकोजी, नन्याणु कुंवर्‍यां साथ ब्याव अब होसी नीकोजी, जो मन्न होय तो तू यो अवसर मत चूके, महा० मौज करजो मनमानी जी । सब कुंवरान्या केमाय तुझे करसूं पट रानी जी ॥ सुन मात वात पर मान करूं मैं थारी, महा० अरज इतनीक हमारी जी ॥ है तीन० ॥ १८ ॥ मैं भू चरतो लपना मैं कभी नहीं वछू महा० आज की वक्त विचारू जी ॥ मुझे हर्ष सहित ले चलो तो दिल में निश्चय धारु जी॥ फिर गज होदे तुम हाथे चमर ढुराऊ, महा० हुई खुश भामा रानीजी ॥ मोटे मडान वधाय तुरत नगरी में आनी जी ॥ अब बटे बधायाँ खूब शहर के माही, महा० करे महिमा नर नारीजी है तीन० ॥ १९ । अब सत् भामा जी विवाह कुंवर को रचियो, महा० द्रव्य खरचे दिल चायोजी । घुर रहे वाजिन्तर नाद लगन दिन नेडो आयो जी । तब गुणपणे कुंवरी ब्राहाण से बोले, महा० रीति कुल की नही छोडू जी ॥ मैं ऊपर रखूं हाथ तभी हथलेवो जोडू जी ॥ सुण भामा जी यूं कहे तुरत कुंवरी से, महा० रीति होय सो कर थारी जी ॥ है तीन ॥ २० ॥ तब कुंवरी अपना हाथ रखा ऊपर ही, महा० फिरे फेरा अब सोगेजो । निन्याणे कुंवरियां माय आप हुई सब के आगे जी॥ अति हर्ष सहित किया व्याह मात नन्दन का, महा० भवन दीनम् धकसाई जी ॥ सुभानू कुंवर की नार सभी मिल भितर आईजो ॥ तब प्रद्युम्न कुंवर तत्क्षण विद्या को सुमरी, महा० किया निज रूप तैयारीजी ॥ है तीन ॥ २१ ॥ अब शाम्भजी देव कुंवर जिम दीपे, महाराज सेज पर बैठा आईजी ॥ सब राण्या देखी रूप तुर्त मन में मुरझाई जी । चोतर्फ सेज के सर्व प्रेमदा बैठी, महा० खूली जिम केशर क्यारी । कर

मडा० वडी समतो दिल धारीजी, यह कपट भरा ससार खूब रहन. होशयारी
तुमनेजी ॥ यों वह बड़ करती गई महल के मांही, महा० सेजसुख विलस भारीजी ॥ है तीन० ॥२७॥ फिर नेमि जिनन्द की सुनी आपने
जी ॥ फिर शाम्मकुवर पच्चास अतेउर परनी, महा० सेजसुख विलस भारीजी ॥ है झूठा सब ससार, सार एक सयम जानाजी ॥ हरि का आज्ञा ले तुत भाग छिटकाया,
वाणी, महा० धर्म का मर्म पिछानाजी ॥ है झूठा सब ससार, सार एक सयम जानाजी ॥ कर अष्ट कर्म का अन्त सिद्ध प० पाया,
महा० सूत्र में वर्णव चालगोजी । श्री परजन कुवर की तरह आप शुद्ध सयम पाल्योजी ॥ कर अष्ट कर्म का अन्त सिद्ध प० पाया,
महा० काज सब लिया सुधारीजी ॥ है तीन ॥ २८ ॥ सवत् उन्नीसो पैंसठ चेत सुदि मा०, महा० तिथी एकमगुरुवारेजी ॥ यह जुगत
बनाई जोड 'ढालसागर' अनुसारेजी ॥ मेवाड देश गढ चित्रकोट सुखकारी महा० तीन मुनि विचरत आयाजी । वहा है श्रावक गुण-
वान मेरा दिल लगा सवायाजी ॥ श्री नन्दलालजी मुनि तणा शिष्य गावे, महा० गुरु मेरा है उपगारीजी है तीन खड का नाथ तात
जिनका गिरधारीजी ॥२६॥ सम्पूर्णम् ॥

दान की महिमा—(तर्ज – लगडी) अभयदान प्रभाव, भविकजन भव २ में सुख पावेगा । मुनिराज सुनावे वही नर ज्योति
में ज्योति समावेगा ॥टेर॥ पूर्व भव हस्ती के भव में एक जीव की करी दया । हुवे मेघ कुवरजी श्रेणिक राजा के घर आ जनम लिया।
योवनवय में आर कुवरजी, बहत्तर कला में प्रवीन भया । तब श्रेणिक राजा आठ कन्या का सग म० [illegible] किया । शेर—राज कुवर
सुकमाल हैं और चलते कुल की चालजी । सुख भोगने ससार का बीता है कितना कालजी ॥ पुण्य योग से उस नगर म छै काय के
प्रतिपालजी । समोसरे चौवीस में, जिन राज दीनदयालजी ॥छोटी कडी—हुई खबर शहर में, बहुत लोग हुलसाया । भला हुई नगर-
राजादिक बन्दन, मेघ कुवर भी आया । तब तीन लोक के नाथ जिनेश्वर राया, भला तब-प्रभु समोसरण के बीच उपदेश सुनाया ।
दोड़॥सुनो मेघ कुवार, जान्यो अथिर ससार । जिसने लिया सयम भार, काम सफल किया १ । किया उग्र विहार, बहु तारे नरनार,
खूब किया उपकार, जग यश लिया २ । सयम पाल के सुजान, गए विजय विमान बत्तीस सागर के प्रमान भोगे सुख निरा ३ छट्ट
अङ्ग के मझार, हैगा बहु विस्तार, सुन लेना नर नार, यहा सक्षेप दिया २ ॥ मिलाप—महा विदेह क्षेत्र में जन्म लेके, कर्मों का सोच
मिटावेगा ॥ मुनिराज सुनावे जिन्हों से ज्योति में ज्योति समावेगा ॥१॥ प्रथम देवलोक के अन्दर, शक्रेन्द्र ने किया बखान, मनुष्य
लोक में दयालू, मेघरथ जैसा नहीं इनसान । एक देवता ने यू सुनकर, दिल मे शका लीनी ठान । मैं जाय डिगाऊ उसी दम रूप वैक्रिय

किया मदान। मम ध्यान में लीन नृपति पोषधशाला बिधी। दृपता कबूतर को गिरा चरणी मे गोदी में रखी। नय पारधी कहने लागा, मुनिए श्री महाराजजी। म । मम भुख सीजिए, यह भूख से मरतायजी ॥ छोटी कड़ी—तब राय कहे मरणा आया नहीं पावे। माता तब—हरी इच्छा हो सो मांग, मीर मिल जाय तब कहे पारधी इस पै दया जो धावे। मता तब—ो इसके बराबर अपना मांस दिलाय॥ शेर—सुन क राजा ने यह बात तराजू मगवाय तरक ल, करके कुछ भी नहीं ख्याल, काया स्व हन कौ। इस प्रकार से जान मया दयालु राजान मुक्त करमा में ध्यान नहीं हरी हरि २। पीछे मधव्य राग धून प ज चित ला। गए सर्वार्थे सि द्ध मांग पूरा स्थिति कही २॥ वहां से चव करके ध्यान हस्तनापुर क दम्पत्त जिना विश्वमन लो जान अचला मातम। २। शांति नाम हुवा मरण मोक्ष शान्ति २ करतावेगा। मुनिराय सुनाय भ२१ यदुकुल भूषण समद्रविजय की, शिवादेवी हैं महारानी। अब जात ज ा फ, हुए हैं रिष्ट नमि जिनवर ज्ञानी। जूनागढ़ पर ब्याह करन श्रीकृष्णचन्द्र हैं अगवानी। पसी घगत धूम से वैन्य छवि जाता मन में हुलसानी ॥ शेर—नगर जूनागढ़ पति है उग्रसेन के द्वार जी। तोरण पर बन आवतां पशुगण की सुणी पुकार जी। पशु इकट्ठ यया किस कर नमिनो ऐस धार जी सुन सारथी न यू कहा तुम ब्याह हित सरदार जी ॥ छोटी कड़ी—यू सुन क नेमि प्रभु दिल में क विचारा। भला यू मुझ ब्याह निमित्त पशुओं का होय संहारा। फिर भूषण स्याग कर माओं को उस पारा। मज्ञा हित फिर सहस्र पुरुष संग प्रभुजी न संयम धारा। शेर—सुन क राजुलजी यह बात मुरझानी तत्काल फेर सुरत संभाल ऐसे प्रकार कहा २। बिन गुनाह भरतार मुझ छोड़ी निराधार, अब कौन का आधार, लेना संयम सही २ मन सातसो कुमारी निश्चय शिव में विचारी, लीना मुनिवृत धारी गिरनार प गई २। उत्तराध्ययन क मन्झार, इसा बहुत विस्तार दोनों किया खेवा पार, केवल ज्ञान लही २॥ मिलाप—रिष्ट नेमि राजुलजी का गुण कोई बन मन से गावगा। ३॥ सगाह २ सूत्रों क मझार बहुत किया जिनवर विस्तार, दया धर्म को धार कर, भवसागर से होगए पार, धम रुचि मुनि दया निमित्त, कडुवे तुम्बे का किया आहार, पर नाग सिरि पै जिन्होंने द्वेष भाव नहिं किया लगार। शेर—दया धम दिल धार क कर पार भविजन ध्यानजी। य प बुद्धि है मरी किन २ का यूं प्रमान जी। जीय रक्षा धर्म पर, जिसका हमेशा ध्यानजी। देव स्वर्गों क मुकें उसके चरण में ध्यान जी॥ छोटी कड़ी—जो ध्यान सभी जीवों की यतना कर। भला यूं हो भव सागर से जल्दी होगा तरना॥ मुनिराजों का नित शिक्षा दिल में धरना भला मनिराजो। जो जिन उपगी को पाइन हो तुम परना

दौड--ऐसी अरिहन्त वानी, जिस मे दया ही बखानी, जिनके चित में समानी, हुए भव पारी २। ऐसी लावनी बनाई, साल चौपन के माही, जीवागंज माही गाई, सुनो नर नारी २। नन्दलाल जी महाराज तरण तारण की जहाज, सारे आत्मा के काज, बड़े उपकारी२ हीरालाल जी महाराज, वाणी घन जिम गाज, ठाणा रात मे विराज, रहे यश धारी २॥ मिलाप॥ खूबचन्द और चोथमल कहै दया पाल तिर जावेगा। मुनिराज सुनावे इसी मे ज्योति मे ज्योति समावेगा॥ -शील की महिमा- तर्ज- पूर्ववत) शील रत्न का करो जतन, श्री जिनवर ऐसे फरमावे। श्री शील व्रत से, मन वछित सम्पति पावे॥ टेर॥ चम्पा नगरी सुभद्रा सेठ, धनदत्त बसे उस नगरी माय सुभद्रा नामा, कही जे एक पुत्रि वल्लभ सुखदाय। बालपने से जैन धर्म श्रावक के व्रत पाले चित लाय॥ मा बाप उसी को एक दिन मिथ्यात्वी घर दी परणाय॥ शेर॥ सती सुभद्रा ऊपरे सासू करे तकरार जी। जैन धर्म को छोड दे, शुचि धर्म ल तू धार जी। सुभद्रा कहे सासू सुनो, जिन धर्म है एक सार जी। सुख स सती रहती सदा, आगे सनो अधिकारी जी॥ छोटी कडी तिण अवसर जिनवर, जिन कल्पी मुनिराया, कृपा करके चम्पा नगरी में आया। चक्षु में वायु योगे फूस भराया। नैनो से झरता नीर शहर मे आया। ॥दौड॥ सती देख मुनिराय, हर्ष आया दिल माय मुनि वन्दे चित लाय, गुण ग्राम करे २। सती आख सामी देख, मन आया है विवेक, फूस काढ दिया देख, सासू शङ्क धरे २। वहु कुलक्षणी नार शर्म आई ना लगार। छू लिये अणगार, मिथ्या कलंक भरे २। सुभद्रा नित्यमेव, करे प्रभु जी की सेव, जिन्द शासन के देव, कैस शान्ति करे २॥ मिलाप॥ सुभद्रा सती का कलङ्क उतारन, देव अति मन हुलसावे। श्री शील व्रत से मन वांछित सम्पति पावे॥ १॥ चारों पोल चम्पा नगरी के, जड दीने सुर मन आनी। कइ लोक नगर के, आये खोलन को मिल राजा रानी। यह द्वार जब खुले देवता, यु बोले नभ से वानी सती काचा सूत से, चालनी बांध काढ छिटके पानी॥ शेर॥ नृप उपाय कीने वहुत, पर खुले नही वह द्वार जी। लोक आश्चर्य हो रहे, यह हुवा कोन विचार जी। नृप कराई घोषणा, मन २ पुरुष घ नार जी। द्वार खोले नगर के, वह सतियों में है सार जी। छोटी कडी॥ सुभद्रा सती सुन सासू म जा लावे। मैं करू यही प्रयत्न, द्वार खुलजावे। वहु कुलक्षणी तू नार, मुझे समझावे। फिर सती होन को जाय शर्म नही आवे॥ दौड॥ सती आई दिन वार, कच्चे सूत से उस वार। बाधी चालनी ततकार, जल काढ लिया २। सती गिना नमोकार जल छींटा है तिवार, चम्पा नगरी के द्वार, तिन खोल दिया २। वहु देख नर नार, खुशी हुवे है अपार, यह सतियों में सरदार, जग यश लिया २। सासू आई [illegible], नमी सती के चरणार

कलंक दिया है क्वार हृदय हुलस रमा २ ॥ मिलाप ॥ जयर शब्द सुर घोस गगन में पुष्प वृष्टि तिहां बरसाय ॥ श्री ॥ ३ ॥ राम चम्पूकी बहु पुन्यवन्ता शीलवन्ती वसु सीता नार । बनवास सिधार भाइ लक्ष्मण जी ना सजन थ ला । उसी समय त्रिखण्ड रहे राजा रावण आया तत्कार। रघुवर की नारी सती सीता का लगया लख मक्कार । टेर ॥ ग्यता सीता दिल बीच म सीता तियत गर भार जी । रघुवर बिन त्यांसवे मिस खांय, ता तू भहार जी । सती प्रति रावन कहे, मुझ ल पति सिर धार जी ॥ मन गनियों [illegible] बीच में कब्लू तुम्ह पटनार जी ॥ छोटी कड़ी ॥ बहु लाख पाल कर, रावन थिर हलवाय मन रघुवर बिन भुवन में नार नहीं [illegible] ॥ बड़ २ भूप मिल रावण को समझावे। सीता दा पीछी सौंप भात रह आय ॥ दोहा ॥ त्रिखण्ड राय, यान मानी पुछ नाय, हा मान में उलझाय समझे पुण नाहिं २ । रावण कहे विस धार, भाइ लक्ष्मण जाना लार, बने बन क म[illegible] फन मक आइ २ । पवन सुत हनुमान कहिए बड़ा पुन्यवान आए लंका के र र्यान विद्या बाग माहि २ । कहे माता से आवाज रामचन्द्र जी महाराज, सुख शान में हैं आप चिंता मिटवाई २ ॥ मिलाप ॥ रामचन्द्र जी क समाचार सुन ॥ सती भयी मन हर्षाय, श्री शासन मत स ॥ ३ ॥ जाता नां क समाच र लेकर हनुमान सिधाया है। श्री रामचन्द्र जी जिन्हों के पास तुरत ही आया है ॥ रामचन्द्र जी भ्रा लक्ष्मण जी हन कर कहि सुख पाया है। दल बादल लेकर, शीघ्र लङ्का गढ़ पर चढ़ आया है ॥ टेर ॥ रामचन्द्र जी आदिया, जिसका बहुत अधिकार जी। नगरी अयोध्या आगए, सीता को लेकर लार जी लोक शहर के यूं कहे, शील त्यागा सीता ना जी। शंका मिटान को सती, अग्नि प्रवेश करे दिल धार जी ॥ छोटी कड़ी ॥ दस स्नान कवी, अग्नि का कुण्ड भराया। नगरी क बहु नर न र दर्शन आया ॥ सती कहे राम मन, अपर पुरुष जो चाया । तो अग्नि कुण्ड क बीच भस्म हो काया ॥ दोहा ॥ ऐसा कहके ध्याल, सती पड़ा तत्काल, दुख आया नहीं आल, देखे नर नारी २ । सीता सती के गुण गान, कर रहे सब इन्सान, दश स्वर्गों से आन, जय कारी २ । शील सीवल कहत त्याग, जिन आवे हैं सब भाग, वहां मिलता है अथाग सम्पति भारी २ । जवाहरलाल जी महाराज तरण तारण जहाज, सार आतमा के काज, बड़े उपकारी २ ॥ मिलाप ॥ सूरजमल और चोथमल कहे शील सदा सुख प्रगटाय श्री शासन प्रभा में मन चरित सम्पति पाय ॥ ४ ॥ तपकी महिमा- (तर्ज—पूर्ववत) शासन पति र गमों क बीच तपस्या का महातम फरमाया, शुद्ध करके करनी, ग र कई स्वर्ग कई शिव पद पाया ॥ टेर ॥ सावत्थी नगरी के बाहर रहता एक स्कंधक सन्यासी। गृदभाली जी का है वो शिष्य धर पुराण

का 'अभ्यासी। पिङ्गल' निग्रन्थ श्रावक आकर, पांच प्रश्न कीने खाली। तब पड़ा भर्म में जवाब नहीं आया होगया उदासी ॥ शेर ॥ कयंगला के बाग में, जब समोसरे जिनराजजी, खन्दक जी सुन के चले, निज संशय मेटन काज जी। वीर कहे सुन गोयमा, तुझ मित्र मिलेगा आज जी, यों पूछे, गौतम वह लेगा संयम, यह बड़ी गरीब निवाज जी॥ छोटी कडी॥ हां संयम लेगा प्रभु मुख से फरमाया। इतने में खन्दकजी आके शीश नमाया॥ कहें मन की बात सब खोल जिनेश्वर गाया। प्रश्नों का किया खुलासा भर्म मिटाया ॥ झेला ॥ तब हितकर जी उपदेश जिनेश्वर दीना खन्दक जी संयम लीना। एकादश जी अंग भणी हुवा प्रवीना । रहे नित्य वैराग्य में भीना ॥ तब गो। जी गुण रत्न छमच्छर कीना, आदेश लेइ प्रभु जीना। बारा पडिमा जी करि शरीर सुकाई दीना, ले आज्ञा अनशन कीना॥ मिलाप—द्वादश में सुर लोक गये, भगवती में जिनवर फरमाया, शुभ करनी करके कई सुरलोक कई शिव पद पाया ॥ १ ॥ श्रेणिक नृप की दशमी भार्या, महासेण कृष्णा राणी। कोणिक राजा की छोटी माता है शास्त्रों से जानी॥ उसी समय में विचरत आये, महावीर केवल ज्ञानी। सती गई वन्दने, सुनी वैराग्य मई अमृत वाणी ॥ १ ॥ शेर॥ समवशरण के बीच में, यों कहे कर जोड जी। जनम मरण की आग में, पचने की यही ठौड़ जी॥ वैराग्य दिल लायके दिया मोह तावा तोड जी। कोणिक भूप महोत्सव किया, संयम लिया घर छोड जी॥ छोटी कडी॥ चन्दन बाला जी की हुई चेली गुणवन्ती। पढ गई इग्यारह अंग विनय नित्य करती। शुद्ध संयम पाय रहे पाप से डरती। गुरनी से पूछ वृद्ध मान आंबिल तप करती॥ झेला॥ एक आंबिल जी, एक वास दो आंबिल कर गई, अनुक्रमसे सौ तक बढ गई। बिच २ मे जो, एक २ वास करती गई, एक२ आंबिल बढती गई। वर्ष चौदह जी, तीन मास बीस दिन भर गई, तप करर काया गर गई। [illegible] अनशन जी, सब गरज जीव की सर गई, संसार समुद्र तर गई॥ मिलाप॥ सत्तरह वर्ष का संयम पाला, अन्तगढ शास्त्र ने दर्शाया शुद्ध करके करनी॥ २॥ आनन्द नामा गाथा पति रहे वाणिया ग्राम नगर मांही। श्री वीर जिनन्द की वाणी सुन, श्रावक व्रत लिया हुलसाई॥ एक दिवस करके विचार, घर सोंप दिया सुत ताई। पौषध शाला में आय, शुद्ध इग्यारह- पडिमा लो ठाई॥ शेर॥ तप कर [illegible] रहे, नहीं मन में ग्लानी जी। रक्त मास बहु सूख गया, शास्त्र से बहुत बयान जी। अवसर जान अनशन किया, और ध्यावे निर्मल [illegible] जी। शुभ भावना वर्तावता, उपज्या है अवधि ज्ञान जी॥ छोटी कडी॥ तिन अवसर विचरत, वीर जिनेश्वर आया। तसु शिष्य [illegible] अणगार महा मुनिराया॥ ले आज्ञा गौचरी करण शहर में आया॥ लोगों के मुख आनन्द की बात

ज्योति निरजन पावेगा ॥ १ ॥ चन्द्रगुप्त राजा जी के नन्दन, नाम जिन्हों का प्रश्नचन्द्र । वीर जिनन्द की वाणी सुन, जोग लिया तजिया सब फन्द ॥ राजग्रही नगरी तिण अवसर, विचरत आये वीर जिनन्द । लेकर आज्ञा वन मे, ध्यान धरा मुनि प्रश्नचन्द ॥ शेर ॥ सूर्य सन्मुख नेत्र करु, ऊचे किये दोर हाथ जी । ध्यान मे चित चल गया, लोगों की सुन कर बात जी ॥ जिनघर वन्दन कारने, तब निकला है नर नाथ जी । वन मे आते हुवे मुनी देखिया साक्षात जी ॥ छोटी कडी ॥ श्रेणिक नृप प्रभु जी को, वन्दे शीश नमाई । प्रश्न पूछा कर जोड, एक चित लाई ॥ वन माहि खडा एक मुनी ध्यान क मांही ॥ इस वक्त चवे तो कौन गति मे जाइ ॥ झेला ॥ त्रिसला नन्दन जी त्रसला नन्दन इम फरमावे, अब चवे तो सातवी जावे । तिहा मुनिवर जो तत्क्षण मन को सुलटाय, भर्म मिटा ध्यान शुद्ध आवे ॥ क्षण अन्तर जो फिर पूछया जिनन्द फरमावे, अबे चवे तो सर्वार्थसिद्धि जावे । श्रेणी चढताजी, तब केवल प्रगटा आई, सुर महोत्सव किया हुलसाई ॥ मिलाप प्रश्नचन्द मुनिराज मोक्ष गये, जिनका ध्यान लगावेगा ।चेतन सुन प्यारे, इसीसे ज्योति निरजन पावेगा ॥ २ ॥ धनदत्त सेठ का पुत कहिये, एलायची नामा कुमार, योवनवन्ती देख नटवी का रुप मोहा ततकार । आय महल में सोता एकन्त, बात कही नहि लावे बाहर, जब मात पिता ने पूछया कहो बेटा कौन विचार ॥ शेर ॥ नटवा ब्याहो मुझ भणी, यों पुत्र कहे सुणो तात जी । एक बात मानी नहीं, समझाया बहु भात जी ॥ नट के पास आयकर यो सेठ जी कहे बात जी, कन्या दे मुझ पुत्र को, बहु द्रव्य दू साक्षात जी ॥ ॥ छोटी कडी ॥ कहे नटवा सेठजी सुनिये बात हमारी, कन्या ब्याहूं तुम पुत्र रहे मुझ लारी । घर आय सेठ जी सुत से कहता हितकारी, नहि छोडी हठ जो ली मन मांहि विचारी ॥ ॥ झेला ॥ एक नगरी जो, नगरी मे नाचने आया, बासो पर खेल रचाया । एक मुनिवर जी एक तपस्वी महा मुनिराया, नगरा में गौचरी आया ॥ रुपवन्तीजी कइ तिरिया आहार वहरावे मुनि नीची नजर लगावे । नट चितवी अहो धिगर काम विकारा, धन जग में यह अणगारा ॥ ॥ मिलाप ॥ शुद्ध भावो से केवल पाया, यों कोई मोह छिटकावेगा सुन चेतन प्यारे, इसीसे ज्योति निरजन पावेगा ॥ ३ ॥ नगरी अयोध्या आदिनाथ महाराज पधारे दीन याल । माता मोरा देवी पुत्र से मिलन काज आई ततकाल ॥ आदेश्वर तूँ ध्यान खोल मुख बोल मुझे बतलाओ लाल । जिनवर नहि बोले मात जब चले पीछे फिर के ततकाल ॥ शेर ॥ हाथी के ऊपर बैठ कर आते थे शहर मझार जी । माजी तो यों मन चितवे झूठा सभी ससार जी । शुभ ध्यान से मोह कर्म का तत्क्षण किया सहार जी । भाव चारित शुद्ध कर, पाया है केवलसार जी ॥ छोटी कडो ॥ माजी मोक्ष देवो, उसही वक्त

शिव पामी, सूत्रों के बोल फर्माया सुधर्मा स्वामी। यों शुद्ध भावों से कई जीव मोक्ष में आवे, फिर२ का चक्कर नाम गार नहिं भावे ॥ मेला ॥ उगनी से को उगनी से वपन सुन भाइ। फागन वदि चोदस भाई। दिन दिवसे श्री तिथ दिवस ओह बनाइ मैं नेत भमा मे गाइ ॥ मोटा मुनिवर श्री कहूं मास देव जी आइरो। चौदह ठाणा परिवारो, गुरु चन्द्र जो श्री जवाहर लाल श्री भणगारो। मुक्त शरणों वसु चरणा रो। सूरजचन्द और चौथमल कहे सुख मिले भाव शुद्ध भावेगा सुन चेतन प्यारे, इसी से ज्योति निरंजन पावेगा ॥ ४ ॥

परदेशी राजा का चरित्र वर्ज लगरी—केशी कुंवर महाराज समस्त भवसागर से तिरन वाले, मुनि भान ज्ञान के, आप अज्ञान तिमिर हरने वाले ॥ टेर ॥ पारर्श्वनाथ महाराज गये शिव धाम नाम जयकारी है ॥ जिनके शासन में हुये मुनि आप बड़ गुणधारी है। चार ज्ञान चवदे पूर्वी अप्रति बंध विहारी है। दया क्षमा सम भावी दया निधि पूरण पर उपकारी है ॥शेर॥ सावत्थी का बाग में आये विचरत महाराज जी। मुनि आगमन सुन वंदना कर आरहे इन्सान जी ॥ परदेशी राजा का है चित्तनामा परधान जी भेजा हुआ आया यहां, राजा के घर महमान जी ॥ कड़ी ॥ इसने भी सुनी यह बात मन हुलसाया। बैठ रथ में मुनिराज समीपे आया। फिर मीठा देय गुरु ऐसा ज्ञान सुनाया। खुल गये जिगर के नैन प्रेम रंग छाया ॥ द्राण ॥ अब धार चित्त जी हुआ भावक सेंठा। महाराज विनय कर शीश नमाय जी। रथ मांही बैठ कर आप श्वेता नगरी में आया जी। राजा की तरफ से मिली भीम चित्तजी को। महाराज दिये अति हर्ष भराया जी। मुनिराज दर्शन के काज बाग में चल कर आया जी ॥ शेर ॥ करके वंदना चित्त प, चित्तजी बोले यूं साफ, नगरी सोक्षत का आप कभी करज्यो मया। अर्ज कबुल कराय, वहां से तुरत सिधाय, नगरी सिवत का आय हाल भूप को कया ॥ मिलाम ॥ कब आवे मरे गुरु यहां सब सब कारज सरने वाले ॥ मुनि १ ॥ सावत्थी नगरी से दया निधि सीतव का नगरी आया। उपकार जान के, पांच से संतो को सग में लाया। चित्त प्रधान सुनि मुनि आगमन अति चैन चित्त में पाया। परदेशी भूप को क ी उजबाज़ यहां सुन्दर आया ॥ शेर—राजा और प्रधान दोनों, अश्व खिपा कर धार जी। इधर उधर देखावता, आया नज़र अणगार जी ॥ सुण चित्त यह जड़ मूढ़, कौन है बेकार जी। धेन वो मीठा लगी है दीपता दीदार जी ॥ कड़ी ॥ यह चतुर चित्त यू कहे सुनो महाराया। यह केशी कुंवर महाराज मैं भी सुन पाया। यह भवग भवग वो माने आव और काया। है पूरण ज्ञान मसकार तमी मोह माया ॥ गेय ॥ इतनी सुनके भूप चित्त थी से रहा पूछी। महाराज मुनि पा दोऊ मिल आया जी। है अवधि ज्ञान तुम पास पूछे परदेशी राया जी। क्यों वायु और

थनिया उपट राई पूछे । महाराज, मुनि दृष्टान्त सुनाया जी । तैने मंत्री का अपराध किया नहीं शीश नवायो जी ॥ दौड ॥ सुन कर सतो के वेन, नृप किया नीचे नैन, मेरे असल में सेन, जब कठीन कही २ । राजा बोले यो सित।ब, क्षमा वत साधु आप, गुन्हा कीजे सर्व माफ, मेरो भूल रही २ । थोडी वखत के काज, यहा बैठू मैं आज, मरजी होय तो महाराज, दीजे हुकम सही २ । जरा समझ राजान यह तो तेरा ही आराम, हमनों साधु है मशान, करें मना नहीं २ ॥ मिलाप ॥ राजा मन में जान गया ये मुझे निहाल करने वाले ॥ मुनि २ ॥ बैठा भूप पूछे कर जोड़ी क्या मानों तुम करो मया । तब भरी सभा में मुनीश्वर जीव अरु काया अलग कह्या । मेरा दादा था अति पापी नहीं थी उनके जरा दया । वह आयुष्य करके तुम्हारो कहेन मुजब तो नर्क गया ॥ शेर ॥ मैं पोता अति प्राण प्यारा, कहे मुझे वह आय जी । तो जीव काया है अलेदो, मान तो तुम वाय जी ॥ मधुर बैन मुनिवर कहे; सुन ध्यान धरके रायजी तेरा दादा नर्क से, कैसे सके वह आय जी ॥ऊड़ी॥ तेरी सूरी कता नार करके सिणगारा । अन्य पुरुषके साथे विलसे सुख ससारा । तेने खुद आंखोसे देख लिया कर्म सारा । सच बोल उसे क्या देवे दण्ड भूपारा॥द्रोण॥तत्काल खडग निकाल उसेमैं मारू । महा राज करे तुमसे नरमाईजी । मत मारो महाराज करू ऐसा कभी नाईजी । क्यो कहो हरगिज कभी न छोड़ू । महाराज फिर कहे तर्क उठाईजी । मैं मील्‌ कुटम्ब से जाय आऊं पीछे दण्ड मांडी जी ॥ दौड ॥ राजा कहे यू विचार, मेराहै वह गुन्हे गार, मैं तो छोडूं नहीं लगार, कैसे घर जाव २ । इसी भव में साक्षात, उसके कुटुम्ब के साथ, दु'ख आराम की बात, किम दरसावे २ । तेरा दादा कहूँ साफ, करके अष्टादश पाप, गया नरक में आप, यहा किम आवे २ । जीव काया न्यारी मान, राजा तू है विद्धवान, झूठी टेक मतीतान मुनि फरमावे २ ॥ मिलाप ॥ नहीं मानु महाराज तुमनो बुद्धि से कथन करने वाले ॥ मुनि ३ ॥ मेरी दादी थी गुणवन्ती दया धर्म से हटी नही । करी बहुत तपस्या तुम्हारी कहने मुजब सुरलोक गई । उनको कौन रोकने वाला वह अपने आधीन रही । मैं था अति प्यारा आज दिन तक नहीं मुझसे आन कही ॥ शेर ॥ दादी आ वर्णन करती सुर लोक का बयान जी ॥ तो जीव काया है अलेदा लेतो क्यो नहीं मान जी ॥ भूप कहे इस न्याय में, मेरा है मत परमान जी । कीजे खुलासा बात का, बैठे हैं सब इन्सान जी ॥ खडो॥ इतनी सुन कर मुनिराज नजीर सुनावे, कर स्नान राजा तू देव पूजवा जावे । एक पुरुष देख तारछ में तुजे बुलावे । सच बोल वहा तू जावे के नहीं जावे ॥ द्रोण ॥ नर नाथ कहे जानातो दूर रहने दो । महाराज, उधर देखु भी नाई जी । वह महा असूची स्थान

राजा। पर इ क्या योग आप को ऐसा वचन फरमाना ॥ दोहा ॥ तू जाण नृप सच बोल परिषदा कितनी। महाराज, परिषदा चार बताइ जी। अब अलग अलग सब नीति चारों को दे दरसाई जी। जो कोई मनुष्य अपराध करे राजा का। महाराज, देव उसे सूली चढ़ा" जी। कर वैश्य जाति के बाहर सहाय दे छाप लगाई जी ॥ दौड़ ॥ ऋषियों की सभा माय कोई चार करे आय, चार लिपि चले नाय दैना दुख दिया २। चारा साधु को आय, अड मूड फरमाय, वैह तो यही दण्ड पाय, कहूँ साफ इहा २। पस नीति की सभाक नृ भी याम दस। यास वय मैंने भी महिपाल,यही दण्ड दिया २। तुम सुणो हो कृपाल जो था पहलाही सवाल,उस पै देने से मिसाल,मैं तो समझ गया ॥ मिलाप ॥ ऐसा इतना हट करी पूछे मुनि शिव सुख के वरने वाले ॥ मुनि ८ ॥ ऐमाना किक के कांव आज महाराज भरन कीया विगारी ॥ मुनि पूछे नृप से होले कहो कितनी किसम के व्यापारी। चार तरह क हाव वणिक गगने बाव दुनिया सारी। ले माल उधारा दाम देना फिर उनके इक स्यारी ॥ शेर ॥ देवे गुण बोलें नहीं गुण बोल देवे नाय जी। दवें और गुण भी करे, नहीं देवे शठ भिड जावजी। तीन योग्य व्यवहारिस। अयोग्य एक कहे वाय जी। मैं भी जाणु हे नृप तू चौथे सरीखा माय जी ॥ कड़ी ॥ विड न पुरुष तुम माहि बहुत चतुराई क्यों क्यों कर के देवे हो युक्ति जमाई। नवमा प्रश्न नृप करे सभा के माह। है कैसा जीव तुम देवो अपना दर्शाई ॥ त्राण ॥ मुनिराज कहे सुण नृपति इस दरखत का। महाराज, पत्र कहो कोन हिलावे जी नहीं देवाधिक महाराज पवन इनको कपावजी। पण पवन चीज सब बोल नृप तू देवे। महाराज, नेजर वह तो नहीं आवे जी। तो जीव अरूपी चीज कहो हम कैसे दरसावेजी ॥ दौड़ ॥ अरे अब तो छोड़ तान, राजा तू है बुधिवान जीव काया न्यारी मान बहुत देर भई २। प्रश्न करे फिर राय, हाथी कुथुवा के मांय, जीव सम, वा नाय, मुझ कहो ज वह २। निरंजन समझ तू राय, हाथी कुथवा क माय, जीव सरीखा नाय, कोई फर्क नहि २। मोटी चीज मुनिराज कैसे छोटी में समाय, कहो नजीर लगाय मिटे मर्म सह ॥ मिलाप ॥ दी नजीर दीपक भाजन की न्याय पंथ चलने वाले ॥ मुनि ६ ॥ अबतो मान जीव और काया क्यू इतनी तू अकलावे। तब बोला नरपति पुराणी मथा नहीं छोड़ी जाय। लोह बनिया की तरह यार रत्न मरे न र। तू पछताय। मुनिमार्ग सुनाई छोड़े मिथ्या मथा क्यों शरमावे ॥ शेर ॥ लोह बनिया कैसा हुवा, तुम कहो मुझे समझाया जी। तब मुनि कहे यह भी सुन ले एक ध्यान धर कर राय जी। धनार्थी बहु वाणिया जाता था जंगल माय जी। एक खान देखी लोह की, लोना है सबन उठाय जी ॥ कड़ी ॥ आगे आता तांबा की खानि नजर आई। ॥ लिया सबे सब छोड़ दिया छिटकाई।

था नके अनाडी उसने मानी नहीं । करदिया दृष्टि सब लोक रया सेमझाई ॥ द्रोण ॥ रूपे की खान, सोने की फिर रत्नों की । महाराज
वज्र हीरां को आई जी । ले लिया अधिक से अधिक तजा सस्ते कु बहाई जी । सब लोक कहै ले ले तू भी क्या देखे । महाराज, मूढ
हट छोडे नाहें जी । मैं बहुत दूर का लिया भार किम दू छिटकाई जी ॥ दौड़ ॥ ले ले के धन्न माल, अति होके खुशाल, घर आये सब
था ा, अति सुख पावें उस मूर्ख की बात, अबे सुनो नर नाथ, लिया लोहे कु साथ, भैचन जावे २ । सीधा बाजार में आया, बेचा लोहा
जो लाया, मूल्य थोडासा आया, मन पछतावे २ । दीनी मैंने जे मिसाल, ऐसा तू है महिपाल लीजो अब ही सभाल,. मुनि फरमावे २ ।
॥ मिलाप ॥ साफ साफ मुनिराज कही राजा से नहीं डरने वाले ॥ मुनि १० ॥ नहीं बनू लोह बनि । जैसा कहै नृप यो कर जोडी
मन वच काया से मैंने तो मिथ्या श्रद्धा छोडी छोडी । मान लिया जीवादिक मैंने बहुत करी लम्बी चौडी । दिल में बहुत मतवाला क्यों
कि महाराज मेरे में बुद्धि थोडी ॥ शैर ॥ अब मुझ को धर्म देशना, फरमावो कृपानाथ जी । वैराग, रग ऐसा चढे उतर नहीं दिन रात
जी ॥ मधुर कथा मुनिवर कही, तब जोडो दोनो हाथ जी । श्रद्धा बचन मैंने आपका, यूं बिनवे नरनाथ जी ॥ खडी ॥ वे धन्य पुरुष जो
राज्य को त्यागे । एसे तो भाग नहो है महाराज हमारे । मुझे श्रावक का व्रत दीजे कीजे भव पारे । बिन ऐसे गुरु के कौन करे निस्तारे
॥ द्रोण ॥ तब मुनिराज महिपति को व्रत धराया । महाराज, बहुत उपकार कमाया जो । गया निज स्थान क महिपाल, खुशी का पार न
पायाजी । फिर दूजे दिन बहु विधि सजकर असवारी । महाराज, महिपति वन्दन आयाजी । कर जोड नमाकर शोप सभी अपराध
खमाया जी ॥ दौड ॥ राजा सुन ले एक सीख, मत होजे अरमणीक, अरे पाल जे तू ठीक, व्रत नेम लिया २ । मेरा जितना है राज, उस
राज, के महाराज, कुल चार हिस्से आज, मैंने किया किया २ । तज —गुरु निर्ग्रन्थ नहीं जोया तेते गुरु निर्ग्रन्थ नहीं जोया रे)
गुरु जी मिले मुझ ज्ञानी पुण्य से ॥ टेर ॥ कर जोडी राजा परदेशी इस विध बोले वाणी रे । मोह नींद से आप जगायो छिटक ज्ञान को
पाणी रे ॥ गुरु जी १ ॥ मेट दियो अज्ञान अन्धेरो, दे शिक्षा हित आनी रे । मैं उपकार कभी नहीं भूलू निश्चय लीजो जानी रे ॥ गुरु जी
२ ॥ दया करी फिर दर्शन दीजो, मिष्ट सुनाजो वानी रे । भव दुःख से मुझ आप छुडाजो, भक्त आप को जानी रे ॥ गुरु जी ३ ॥ दो
ठाणा मिल आया रोहतक से अर्ज भाया की मानी रे । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे जोड बनाई कानी रे ॥ गुरु जी ४ ॥ चोथे हिस्से
का आदान, दुःखी दुर्बल गिलान, ताकूं दूगा मैं दान, करूं प्रगट हयां २ । पाये सुख अपार, करके बहु उपकार लेकर सतो को लार

ले मान जीव और काय। । महाराज, भूप कहै शीष हीलाई जी । तुम बुद्धिवान महाराज, मानु मैं हरगीज नाई जी । जितना लोहे का भार तक्षण लेजावे महाराज धरी कावड क माइ जी । उतनी ही, दूर अति वृद्ध क्यों न लेजाए उठाई जी ॥ दौड़ ॥ जो मह नात मिलती महान, जीव काया लेता मान, इतनी करने से तान, मेरे गरज कही २ कावड नवी हो वो राय, लोहा धरके उस माय, तरुण पुरुष उठाय, लेकर जाय या नहीं २। नृप कहै हाँ ले जाय, फिर बोले मुनिराय, कावड जीरण हो तो राय, अब बोल सही २ नहीं नहीं कृपाल कावड जीरण दयाल, मुनि जीव पे मिसाल, उतार दई २ ॥ मिलाप ॥ नहीं मानु महाराज तुमतो बुद्धि से कथन करने वाले ॥ मुनि ६ ॥ पहले तोल त्राजू में चोर कू मारा खून निकला भी नहीं । विया प्रश्न सारथा फिर तोला तो वजन में आया नही । कमती होता जरा वजन में तो मैं लेता मान सही । फिर तर्क उठा के शतोसे कू ठीतान करता भी नहीं ॥ शेर ॥ हवा भरी चर्म दीवडी, देखी कभी थे राय जी । हां हा देखी स्वामी जी, कृपा करी फरमाय जी पहले तोल यथ खोल दे, नहीं रहे हवा न्म माय जी ॥ फिर तोले तो वजन में कमती हुवे या नायजी ॥ खड़ी ॥ वह वजन माय कमती तो हुवे कछु नाही । बस यही न्याय तू समझ नृप मन माही, जो रूपी हवा नहीं देवे भार दर्शाई । तो जीव अरूपी ये क्या वजन गीनाई ॥ द्रोण ॥ क्यों करे तान ले मान जीव और काया । महाराज, भूप कहै शीष हिलाई जी । तुम बुद्धिवान महाराज मानु मै हरगीज नाई जी । एक मारा चोर तत्काल बहुत खण्ड करके । महाराज, जीव फिर देखा नांई जी । जो आता नजर तो लेता मान हट करता नाई जी ॥ दौड ॥ मुनि कहै यो विचार, राजा तू तो है गवार, जैसा था वो कठियार, काई फर्क नहीं २। कठियारा, किस न्याय, मुजे कहो मुनिराय, आप दीजे फरमाय, मिटे भरम सही २। मिलकर बहु कठियार, गया वन के मझार, उसमे था एक गवार, उसको एसे कही २। इस अरणी मे तत्कार, लीजे अग्नि निकार, करजे रसोई तैयार, आवा इन्धन लही २ ॥ मिलाप ॥ वो मूर्ख अरणी को कापी खंड खंड में अग्नि भाले ॥ मुनि ७ ॥ नहीं मीली अरणी में अग्नि सोच करे आशूं डारे । इन्धन ले ले कर आए जगल से वे सब कठियारे । पूछी बात मूर्ख से नयतो वितक हाल कह्या सारे । अरणी को घीस के बताई अग्नि काढ कर तत्कारे ॥ शेर ॥ अहार कर फिर इन्धन लेकर, गये वे नगरी माय जी । जैसा काम उसन किया, वैसा करा थे राय जी ॥ छती अग्नि अरणी माही, नहीं आवे नजर राय जी । जीव काया है अलेदी, मानलो इस न्याय जी ॥ खडी ॥ प्रतिष्टि पुरुष तुम होकर सत सयाणा । इन वहुत मनुष्य का हुवा यहां पर आना । जड मूढ कहा सो मुझे तो है गम

जाना। पर है क्या योग आप को ऐसा वचन फरमाना ॥ दोहा ॥ तू जाण नृप सब बोल परिपदा दिखाती। महाराज परिपदा चार बताइ जी। सब अलग अलग ढंग नीति चारों को दे दरशाइ जी। जो कोई मनुष्य अपराध करे राजा का। महाराज, देव उसे सूली चढाई जी। करे वैश्य जाति के बाहर ब्राह्मण दे छाप लगाई जी ॥ दौड़ ॥ क्षत्रियों की सभा माय कोई चार कर आय, बाल सिधि चले साथ तैना दुष्ट किया २। बोला साधु को आय, यह मूढ फरमाय, यह तो यही न्याय पाय, कहूँ साफ हां २। पस नीति को संभाल तू भी पास टहा पास,सब मैंने भी सन्निपात,यही न्याय दिया २। तुम सुखो हो कृपाल जो या पहला ही सवाल,उस पै वने से मिसाल,मैं तो समझ गया २॥ मिलाप ॥ क्यों इतना हठ करी पूछ मुनि शिव सुख के बरजे बाले ॥ मुनि ८॥ ग्याना रिक के काज आज महाराज प्रश्न कीना विस्तारी ॥ मुनि पूंछे नृप से होत कहो कितनी किसम क व्यापारी। चार तरह क होत वणिक गगन बास मुनियों सारी। ले माल उधारा दाम देना फिर उनके इक स्वारी ॥ शेर ॥ देवे गुण नोलें नहीं गुण बोल देवे नाम जी। दूजे और गुण भी कर, नहीं दव शठ शिव कायजी। तीन बोल व्यवहारिये। मनोस्य एक कहे बाय जी। मैं भी जाणु हूं नृप तू चौथे मरीखा माय जी ॥ दूजी ॥ विद म पुरुष तुम मांही बहुत चतुराई क्यों त्यों कर के देवे हो युक्ति जमाई। नवमां प्रश्न नृप करे सभा क मांह। है कैसा जीव तुम देखो अपना दर्शाइ ॥ दोहा ॥ मुनिराजे कहे सुख नृपति इस दरखत का। महाराज, पत्र कहो कौन हिलावें जी नहीं देवाधिक महाराज पवन इन को कंपावजी। क्या पवनें चीज सब बोल नृप तू देखे। महाराज, नजर वह तो नहीं आवे जी। वो जीव अरूपी चीज कहो हम कैसे दिखावजी ॥ दौड़ ॥ अरे अब तो बोल यान, राजा तू है बुद्धिमान जीव काया न्यारी मान बहुत देर मई २। प्रश्न करे फिर राय, हाथी कुथुवा के मांय, जीव समई या नाय, मुझे कही ज बई २। निश्चय समझ तू राय हाथी कुथवा क माय, जीव सरीखा माय, कोई फर्क नइ २। मोटी चीज मुनिराय कैसे छोटी में समाय, कहो नजीर बताय मिटे भर्म सई ॥ मिलाप ॥ दी नजीर दीपक भोजन की न्याय पंथ बतन बाल ॥ मुनि १ ॥ अब तो मान जीव और काया क्यूं इतनी तू कड़वाव। सब बोला नरपति पुराणी श्रद्धा नहीं छोड़ी जाय। लोह बनिया की तरह वाद रस करे नृ र तू पछताये। मुनिमार्ग सुनाइ छोड़े मिथ्या श्रद्धा क्यों शरमाय ॥ शेर ॥ लोह बनिया कैसा हुवा, तुम कहो मुझे समझाया जी। तब मुनि कहे वह भी सुन ले एक ध्यान धर कर राय जी। धनार्थी बहुवाणिया जाता था जंगल माय जी। एक खान देखी लोहे की, लोभा है संघन ठौर जी ॥ दूजी ॥ भाग जाग लोहा की खान जब पाई। ले लिया सबै सब लोह लिया सिटकाई।

करदि या दृष्टि सब लोक र्या समझाई ॥ द्रोण ॥ रूपे की खान, सोने की फिर रत्नों की । महाराज
था एक अनाड़ी उसने मानी नहीं । करदि या दृष्टि सब लोक कहे ले ले तू भी क्या देखे । महाराज, मूढ
चन ही । का आऊं जी । ले लिया अधिक से अधिक तजा सस्ते कु बहाऊ जी । सब लोक कहे ले ले तू भी क्या देखे । महाराज, मूढ
हट छोडे नाई जी मैं बहुत दूर का लिया भार किम दू छिटकाई जो ॥ दौड ॥ ले ले के धन माल, अति होके खुशाल, घर आये सब
नार, अति सुख पावें उस मूर्ख की बात, अब सुनो नर नाथ, लिया लोहे कु साथ, बैचन जावे २ । सीधा बाजार में आया, बेचा लोहा
जो लाया, मूर्ख थोडासा आया, मन पछतावे २ । दीनी मैंने जो मिसाल, ऐसा तू है महिपाल लीजो अब ही सभाल, मुनि फरमावे २ ।
॥ मिलाप ॥ साफ साफ मुनिराज कही राजा से नहीं डरने वाले ॥ मुनि १० ॥ नहीं बनू लोह वनि । जैसा कहे नृप यो कर जोडी
मन वच काया से मैंने तो मिथ्या श्रद्धा जोडी छोडी । मान लिया जीवादिक मैंने बहुत करी लम्बी चौडी । दिल में बहुत मतलाना क्यों
कि महाराज मेरे मन बुद्धि थोडी ॥ शैर ॥ अब मुझ को धर्म देशना, फरमावो कृपानाथ जी । वैराग रंग ऐसा चढे उतरे नहीं दिन रात
जी ॥ मधुर कथा मुनिवर कही, तब जोडी दोनो हाथ जी । श्रद्धा वचन मैंने आपका, यूं बिनवे नरनाथ जी ॥ खडी ॥ वे धन्य पुरुष जो
संसार का भार वारे । तुम तो नाथ नहीं है महाराज हमारे । मुझे श्रावक का व्रत दीजे कीजे भव पारे । बिन ऐसे गुरु के कौन करे निस्तारे
॥ द्रोण ॥ तब मुनिराज महिपति को व्रत वराया । महाराज, बहुत उपकार कमाया जो । गया निज स्थान के महिपाल, खुशी का पार न
पाराजी । फिर दूजे दिन बहु विधि से नगर असवारी । महाराज, महिपति वन्दन आयाजी । कर जोड नमाकर शीष सभी अपराध
खमाया जी ॥ दौड ॥ राजा सुन ले एक सीख, मत होजे अरमणीक, अरे पाल जे तू ठीक, व्रत नेम लिया २ । मेरा जितना है राज, उस
राज, के महाराज, कुल चार हिस्से आज, मैंने किया किया २ । तर्ज —गुरु निर्ग्रन्थ नहीं जोया तेते गुरु निर्ग्रन्थ नहीं जोया रे)
गुरु जी मिले मुझ ज्ञानी पुण्य से ॥ टेर ॥ कर जोडी राजा परदेशी इस विध बोले वाणी रे । मोह नींद से आप जगायो छिटक ज्ञान को
पाणी रे ॥ गुरु जी १ ॥ मेट दियो अज्ञान अन्धेरो, दे शिक्षा हित आनी रे । मैं उपकार कभी नहीं भूलू निश्चय लीजो जानो रे ॥ गुरु जी
२ ॥ दया करो फिर दर्शन दीजो, मिष्ट सुनाजो वानी रे । भव दुख से मुझ आप छुड़ाजो, भक्त आप को जानी रे ॥ गुरु जी ३ ॥ दो
ठाणा मिल आया रोहतक से अर्ज भाया की मानी रे । मुनि नन्दलाल तणा शिष्य गावे जोड बनाई कानी रे ॥ गुरु जी ४ ॥ चौथे हिस्से
का आगान, दु खी दुर्बल गिलवान, ताकू दूंगा मैं दान, करूं प्रगट इयां २ । पाये सुख अपार, करके बहु उपकार लेकर संतो को लार

॥ चतुर ९ ॥ ते कहे तुम हीज ऊठने जी, क्यों नहीं देवो पिलाय। किण किण ने पाया करू जी, कई आवे कई जाय ॥ चतुर १० ॥ बावली मान मेरो कह्यो जी, हठ मत कर इण बार। तुझे टका एक एक नी जी बात सुणाव सु चार ॥चतुर॥११॥ तब तो उठ उतावली जी दीनो उदक पिलाय। अब कहो चारो बातडी जी, नृप ही सुण चित लाय ॥ चतुर ॥ १२ ॥ १ नारो रकर्वे अति पीहर मे जी, २ पर को सौपे निज काम। ३ निर्दय की करे नौकरी जी, ४ धूर्त के वरियो दाम ॥ च० १३ ॥ चारो ही काम अयोग्य छे जी, इण में सशय नाय। ऋषियो के मुह साभल्यो जी, आखिर ते पछताय ॥ च० १४ ॥ फट पट उठ्यो भूपति जी, अश्व हुवो असवार। निज नगरी मे आवियो जी, हर्षो सहु परिवार ॥ च० ५ ॥ चट पट लागी चित्त में जी, खुद ससुराल में जाय। राणी की परीचा करू जी भर्म सहु मिट जाय ॥ च० १६ ॥ तुरत बुलाय दीवान ने जी, राज को काज भोलाय। प्रजा की करजो पालना जी, निरपक्ष लेकर न्याय ॥ च० १७ ॥ बात किसी करजो मती जी, जाऊ छू मैं ससुराल। मास दो मास के अतरे जी, शीघ्र ही आऊ चाल ॥ च० १८ ॥ मोहरा लीनी डोढसो जा, फिर लीनी पच लाल। ब्राह्मण रूप बनायने जी, पहुँच्यो ते सुसराल ॥ च० १९ ॥ ब्राह्मणी के घर ठेरियो जी, आठो ही पहर निवास मोहरा भी थापण रखी जी जाण अति विश्वास ॥ च० २० ॥ नौकरी काजे फिर रह्यो जी, व रनो बहु। तलास। फिरता फिरता आवियो जी, राय का रत्नक पास ॥ च० २१ ॥ इहां करो तुम नोकरी जी, करली खुलासा बात। पाच रुपये माहवार के जी, जीमो रसोडे भात च० २२ ॥ हुक्को पाणी पिलावणो जी, मौज करो दिन रात। कर मजुरी रहगयो जी, श्रोता सुणो आगे बात ॥ च० २३ ॥ राणी इण हिज रागनी जी, रत्नक घर हर वार आवे जावे रामन करे जी, अनुचित भी व्यहार ॥च० २४॥ रे निर्लज्ज कुलक्षणी जी भूल गई कुल जात। अब मुझ को निश्चय हुवो जी, जाट कही सच बात ॥ च० २५ ॥ छिण छिण साम्हे देखली जी, राणी जी नजर पसार। अनुमाने करी ओलख्यो जी, या तो मुझ भरतार ॥ च० २६ ॥ रोष भरी कुलटा कहे जी, नौकर की बद नीत। छिद्र रहे नित देखतो जी, तुम को करसी फजीत ॥ च० २७ ॥ मूल थी एह हणा दियेजी, तब मुझ मन सतोप। नहीं तो मुझ हत्या तणो जी, तुम सिर होगा दोप ॥ च० २८ ॥ शीघ्र गो भाग बुलावने जी, भृत्य दियो पकडाय। प्राण घात इण की करो जी, जगल माय लेजाय ॥ च०२९॥ किहा ले जावो मुझ भणी जी, पूछै तब महिपाल। ले जावा तुझ मारवा जी, हुकम दियो कोटवाल ॥ च० ३० ॥ मत मारो करुणा करो जी, तुम आवो मुझ लार। मोहरा देऊ डेढसो जी, मुझ छोडो इणवार ॥ च० ३१ ॥ सब मिल आवे पथ में जो, मन सोचे नर नाथ। निर्दय की बुरी नौकरी

मोहरा मांगी थी आय । मालिक को दंड आपणा जी, ले सू प्राण बचाय ॥ च० ५८ ॥ तीनों को जेल धराविया जी, फेर होगा सब न्याय ! मन्त्री आय सँभाल । निर्दय होय दगो दियो जी, कर्म किये थे चाडाल ॥ च० ५६ ॥ लाभ खर्च भंडार को जी, दीजे हिसाब बताय । इम सुण मंत्री कपियो जी, कीजे कौन मुजरो कियो जी तब बोले महाराय ॥ च० ५७ ॥ सर्व हिसाब मिलावता जी, घाटो जच्यो तीन लख ॥ च० ५६ ॥ उपाय ॥ च० ५८ ॥ जांच पड़ताल पंचा करी जी, एक लियो सत्य पक्ष । चारों को शूली की सजा जी, आज्ञा दीनी फरमाय ॥ च० ६० ॥ प्रजा मिल अरजी ये सुन बात दिवान की जी, रोष भरयो महाराय । ये दंड माफ करो तुम्हे जी, दूसरी राह निकाल ॥ च० ६१ ॥ हठ खेंचो मानी नहीं जी, आखिर भूप करे जी! आप छो दीन दयाल । चारों का नाक कटावने, जी, दे दियो देश निकाल ॥ च० ६२ । इम राजा मन चितवे जी, पूर्ण करी पहिचान । जिन को अप- दयाल । अहिंसा धर्म छै आपणो जी, सब सुख को दातार । चोथो सरणो जिन कह्यो जी, णा जाणिये जी, वो ही करे नुकसान ॥ च० ६३ ॥ सुभाव मान का जाट ने जी, बुलवायो तिणवार । बात टका टका एकनी जी, तुम कही थी सार ॥ च० जगत में एक आधार ॥ च० ६४ ॥ मैं भी सूनो सुणी खाट पै जी, बात कही जब चार । चारों परीक्षा में करी जी, साच कहू इण बार ॥ च० ६६ ॥ प्राण बचा जीवतो ६५ ॥ राज रिद्ध सब भोगवू जी, सब तेरो उपकार ॥ च० ६७ ॥ भूप खुशी हुवो जाट पै जी, प्रगट्यो प्रेम रह्यो जी, पायो नवो अवतार । दी यो बहुत इनाम मै जी, सहस्त्र दीनार पोशाक ॥ च० ६८ । जिन धर्म छै साचो सगो जी, और सगो नहीं कोय । आराधन अथाग । उस ही दिन से भूपति जी, पाचो इन्द्रिय वश कीध । दानादिक शुभ कार्य में जी, जो काई करे जी, ते नर सुखिया होय ॥ च० ६६ ॥ ममत्व नही कोई वस्तु पे जी, समभावे महिपाल । स्वर्ग सिधाई आतमा जो, काल समय कर काल बहु विध लाहो लीध ॥ च० ७० ॥ अष्टमी शुक्ल अषाढ की जी, दोय हजार के साल । खूब कहे ब्यावर विषें जी. सरस बहोतरी ढाल ॥ चतुर ॥ ७२ ॥ च० ७१ ॥

-श्री भरतचक्री सूर्योदय- (तर्ज —ख्याल) पाया पूरण रिद्ध पूरव पुण्य से, भरतेश्वर राजा ॥ टेर ॥ जम्बू द्वीप का भरत क्षेत्र में, तीजा आरा माय । देवलोक सम कही वनीता, नगरी श्री जिनराय हो ॥ भरते १ ॥ तिहां भोग वे राज भरत जी, पुरुषोत्तम नरनाथ । ऋषभ देव जी तात आपका, सुमंगल का अंग जात हो ॥ भरत २ ॥ चक्र रत्न आय ऊपनो सरे, शस्त्रशाला मांय । आयुध धरियो पुरुष देख कर, दीनी वधाई आय हो ॥ भरते ३ ॥ भूपति सूण तिण पुरुष को सरे, कीनो बहु सत्कार । चक्र रत्न जाय पूजियो सरे,

९र भरतक्षेत्र विस्तार हो ॥ भरते ४ ॥ विधि सहित पूज्यो चक्री सरे, उठ्यो आप स्वमेव । चंद्र मडल जिम शोभता सरे, महस वेय १र सब हो ॥ भरत ॥ ५ ॥ चउ वि १ सेना सज करी सरे भरतेश्वर महाराज । गज मस्तक होकर सिक्षिणा सरे पट्ट संघ साधन काज हो ॥ भरते ६ ॥ चक्र रत्न भाग चलियो सरे गगन पन्थ के मॉय । बारह योजन अंतरे सरे, सुख से वसता आप हो ॥ भरते ७ ॥ मारग मे नृप मास मानता सेवा भेटयो आप । आगे आगे वह तो आवे मगदे तेज परताप हो ॥ भरते ८ ॥ पूव दिशा में चालता सरे लवण समुद्र पास । चक्ररत्न तिहाँ उतरियो सरे, कीनो आप निवास हो ॥ भरते ९ ॥ गज होवे तत्काल रत्न पर, दिधो हुक्म प्रकाश । पौषध शाला तुरत बनाओ, और रत्न आवास हो ॥ भरते १० ॥ देव प्रभावे दोनो चीजाँ, सुघड़ एक प्रकार । हुक्म हाम की दर नाम म, लगा नहीं कछु वार हो ॥ भरते ११ ॥ गज से उतर पधारिया सरे, पौषधशाला मॉय । मागध नामा देव को सरे, तेला कीनो ठाय हो ॥ भरते १२ ॥ चौथ दिवस पारकर पोषध, सकर सेना सार । रथ मे बैठ भरत जी चाल्या, लवण समुद्र मझार हो ॥ भरत १३ ॥ द्वादश योजन दूर रहीने, तीर चलायो वाण । मागध नामा देव की सरे, पड्यो सभा में वाण हो ॥ भरते १४ ॥ बाण देखकर कोपियो, सरे, दीख्यो होकर लाल । नाम वॉच तत्क्षण देवता प्रसन्न हुओ तत्काल हो ॥ भरते १५ ॥ कुंडल मुकुट बलि वस्तर, और गला का हार । बाण सहित ले भेटयो सरे, आप नम्यो बारबार हो ॥ भरते१६॥ देव भेटयो भरतजी सरे, कर सुरको सन्मान । आण मनाय विदा कर दीनो, देव गयो निज स्थान हो ॥ भरते १७ ॥ पूर्व फतह रथ फिरियो सरे, आया कटक के माय । करतलाको पारयो सरे बैठा सभा में आय हो ॥ भरते १८ ॥ अट्ठाइ महोत्सव कियो सरे, मागध सुर को राय । कटक उठाई चालिया सर, दक्षिण दिशा मे आय हो ॥ भरत १९ ॥ समुद्र के तट कटक रुपाय के, तेलो कीनो ठाय । पूर्ववत् वरदाम रथ को, कीनी आण मनाय हो ॥ भरते २० ॥ इम तिज फिर तीजो तेलो कर, साध्यो सुर परभास । उत्तर दिशा में चालतो स कियो, सिंधु तीर निवास हो ॥ भरत २१ ॥ सिंधु देवी साधणा सरे चतुर्थ तेलो ठायो । तत्क्षण आसण कंपिया सरे, अवधिज्ञान लगायो हो ॥ भरते २२ ॥ कनक कुंभ मणि रत्न जडित, एक सहस्र अठ प्रमाण । दो भद्रासन सु पा मोल को, और पूर्ववत जाण हो ॥ २३ ॥ नजराणो कियो भेटयो सरे, भरत भूप पे आय । तुमी आण मंजूर करीने, आइ निज दिश आय हो ॥ भरते २४ ॥ अट्ठाई महोत्सव कियो सरे, वाड्या कोस हजार । पास गिरि वताड़ के करे ... देव को तेलो पंचमी

ठायो। सिंधु देवी की तरह सरे, लेय भेटणो आयो हो ॥ भरते २६ ॥ भरत भेटणो लेय ने सरे, दीनी आण मनाय । महोत्सव कर निज कटक उठाई, पश्चिम दिशा में जाय हो ॥ भरते ॥ २७ ॥ तमस गुफा के बारणे सरे, डेरा दीना राय। करतेलो कृतमाल देव को समरयो ध्यान लगाय हो ॥ भरते २८ ॥ चौदस भूषण को भर डाबो श्री देवीके काज । कियो भेटणो आयने सरे, भेट्या श्रीमहाराज हो ॥ भरते २९ ॥ कर सत्कार विदा कर दीनो,सेनापति बुलाय । पश्चिम खड जाय वश करो सरे,हुक्म दियो महाराय हो ॥भरते३०॥ सेनापति सुसेण नाम महा, शूर वीर ने धीर । च·विध सेना सज्ज कर, आयो, सिंधु नदी के तीर हो ॥ भरते ३१ ॥ चर्म रत्न जल ऊपर स्थापिओ, हुओ नाव आकार। सेना सहित बैठ किश्ती में, उतरयो पैली पार हो ॥ भरते ३२ ॥ सम विषम ऊंची और नीची, सर्व ठिकाणे जाय। भरत भूप का नाम की सरे, दीनो आण मनाय हो ॥ भरते ३३ ॥ सेनापति के आयो भेंट में,क्रोडा को धन माल। पीछो फिर सिंधु नदी के, आयो किनारे चाल हो ॥ भरते० ॥ ३४ ॥ चरम रत्न-से वही विधि कर, पार उतर कर आया। जय विजय कर भरत भूप को सेनापति बधाया हो ॥ भरते० ॥ ३५ ॥ जो जो अर्थ भेंट में आयो, ठव्यो नृपति पास। कर सत्कार विदा कर दीनो, आयो निज आवास हो ॥ भरते० ॥ ३६ ॥ कर स्नान भोजन करी सरे, निज तम्बू के माय शब्दादिक सुख भोगवे सरे, आनंद में दिन जाय हो ॥ भरते० ॥ ३७। कई दिना के अंतरे सरे, सेनापति बुलवाय। तमस गुफा का खोलो द्वार यों, हुक्म दियो महाराय हो ॥ भरते ॥ ३८ ॥ सेनापति हिये हर्ष धरीने, कियो वचन परमाण। तीन दिवस को तेलो करके रथ में बैठो आण हो ॥ भरते० ॥ ३९ ॥ लेकर सेना साथ में सरे, और घणो परिवार। आयो गिरि वेताड जहा पर तमस गुफा का द्वार हो ॥ भरते० ॥४०॥ प्रथम पुंजियो द्वारको सरे, फिर कूंडी जलधार। चंदन चर्ची धूप देय कर, पुष्प चढाया सार हो ॥ भरते० ॥ ४१ ॥ रूपाका चांवल से माड्यो आठ आठ मंगलीक। पचवर्ण फूलातणा सरे, कियो पुंज रमणीक हो ॥ भरते० ॥ ४२ ॥ सात आठ पग पाछो हटकर, दंड रत्न ले हाथ । कर प्रमाण द्वारको कुट्यो, जोर जोर के साथ हो ॥ भरते० ॥ ४३ ॥ तीन दफे कुट्याँ थका सरे, सररर खुलिया द्वार। भरत भूप को दीनी बधाई, आकर कटक मझार हो ॥ भरते ॥ ४४ ॥ करतेला को पारणों सरे, सेनापति सरदार। शब्दादिक सुख भोगवे सरे, नाटक का झणकार हो॥ भरते० ॥ ४५ ॥ कटक उठाय कर चालिया सरे, गज पर बैठ नरेश। तमस गुफा के दक्षिण द्वारे, हुवा आप प्रवेश हो ॥ भरते० ॥ ४६ ॥ मणि रत्नको गज मस्तक पर मेल्यो होय हुल्लास। अन्धकार को नाश

हो ॥ भरते० ॥ ६७ ॥ या विधि कह कर देव गया तब, उठ्यो सगलो साथ । कर स्नान नजराणो लेयकर, भेट्या आय नरनाथ हो ॥ भरते० ॥ ६८ ॥ लेय भेटणो भरतजी सरे, कर पीछो सत्कार । आण मनाई आपकी सरे, हो रह्या जयजयकार हो । भरते० ॥ ६९ ॥ सेनापति सुसेण बुलाई, हुक्म दियो महाराय । उत्तर भरत पश्चिम खड साधो, आवो आण मनाय हो ॥ भरते० ॥ ७० ॥ सेना सजकर निकलियां सरे, कर आज्ञा परमाण । दक्षिण भरत पश्चिम खड साधो, तिण विध लीजो जाण हो ॥ भरते० ॥ ७१ ॥ आगे कोण ईशाण मे सरे, चलिया भरत नरेश । चूल हिमवत पर्वत पासे, कीनो आप प्रवेश हो ॥ भरते० ॥ ७२ ॥ वहा पर फिर पोषध शाला में, तेलो सातमो ठायो । चूल हिमवत गिरी देव को, साधन काज सिधायो हो ॥ भरते० ॥ ७३ ॥ पर्वत के नजदीक आय कर, रथ का आप ठहराया । धनुषबाण कर धारने सरे, नभ में खैंच चला यो हो ॥ भरते० ॥ ७४ ॥ बहत्तर योजन गयो गगन में, पड्यो सभा में जाय । मागधसुर की तरह भेटकर, आगो तिण दिश जाय हो ॥ भरते० ॥ ७५ ॥ रथ को फेर पधारिया सरे, ऋषभ कूट के पास । नामो लिख निज नामको सरे, आयो होय हुल्लास हो ॥ भरते० ॥ ७६ ॥ कर तेला को पारणो सरे, सेना लेय सिधाया । दक्षिण दिश बेताड गिरि जहाँ, डेरा आय लगाया हो ॥ भरते० ॥ ७७ ॥ विद्याधर श्रेणी को नरपति, तेलो आठमो करियो । नमि और विनमि नृप को, देव योग मन फिरियो हो ॥ भरते० ॥ ७८ ॥ लेय भेटणो आवियो सरे, भरत भूपके पास । नमि नृप कन्या व्याही जो, श्रीदेवी हुई खास हो ॥ भरते० ॥ ७९ ॥ विनमि कर रत्न भेटणो, दोनों गया निज ठाम । गगाकुंड के पास आयने, दीना भरत मुकाम हो ॥ भरते० ॥ ८० ॥ नवमो तेलो कियो आप, तब गगादेवी आय । सिंधुवत् जाण जो सरे, कियो भेटणो लाय हो ॥ भरते० ॥ ८१ ॥ दक्षिण दिश के मायने सरे, चलिया कटक उठाय । खड परपात गुफा है जहा पर, डेरा दिया लगाय हो ॥ भरते० ॥ ८२ ॥ सेनापति पूर्व खड साधण, भेजियो श्री महाराय । मु द्रा मोल को लेय भेटणो, आयो आण मनाय हो ॥ भरते० ॥ ८३ ॥ आराधियो नटमाल देवना, दसमो तेलो ठाय । सिंधुवत् कर भेटणो सरे, आयो तिण दिश जाय हो ॥ भरते ॥ ८४ ॥ खड परपात गुफा झट खोलो, दीनो हुक्म चढाय । सनापति जिम तमसगुफा का, द्वार खोलिया आय हो ॥ भरते ॥ ८५ ॥ योजन दो पच्चीस की सरे, लबी गुफा मझार । लिखता गुणपच्चास मंडला, हुआ भरत जी पार हो ॥ भरते० ॥ ८६ ॥ दक्षिण भरत के माय ने सरे, डेरा दीना लगाय । नव निधान को तेलो ठायो, पौषधशाला मांय हो ॥ भरते० ॥ ८७ ॥ तुरत सरक पग हेठे आया,

शिर ताज तुम्हारा, बोले मधुरी वाणी। सब राणयां के माथेने सरे, तुजे करूं पटरानी जी ॥ ध० ॥ २४ ॥ सती कहे सुण राजन् पाँमें, अभी लगे मत केडे। कोई आवे तो वाट देख लूं, छे महीना मत छेडे जी ॥ ध० ॥ २५ ॥ हे भोली यहां कुण आसी, सूण समुन्दर आडो। सब ही आशा छोड दे स तू, कोल करे मत गाडो जी ॥ ध० । २६ ॥ कुण नरेशर त्रिगट मुक्ता, इसको आशा धरु गा। छे महिना में नहीं आवें तो, तुम कहोगा सो ही करूगा जी ॥ ध० ॥ २७ ॥ भूपति मन समता धरी सरे, नहीं ताण में सार। कुवारा अन्तेवर माही, मेल दीनी ततकाल जो ॥ ध० । २८ ॥ सुख में सती विचारे निशदिन, शील का यतन करत। बेले बेले पारणा सरे, आंबिल करे निरत जी ॥ ध० ॥ २९ ॥ हस्थनापुर नगर विषे सरे, हेरो पड्यो तिवार। न जाणे कोई देवता सरे, लेगयो पडव नार जी ॥ ध० ३० ॥ लोभ बताई द्रव्य को सरे, भूपति पडहो बजायो। कीनी बहुत गवेसणा पर, पत्तो कठे नहीं पायो जी ॥ ध० ३१ ॥ गज होदे बैठ भूवा जी, पच पांडव की माता। नगर द्वारिका आविया सरे, कहेशा हरिने वाता जी ॥ ध० ३२ । हरि पूछे कृपा कर मोंपर, कैसे हुवो है आवो। सभी कारज सिद्ध करु म थे, भूवाजी फरमावो जी ॥ ध ३३ ॥ समाचार सब भाखिया सरे, गोविन्द ध्यान लगावे। समरथाई थायरी सरे। और नजर नहीं आवे जी ॥ ध० ३४ ॥ गोपाल कहे सुण भूवाजी, चिन्ता नहीं कोई सुत। जहां तहं से लाके द्रोपदी, सू पसु हाथो हाथ जी ॥ ध० ३५ ॥ भूवाजी सुण वचन हरि को, फिर हथनापुर आई। नाझे द्रोपदी आय मीली जु, सोच फिकर कछु नाई जी ॥ ध० ३६ ॥ गोविन्द करी गवेषणा पर, पतो कठे नहीं पायो। इतने राज भवन के मांई, नारद ऋषीश्वर आयो जी ॥ ध० ३७ ॥ पुछे कृष्णजी कहो नारदजी, कोई राजस्थाने। देखी होवे, द्रोपदी तो, थे पत्ते बतावो म्हाने जी ॥ ध० ३८ ॥ तब नारद कहे धात्री खन्ड का, भरत क्षेत्र के माग। एकदा कोई समय पाय के, मैं वहां गया चलाय जी ॥ ध० ॥ ३९ ॥ अमर कला नगरी भली सरे पदम नाम तिहाराय। देखी द्रोपदी सारखी वहां, राज भवन के माय जी ॥ ध० ॥ ४० ॥ कृष्ण विचारी कहें नारद ने, कर्म तुम्हारा दीसे। सुण नारद जी उड़े गगन में, हुलमो द्वारका घीसे जी ॥ ध० ॥ ४१ ॥ समाचार हस्थनापुर भेज्या, दूब गयो तिसनीर। पाचो पाडव सजकर आईज्यो, समुन्दर उली तीर जी ॥ ध० ॥ ४२ ॥ पंडु राजा समाचार पढ, पांडव भेज्या तत्काल। जोवे वाट समन्दर के तीरे, कब आवे गोपाल जी ॥ ध० ॥ ४३ ॥ द्वारापति उमेद धरीने, निकले सज असवारी समुद्र तट पाचो पाडव सामिल आय मिले तिणवारी जी ॥ ध० ॥ ४४ ॥ [तर्ज भाई तुम लो कह सावे] ॥ पाडव मत

सती द्रोपदी के शरणे, भूपति पडियो नाय। बुद्धि उपाई मुझ भणी स तू, जीतब दान दिराय जी ॥ ध. ६२ ॥ सती कहै रे निर्लज तुझने जरा लाज नहीं आई। काम अधछोई रयो सतू, अब करे नरमाई जी ॥ व ६३ ॥ आला कपडा पहेरले सतू, छोड़ मर्द का भेक। रत्नादिक ले भेटणो सरे, और उपाव नहीं एक जी ॥ ध ६४ ॥ कर आगे मुझ को सोंप दे सरे, मन में मन सरमाजे। गोविन्द के चरणार नमी ने, सब अपराध खमाजे जी ॥ ध ६५ ॥ भलो होय सती थायरो सरे, ठीक उपाय बतायो। तिमहिज कर त्रिखंड नायक से, सब अपराध खमायो जी ॥ व. ६६ ॥ कृष्ण विचारी ममता धारी, भूप त्रिया के रूप। अभय दान देई मूकि यो सरे, गयो द्रोपदी सूंप जी ॥ ध ६७ ॥ हाथो हाथ लई द्रोपदी पच पाडव ने सोपी। वचन सफल हुवो तेहनो, भुवा जी की बात नहीं लोपी जी ॥ ध ६८ ॥ कृष्ण औ पाडव रथ सजकर, लेई द्रोपदी लार। सफल काज कर निकल्या सरे उतरे समुदर पार जी ॥ ध ६९ ॥ तिण अवसर तिहा चापा नगरी, मुनि सुव्रत भगवान। पूरण भद्रबाग के माई समोसरया पुण्यवान जी ॥ ध ७० ॥ कपील नामें वासुदेव या, बात सुणी हुल-सायो। आविशमा जिनराज ने सरे तुरत वदवा आयो जी ॥ ध ७१ ॥ तीनवार वदना करी सरे, सन्मुख सारे सेव। हित उपदेश सुणावियो सरे, श्री तीर्थ कर देव जी ॥ ध ७२ ॥ वाणी सुणता समो सरणमें, सुणयो शखकोनाद। कपिल नामा वासुदेव के, चित्त में हुओ विवाद जी ॥ व ७३ ॥ कहै श्री जिनराज कृपा कर, सुणशो त्रिखंडी नाथ। मेटो मन की भर्मना स या, कभी न होवे बात जी ॥ ध० ७४ ॥ नव पदवी में आदकी सरे, प्रभु चार फरमाई। दो दो एक समय नहा लाधे, एक त्तेत्र के माई जी ॥ ध० ७५ ॥ अहो जिनवर मुज सशय मेटो, अरज करे कर जोर। सागे शब्द मुझ शख सरीखो, यहाँ कौ कुण और जी ॥ ध० ७६ ॥ जबुद्वीप का भरत को सरे, वासुदेव यहा आयो। ज्योंका त्यों सब मानने सरे, प्रभु भेद सभालायो जी ॥ व० ७७ ॥ सुणताई तत्काल नरपति, मिलवा मन उमायो। नजरा देखू जायने स जद, प्रभु एम फरमायो जी ॥ व० ७८ ॥ सुण हो नरपति चार जणातो, तीनकाल के माय। एक समान पदवी धर वे, मिले न आपस माँय जी ॥ ध० ७९ ॥ तदपि वदना करी भूप, गज होदे बैठ सिधाया। पवन वेग जिम चलता सरे, समुद्र के तट आया जी ॥ ध. ८० ॥ हस्तिपर बैठा थकासरे, लबी नजर लगाई। उड़ती ध्वजा देख रथ ऊपर, खुशी हुया मन माही जी ॥ ध० ८१ ॥ उत्तम पुरुष मुज सारखा सरे, वासुदेव वे जावे। सुख मे आप पधारजो सरे, एसे कही शख पूरावे जो ॥ ध० ८२ ॥ सुणियो शब्द कृष्ण जी पाछो, शख बजायो आप। समज गया दोई सेन में सरे, मनसु कियो मिलाप जी ॥ ध० ८३ ॥ कपिल नामा वासुदेव फिर, पीछा तुरत सिधाया।

अर्ज करे प्रभु, तुम हो दीन दयाल। मुझ अवला पर कृपा कीजे, अपनो विरध सभालजी ॥ ध० ॥ १०६ ॥ सुनकर दया ऊपनी दिल में, हरिआ आप विचारयो राख्यो सुहाग द्रौपदी को अब, रथ पर कोप उतारयोजी ॥ ध० १०७ ॥ या काँई कुमति उपनी थाने, कृतघ्न पणो कमायो ।'देश बट्टो है पाण्डवा स यूं, हरि हुकम फरमायो जी ॥ ध० १०८ ॥ गया द्वारका कृष्णजी सरे, पाण्डव हस्तनापुर आया। मात पिता ने मांडने स सब बीतक हाल सुणायाजी ॥ ध० १०९ पण्डुराय कहे पाँढवाँस थाने, मूडो कीनो काम गुण ऊपर अवगुण कियो स थे, जगमें हुवा वदनामजी ॥ ध० ११० ॥ सब ही मिल सला करी सरे, गुन्हो करानो माफ। गजवर बैठ तुरत भुवाजी, गया द्वारका आपजी ॥ ध० १११ ॥ विनय कर यशोधर पूछे, कैसे हुवो है आवो। जो मुझ लायक काम होवे सो, भूवाजी फरमावोजी ॥ ध० ११२ ॥ सुन गोविन्द थारी तीन खण्ड में, आण अखण्ड वरताय। कहा जाय पाण्डव वसे स तू, मुजको रहा बतायजी ॥ ध० ११३ ॥ मैं तो बोल वदलू नहीं सरे, भूमी आपने आपी। समुद्र पाणी हटाय वसे पाडव, मिले न आय कदापिजी ॥ ध० ११४ ॥ कोम करी कुन्ता महाराणी, फिर हस्तनापुर आई। पांचों पाण्डव हरि हुकम से, मथुरा जाय बसाईजी ॥ ध० ११५ ॥ साधु तपसी भूपती सरे, ज्ञानी और बलवान। चतुर होवो तो पाँच जणा को, मत करजो अपमानजी ॥ ध ११६ ॥ नेम धर्म तप मन से पालो, भव भव में सुखदाई। सती शीलमें दृढ रहिसो, निज घर अपने आईजी ॥ ध० ११७ पाण्डव साथे सती भोगवे, पचेन्द्रिय सुख भोग। कितनोक काल निकल्यां पीछे, स्थेवरों को लागो जोगजी ॥ ध० ११८ ॥ वाण सुण वैराग धरीने पाँचोंही पाण्डव लार। सती द्रौपदी साथ हुई, छैऊ लीनो संयम भारजी ॥ ध० ११९ पांचों ही पाण्डव करणी करने, आठों ही कर्म खपाय। जन्म मरण दुख मेटने सरे, मोक्ष विराजा आयजी ॥ ध० १२० ॥ इम जाणी ने सुणो सयणा, शील अखण्डित पालो। नरभव लावो लेयने सरे, मोक्षपुरी झट चालोजी ॥ ध० १२१ ॥ चन्दनबाला राजमतीजी, सीता, सुभद्रा जान। शील व्रत में दृढ रही स न्यारा, जिनवर किया बखाणजी ॥ ध० १२२ ॥ सती द्रौपदी संयम पाली, गई पंचमें देवलोक। तिहा से चव महाविदेह जन्म ले सती जायगा मोक्षजी ॥ ध० १२३ ॥ उगणीसे सत्तावन वर्षे, चौमासो भेयकार। शहर आवरे जोड बणाई, सूत्र अनुसारजी ॥ ध० ॥ १२४ ॥ महामुनि नदलाल तणा शिष्य, खूबचन्द इम गावे। शीलवती सतियां का नाम से, मन वछित सुख पावेजी । ध०१२५।

॥ ढाल ढाल ॥ २ ॥ सुबाहु कुंवर की (तर्ज ख्याल ॥ सफल कर लीनो नर भव आपणो, धन कुंवर सुबाहु ॥ टेर ॥ इणहिज जबु

जन्ममरण मिटजायजी ॥ ध० २३ ॥ [illegible] नगर में सरे, [illegible] । सुबाहु कुंवर वन्दन चल्या सरे, [illegible] परिवारजी ॥ ध० २४ ॥ वन्दना कर जिनवर के सन्मुख, बैठा धर अनुराग । वाणी सुण वीतरागनी सरे, अधिक चढ्यो वेरागजी ॥ ध० २५ ॥ हाथ जोड ने अर्ज करे, प्रभु यह संसार असार । मात पिता को पूछ ने म, ले सु संयम भारजी ॥ ध० २६ ॥ वीर कहे जिम सुख हो तिमकर, वन्दना कर घर आयो । माता के चरणार नमन कर, सर्व विरतान्त सुनायोजी ॥ ध० २७ ॥ संयम लेसू मातजी सरे, आज्ञा दो मुझे आप । एमसुणी माता मूर्च्छानी, लग्यो वचन को तापजी ॥ ध० २८ ॥ सावचेत हो मात विलपती, बोले वचन विचार । संजम मारग दोयलो सरे, चलणो खांडाधारजी ॥ ध० २९ ॥ विविध भांत समझाविया सरे, एकन मानी बात महोत्सव की त्यारी करी सरे, आज्ञा आपी मातजी ॥ ध० ३० ॥ सहस्र पुरुष उठावे ऐसी सेवका तुरत बनाय । गोद लेई बैठा मात जी तरुण्यां बोजे वायजी ॥ ध० ३१ ॥ तव संगममें प्राक्रम फोडना, तू कायर मत वीजे । अष्ट कर्म को अन्त करीने, शिवपुर डेरा दीजेजी ॥ ध० ३२ ॥ जा सोंप्या जिनवर के सन्मुख, बोले गु [illegible] कर जाउ । ये शुभ वल्लभ नानड्यो सरे, संयम दो वर छोडजी ॥ ध० ३३ ॥ ३३ ॥ क्षमावन्त समता को सागर, घणा गुणा को दरियो । संजम दीजे नाथजी म यो, जन्म मरणसे डरियोजी ॥ ध० ३४ ॥ माला मोती खोलिया सरे, छोड्या सब श्रृङ्गार । सनमुख ऊभी मातजी सरे पड रही आंसुधारजी ॥ ध० ३५ ॥ वेस कियो मुनिराज को सरे, कर पचमुष्टी लोन । पाप अठार त्यागिया सरे, मिट गयो मन को सोच जी ॥ ध० ३६ ॥ जिनवर को निज नन्द सोंपके, मात ठिकाने आई । सदा विविध सुख भोगवे सरे, मगन रहे मन मांईजी ॥ ध० ३७ ॥ हस्तिशिखर नगरसें सरे, प्रभुजी कियो विहार । साथ रहे सेवा करे सरे, सुबाहु अणगारजी ॥ ध० ३८ ॥ शुद्ध संयम पाले शिष्य गुरुकी, मन में बडी उमंग । विनय करी स्थेवरों के पासे, भण्या ग्यारे अंगजी ॥ ध० ३९ ॥ बहु वर्षां का संयम पालो, टालो आतम दोष । साठ भक्त अणसण आराधी, गया प्रथम सुरलोकजी ॥ ध० ४० ॥ अग इग्यार में वीर जिनेश्वर, कर दीनो निस्तार । पन्द्रह भव करी महाविदेह में, जासी मोक्ष मझारजी ॥ ध० ४१ ॥ उगणीसे इकसट्ठ के वर्ष, चेत महिनो जान । शुक्ल पक्षकी छट्ठ बुधवारे, करी जोड परमाण जी ॥ ध० ४२ ॥ महामुनि नन्दलालजी सरे, ज्ञान तणा दातार । जिहाँ तिहाँ शिष्य के जे वरतो [illegible]चारजी ॥ ध० ४३ ॥ ढाल ४ ॥ नमिराज ऋषि ॥ तर्ज ॥ पणिहारी की । (मिथला नगरी का राजवो ॥ नमि राजा जी २ ॥ विदेह देश को नाथ ॥ राजाजी ॥ १ ॥

सहकेडी मन वैराग्य में, नमि २। हित परजा के साथ ॥ राजा २ ॥ देवलोक सम पावियो, नमि २। मनोहर सुख भोग ॥ ३ ॥
एक दिन तस तन उपनो, नमि २। सबल दाह ज्वर रोग ॥ राजा ४ ॥ वनिता मिल चन्दन घिसे, नमि २। पविहित काज उच्छाव ॥
राजा ॥ ५ ॥ मन तन पाले चूड़ियां नमि। शब्द सुहावे नांय ॥ राजा ॥ ६ ॥ एक एक राखि चूड़ी सहु, नमि २। दीनी सुरत सवार ॥
राजा ॥ ७ ॥ पति परमेश्वर सारखा, नमि २। सो आन सो पतिव्रता नार ॥ राजा ८ ॥ पूछे भूपति कहो प्रिया, नमि २। शब्द नहीं
होत अवाज ॥ राजा ९ ॥ घट घट हुवे बहु मिल्या, नमि २। मोटो गरीब निवाज ॥ राजा १० ॥ परसंजोगे दुःख हुए, नमि २।
इसमें संशय नहीं कोय ॥ राजा ११ ॥ रमन करे जो ज्ञानमें नमि २। फिर दुख काहे को होय ॥ राजा १२ ॥ एकान्त भावना भावता
नमि २। जाति सारण पायो ज्ञान ॥ राजा १३ ॥ शीतल चन्दन लेपतां, नमि २। मिटगई तनकी ताप ॥ राजा १४ ॥ भोग रोग सम
जाणने नमि २। दियो पुत्र को राज ॥ राजा १५ ॥ मुनी हुआ ममता तजी, नमि २। केवल मोक्ष के काज ॥ राजा १६ ॥ शहर कोला
हल हो रया, नमि २। उस वक्त नगरी के मांय ॥ राजा ॥ १७ ॥ शक्रेन्द्र भी आईयो नमि २। ब्राह्मण रूप बनाय ॥ राजा १८ ॥ करुणा
वैराग्य की पारखा नमि २। सू बोले वचन विचार ॥ राजा १९ ॥ तुम दिक्षा स महामुनि, नमि। यह रुदन करे नरनार ॥ राजा २० ॥
स्वाथ का सब झूरणा विप्र महाराजी २। दियो वह पत्रिका न्याय ॥ महाराजी ॥ २१ ॥ ओलो नजर लगायने नमि २। थारा भवन
जले महाराज ॥ राजा २२ ॥ राज तजा रमणी तजी, विप्र सब्बा पुत्र परिवार ॥ महा ॥ २३ ॥ निर्मोही थई निकल्यो। विप्र २।
मैं तीनों सममार ॥ महाराजा २४ ॥ मुझ वस्तु कोई नहीं जले। विप्र। तुम बोलो वचन विचार ॥ महाराजा २५ ॥ रक्षा निमित्त करायने
नमि २। गोपुर सहित पागार ॥ राजा २६ ॥ भीतर फिरणी, खाई खारखा, नमि २। सुरखों पे शस्त्र धराय ॥ राजा २७ ॥ इतनो करन
करावो नमि २ तुम फिर हो जो मुनिराय ॥ राजा २८ ॥ सम्यक श्रद्धा मुझ नगर के, विप्र। क्षमा को इस पागार ॥ महाराजा २९ ॥ त्रण
गुप्ति नामे किया, विप्र २। फिरणी खाई और द्वार ॥ महाराजा ३० ॥ शरीर धनुष्य तप बाण से, विप्र। करू कर्म रिपु को नास ॥ महाराजा
३१ ॥ रक्षा करी मैं नगर की, विप्र। तुम समझो शुद्ध विकास ॥ महाराजा ३२ ॥ भवन करावे बहु भोमिया, नमि २। एक पाणी वीच
मसाद ॥ राजा ३३ ॥ पिछे तुमारे वश में, नमि २। कुटुम्ब करेगा याद ॥ राजा ३४ ॥ चालता मारग वीच में, विप्र २। करो दुःख
विश्राम ॥ महाराजा ३५ ॥ वह नर घर क्यों क्यों करे, विप्र २। जिनके करनो मोक्ष मुकाम। महाराजा ३६ ॥ चोरादिकने वश करो, नमि २

देकर दण्ड करूर ॥ राजा ३७ ॥ क्षेम करी निजग्राम में । नमि २ फिर लीजो योग जरूर ॥ राजा ३८ ॥ छोड असली चोरकु । विप्र२ नकली कुण पकड़े जाय ॥ व्हाला ३९ ॥ असली चोर को वश किये । विप्र २ जो थे विषय कषाय ॥ व्हाला ४० ॥ आय नम्या नहीं आपन । नमि२ जो जो सबल सिरदार ॥ राजा ४१ ॥ उनकों जाती वश करो । नमि२ तुम फिर होओ अणगार ॥राजा४२॥ शूर कहावे वो जगत में । विप्र२ जो जिते सुभट दशलाख ॥ व्हाला ४३ ॥ जिससे शूरो कोन है । विप्र २ थारी सुणता उगडे आख ॥ व्हाल ४४ ॥ दुर्जय पच इन्द्रिय पुन । विप्र० सबल क्रोधादिक चार ॥ व्हाला ४५ ॥ जो नर याने जीतियो । विप्र २ सो नर जीत्यो सब ससार ॥ व्हाला ४६ ॥ मोटो यज्ञ करो तुम्हें । नमि२ विप्र जिमावो स्वाम ॥ राजा ४७ ॥ दीजो करसे दक्षिणा । नमि २ किजो जक्त में नाम ॥ राजा ४८ ॥ दान कोई नर दे सके । विप्र १ कोई से दियो नहीं जाय ॥ व्हाला ४९ ॥ दोनों को सयम श्रेय है । विप्र२ मुक्ति तणो फल थाय ॥ व्हाल ५० ॥ घोराश्रम को छोड के । नमि २ कियो सोहिलाश्रम स प्रेम ॥ राजा ५१ ॥ इनसे तो यादि रहेणो सिरे । नमि २ करणो कुछ व्रत नेम ॥ राजा ५२ ॥ मास मास तप जो करे । विप्र२ कुशाग्र सम अन्न खाय ॥ व्हाला ५३ ॥ सम्यक् श्रद्धाविन जीवकों । विप्र २, तिरणो हुवे कभी नाय ॥ व्हाला ५४ ॥ हिरण सुवर्ण रत्नाकरी । नमि २, धनके भरघा भण्डार ॥राजा ५५॥ चतुरग सैना बढायने । नमि २, फिर होवो अणगार ॥ राजा ५६ ॥ धन थोडो तृष्णा घनी । विप्र २, जेम नहा आकाश को अन्त ॥ व्हाला ५७ ॥ लोभी नर धापे नहीं । विप्र २, अग्नि सिंधु को दृष्टान्त ॥ व्हाला ५८ ॥ इण कारण तृष्णा घनी । विप्र २, मैं वारलियो सन्ताप ॥ व्हाला ५९ ॥ तप सयम धन साधु के । विप्र २, पूरण भरिया कोष ॥ व्हाला ६० ॥ या योवन वय आप की । नमि २, ले रया वैराग्य से योग ॥ राजा ६१ ॥ घर घर जावोगा गोचरी । नमि २, देखोगा गृहस्थ का भाग ॥ राजा ६२ ॥ यह सुख राज सभालने नमि २, छेडासो मन भाव ॥ राजा ६३ ॥ करजो काम विचारने । नमि २, फिर पश्चाताप न थाय ॥ राजा ६४ ॥ काम भोग दोऊँ लोक में । विप्र २, मैं जाणु जहर समान ॥ व्हाला ६५ । अभिलाषा भी जो करे । विप्र २, पावे दुर्गति स्थान ॥ व्हाला ६६ ॥ प्रश्न हम पूरा हुआ । नमि २, दृढता देख हर्षाय ॥ राजा ६७ ॥ प्रगट भयो सुर इन्द्रजी । नमि २ ब्राह्मण रूप मिटाय ॥ राजा ६८ ॥ कर जोडी स्तुति करे । नमि २, उत्तम बुद्धि निधान ॥ राजा ७१ ॥ शिव सुख पाजो साधु जी । नमि २, लोक मे उत्तम स्थान ॥ राजा ७२ ॥ चरण नमि गुण गावतो । नमि २, इन्द्र गयो निज धाम ॥ राजा ७३ ॥ निमल सयम पालने । नमि २, मुनिवर मोक्ष सुखकान ॥ राजा ७४ ॥

नित्य राधन बक दिया सब खाय, सुणीजे ॥ श्र० १९ ॥ मन्त्री कहे एक दिवस को पाले सजमभार, सुणीजे । ते पण जावे मोक्ष में, सशय नाहीं लगार, सुणीजे ॥ श्र० २० ॥ आठ दिवस बीत्या पीछे, लीनो सजमभार, सुणीजे । तिण हीज दिन वैराग्य से पच्छक्ष कियो सथार, सुणीजे ॥ श्र० २१ ॥ बावीस दिन दिक्षा पालने काल करी मुनिराय, सुणीजे । हुआ ललितांग देवता दूजा स्वर्ग के माय, सुणीजे ॥ श्र० २२ ॥ स्वय प्रभा देवी तेहने तिण सेती राग अपार, सुणीजे । क्षणभर जुदा नहीं रहे व्यापत विषय विकार, सुणीजे ॥ श्र० २३ ॥ आपो तिहांहिज आपदा इम बोले ससार, सुणीजे । देवी चवी तब देवता अरति करे है अपार, सुणीजे ॥ श्र० २४ ॥ मन्त्री महा बल भूप को तेभी हुओ तिहा देव, सुणीजे । आयो ललितांग देव पै विनवे यों स्वमेव सुणीजे ॥ श्र० २५ ॥ इतनो सोच न कीजिये देवी ते देसू मिलाय, सुणीजे । काम सरे उद्यम किया तेहनो है एक उपाय सुणीजे ॥ श्र० २६ ॥ देवी चवी धात्री खण्ड का पूर्व महा विदेह माय, सुणीजे । पुत्री हुई छे सातमी विप्र तणे घर जाय ॥ सुणीजे ॥ श्र० २७ ॥ तात तेहनो नागलह वो दुखियो है पाप प्रभाव सुणीजे । अनतन से निज कुटुम्ब को कर सके नहीं निरभाव, सुणीजे ॥ श्र० २८ ॥ घबरायो इम चितवे जो अब पुत्री होय, सुणीजे । चल्यो जासूं परदेश में घर में रहूँ नहीं कोय, सुणीजे ॥ श्र० २९ ॥ तस नारी हुई गर्भणी विप्र धरे अति द्वेष, सुणीजे । पुत्री हुई फिर मांभली भाग गयो परदेश, सुणीजे ॥ श्र० ३० ॥ प्रेम बिना पाली पुत्री का नागश्री निज माय, सुणीजे । रोप वसे निज पुत्री को नाम दियो कुछ नांय, सुणीजे ॥ श्र० ३१ ॥ नाम निनामी लोगा दियो, दुख माह दिन जाय, सुणीजे । करती वन्न आजीवका, टक लावे टक खाय ॥ सुणीजे ॥ श्र० ३२ ॥ तिण बन में एक महा मुनि पाया है केवल ज्ञान, सुणीजे। महिमा करन मुनि वदवा मिलिया सुरासुर आन सुणीजे ॥ श्र० ३३ ॥ देख उद्योत तिहा गई सुणियो तव उपदेश, सुणीजे । व्रतधारी हुई श्राविका हृदय हर्ष विशेष । सुणीजे ॥ श्र० ३४ ॥ मुनि वांदि गई निज घरे रह सतियों के पास, सुणीजे । सेवा करे बहुतपनपे करती ज्ञान अभ्यास, सुणजे ॥ श्र० ३५ ॥ शीलवती बाडे धर्मणी सग माही जस लीध, सुणीजे । आलोचना कर शुद्ध मने आखिर अनशन कीध, सुणीजे ॥ श्र० ३६ ॥ इहा से जाय उतावला दो निहाणो कराय । सुणीजे, ललितांग सुर सुन सजथयो पहुँचो तुरत तिहा जाय । सुणीजे । श्र० ३७ ॥ बात कही सहु माडने जिम तिम मन ललचाय । सुणीजे, ललितांग सुर निज स्थान के गयो निहाणो कराय । सुणीजे ॥ श्र० ३८ ॥ ते मर फिर देवी हुई सुर मन हर्ष अपार । सुणीजे, नाटिक जोवे नव नवा भोगवे भोग उदार । सुणीजे ॥ श्र० ३८ ॥ भिजय भली

पुण्डरीकणी पूर्व महा विदेह मांय। सुणीजे सोवनगर नगर मनो पुष्करावर्त। महाराय सुणीजे॥ ऋ ४ ॥ तिण घर नीको नर हुआ ललितांग सुर को जीव। सुणीजे लक्ष्मी राणी की कुख को वज्र जंग नाम सदीव। सुणीजे॥ ऋ० ४१॥ यश तिहां पट्ट स्वयं के घणो वज्रसेन नाम भूपाल। सुणीजे ते देवी मरविधन घर पुत्री हुई सुख माल। सुणीजे॥ ऋ ४२॥ नाम दियो तस श्रीमती घर में बहु सुख योग सुणीजे। रूप कला गुण सोहती तिम हुई वे वर ने योग सुणीजे॥ ऋ ४३॥ पद्मजनी को जन्म गांठ पे, निकीया है कई भूपाल सुणीजे। निज नन्दन सर्व भावीयो सुवर्ण जग भी ताल सुणीजे॥ ऋ० ४४॥ तिण वर्षों न श्रीमती, सर्वो देखी सुर विमाण। सुणीजे मन मांही चिन्तित उपन्यो ज्ञान स्मरण पान। सुणीजे॥ ऋ० ४५॥ ललितांग सुर तिहां उपनो, पायो मनुष्य अवतार, सुणीजे। तेहीज पति गिरधारस्यूं, मानो अभिग्रह धार। सुणीजे॥ ऋ ४६॥ निज चित्र लीखीयो फलक पर रियो भवन के द्वार, सुणीजे। देखी स्वयं प्रभा स्वयं प्रभा, करसी ते सुभ भरतार, सुणीजे॥ ऋ० ४७॥ ते वखत सहु सुर रमयो मान्यो सुर विमान सुणीजे ते मांही निज निज भासरां मेठा है भूपति आण सुणीजे॥ ऋ ४८॥ चक्रवर्ती वज्र राजा के रह्यो, हो रहा नगर पान, सुण जे। नाभिम्बर नाभी रहा, आपके ने देता दाम सुणीजे॥ ऋ० ४९॥ वर्षी उत्सव समाय में अतुल जोडी भरतार सुणीजे राज भवन मांही आवतां वज्र जंग कुंवर भी साथ सुणीजे॥ ऋ० ५०॥ चित्र देखयो ते कुंवरजी हुओ जाति स्मरणज्ञान सुणीजे स्वयं प्रभा स्वयं प्रभा इम कयो, कुंवरी आपणो निज धर्म सुणीजे॥ ऋ० ५१॥ मिल हिम अवसर भूपती, पुत्रीने पुत्रको विचार सुण जे। तू कहे तो सगपण करां नहीं तो स्वयंवर धार, सुणीजे॥ ऋ० ५२॥ तब कुंवरी का कहन से स्वयंवर मंडप कीध॥ सुणीजे॥ कुंवरी परखो तिण कुंवरने हुओ मनोरथ सिद्ध॥ सुणी जे॥ ऋ ५३॥ तिण अवसरसे निधीपति भी मती पुत्र प्रधान॥ सुणीजे॥ तुरत ब्याही तिण कुंवरने, महोत्सव कर मंडाण॥ सुणीजे ऋ० ५४॥ कायको दीमो भवियणो, अन्त चिंता कर चोध॥ सुणीजे॥ पुत्री पहुंचाइ सासरे, बहुविधि शिक्षा दीध॥ सुणीजे ऋषभ ५५॥ निकट थो एक निज सायची सुवर्ण संग नरेश॥ सुणीजे॥ रंग विलास होवा लगीं, भावीया आपणे देश॥ सुणीजे ऋषभ ५६॥ संवर न राज दई करी सुवर्ण जंग महाराय॥ सुणीजे॥ संयम से कर्म काटने मोक्ष विराज्या जाय॥ सुणीजे ऋषभ ५७॥ राज पाल वज्र जंग हिय, श्रीमती के पटनार॥ सुणीजे॥ निशदिन रहे वैराग में, आपसो भलित संसार॥ सुणीजे ऋषभ ५८॥ मध्य रात्रि राणी प्रत्ये, इम बोले महाराय॥ सुणीजे

सुपना सरीखी साहबी, अवसर बीत्यो जाय ।। सुणीजे ऋषभ ५९ ॥ जो मन हाव थायरा, प्रगट हुवा प्रभात ॥ सुणीजे ॥ ... स्थापने, सयम लेवां साथ ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६० ॥ राणी कहे सुण रायजी, मुझ मन येही विचार ॥ सुणीजे ॥ धर्म में ढोला न कीजिए, निकलो तज ससार ॥ सुणीजे ऋषभ ६१ ॥ इम विचारी ने सो गया निन्द्रा में भरपूर ॥ सुणीजे ॥ पलटी नियत निज पुत्र को, ध्यायो ध्यान करूर ॥ सुणीजे ऋषभ ६२ ॥ जन्म लियो गर नृप के, मिलियो सब सुख साज ॥ सुणीजे ॥ तान प्रलोक हुवे कभी, कब मिलसी मुझराज ॥ सुणीजे ऋषभ ६३ ॥ ततक्षिण उठ आयो तिहा, सुता छे बापने माय ॥ सुणीजे ॥ लोभ वशे निर्दय थको, दीनी छे आग लगाय ॥ सुणीजे ऋषभ ६४ ॥ दुष्ट हणिया मा बापने, अनर्थ कीदो अपार ॥ सुणीजे ॥ दोहु मरी जुगल्या यथा, उत्तर कुरू अवतार ॥ सुणीजे ॥ ऋषभ ६५ ॥ देव थया भव आठ में, पहिला स्वर्ग मझार ॥ सुणीजे ॥ पूर्व विदेह नव में भवे, उपनो वैद्य कुवर ॥ सुणीजे ऋषभ ६६ ॥ नाम जीवा नद थापीयो, करतो पर उपकार ॥ सुणीजे॥ राजादिक ना सुत भला, मित्री है तेहने चार ॥ सुणीजे ऋषभ ६७ ॥ पाचमो मित्र सेठ को, कैशव नाम कुवार ॥ सुणीजे ॥ श्रीमती को जीव जाणजो, होसी श्रीयॉस कुवार ॥सुणीजे ऋषभ६८ ॥ इतने तो विरचत आईया, कीट सहित अणगार ॥ शुणीजे ॥ मुनि तन मित्र देखने, उपनी करूणा अपार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ६९ ॥ पांचों मित्र कहे वैद्य ने, येह मुनि को दुख टार ॥ सुणीजे ॥ इससे मोटो फिर जगत में, और कैसो उपकार ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७० ॥ ओषधी है सब मुझ कने, तीन वस्तु की चाय ॥ सुणीजे ॥ तेल चन्दन ने कामली, देसू रोग मिटाय ॥ सुणीजे ऋषभ ॥ ७१ सेठ ने जाचयो जायने, बात कही सब खोल ॥ सुणीजे ॥ दीनी ते तुरत निकाल के, तीनों ही वस्तु अमोल ॥ सुणीजे ऋषभ ७२ ॥ लक्ष औषधी तेल चोपड्यो, रतन कवल दीनी वींट ॥ सुणीजे ऋषभ ७३ ॥ मुआ कलेवर सायने, कीट सभी धर दीध ॥ सुणीजे ॥ बावन च दन चर्चीयो, तीन दफे इम कीध ॥सुणीजे ऋषभ ७४ ॥ वेद जीवा नद मुनि तणों, कीदो निरोगो तन्न ॥ सुणीजे ॥ मोटो लाभ कमोवियो, लोग कहे धन्न धन्न ॥ सुणीजे ऋषभ ७५ ॥ फिर छहु मित्री साथ में, लीनो सयम भार ॥ सुणीजे ॥ दस में भव हुवा देवता, बारमा स्वर्ग मुझार ॥ सुणीजे ऋषभ ७६ ॥ विजय भली पुख्लावती, पूर्व महा विदेह माय ॥ गुणीजे ॥ पुडरी गणी नगरी भली, वज्रसेण तिहा राय ॥ सुणीजे ऋषभ ७७ ॥ तीर्थंकर पद सहित छे, धारणी तस पटनार ॥ सुणीजे ॥ ते सुर चविते हनी कुख में पुत्र पणे अवतार ॥ सुणीजे ऋषभ ७८ ॥ वज्र नाभ बाहु सु बाहु पीठ महापीठ ॥सुणीजे॥ ज्येष्ट पुतर चक्रवृत छे, होसी ऋषभ भगवत ॥ सुणीजे ऋषभ ७९ ॥ श्रीमती को जीव

ऋषभ १०० ॥ भरत अने ब्राह्मी हुवा, दोनों भगनी भ्रात ॥ सुणी० ॥ बाहुबली अन सुन्दरी, सुनदा का अग जात ॥ सुणी० ऋषभ १०१ ॥ सुमगला फिर जनमीया, जोडला गुण पचास ॥ सुणी ॥ ऋषभ जी के दो बेटिया, सब सुत दोय पचास सुणी ऋषभ १०२ ॥ दो दस लाख पुरब लगे, कवर पदे रया आप ॥ सुणी ॥ त्रेसठ लाख पूरब लगे, भोगवियो राज प्रताप ॥ सुणी ऋषभ १०३ ॥ लाख पूरब बाकी रया, दियो भरत ने पाट ॥ सुणी ॥ बाकी निन्याणु पुत्र ने, राज दियो सब बाट ॥ सुणी ऋषभ १०४ ॥ वर्षी दान देई करी चार सहस्र परिवार ॥ सुणी ॥ चेत्र विदी नवमी दिन, तीनो सयम भार ॥ सुणी ऋषभ ॥ १०५ ॥ वर्ष दिवस ने पारणो, ऋषभ त्रिलोकी नाथ ॥ सुणी ॥ इखु रस को कियो पारणो, श्री यांस कुवर जी के हाथ ॥ सुणी ऋषभ १०६ ॥ सहस्र वर्ष छद मस्त रया, निश दिन निर्मल ध्यान ॥ सुणी ॥ फागुण वदि एग्यादशी, उपनो केवल ज्ञान ॥ सुणी ऋषभ १०७ । केवल महिमा सुर करे हो रया जय जय कार ॥ सुणी ॥ दो विधि धर्म बतावियो, थाप्या तीरथ चार ॥ सु. ऋषभ १०८ ॥ चोरासी सहस्र मुनि हुवा, चौरासी हुवा गणधार ॥ सुणी ॥ तीन लाख हुई आरज्या, केवली वीस हजार ॥ सुणी ऋषभ १०९ ॥ तीन लाख श्रावक हुआ, ऊपर पांच हजार ॥ सु ॥ पाच लाख हुई श्राविका, ऊपर चोपन हजार ॥ सुणी. ऋषभ ११० ॥ चार सहस्र साडासात से चवदा पूरव का धार । सुणी० ॥ बारा सहस्र छसो पचास, वादी हुआ अणगार ॥ सु० ऋषभ १११ ॥ वीस सहस्र छसो ऊपर, वेक्रय लब्धि का धार ॥ सु० बारा सहस्र छसो पचास, विपुल मनीनाधार ॥ सु० ऋषभ ११२ ॥ बावीस सहस्र नवसो मुनि, गया अणुत्तर विमान ॥ सुणी० ॥ साठ सहस्र साधु साधवी, पहुँता ते निर्वाण ॥ सुणी० ऋषभ ११३ ॥ महि मडल माही विचरता, करता पर उपकार ॥ सु० ॥ केईक गया मोक्ष में, केईक स्वर्ग मुझार ॥ सु० ऋषभ ११४ ॥ आदेश्वर आखिर समय, लाख पूरव सयम पार ॥ सु० ॥ अष्टा पद गिरी ऊपरे दस सहस्र मुनि परिवार ॥ सु० ऋषभ ११५ ॥ पल्यका सण बेठ थका, छे दिन के उपवास ॥ सु० ॥ महा विदी तेरस के दिने, मुक्ति मे कीनो निवास ॥ सु० ऋषभ ११६ ॥ पचास लाख क्रोड सागरनो, शाशण स्वामी रो जाण ॥ सुणी० ॥ पाट असख्य मुगती गया, सूत्र वचन परिमाण ॥ सु० ऋषभ ११७ ॥ दान दिया से सुपात्र ने, मिट जावे तस सब दुख ॥ सु० ॥ आदेश्वर जी की परे, अधिक अधिक पावे सुक्ख ॥ सु० ऋषभ ११८ ॥ साधु सतियादिक से करू, विनती वारम्वार ॥ सु० ॥ ओछो अधिको जो हुवे, लीजो आप सुधार ॥ सु० ऋषभ ११९ ॥ श्री श्री गुरु नन्दलाल जी, खुश होकर मनमाय । स० । हुकम दियो तब जावरे, कीनो चोमासो आय ॥ सु० ऋषभ १२०।

जगशी से साठ चौवीस में भापि पंचमी गुरुवार॥ सु खोमे॥ जोड़ी ऋषभ भवन्तरि ऋषभ परित्र अनुसार॥ स० ऋषम १२१॥

॥ सागर सेठ ॥ (तर्ज पीरा म्हारा गजपकी उतरो) जम्बुद्वीपका भरतमें, नगरी पदम पुर माइभी। जितशत्र तिहां राजवी परजाने सुखकारी रे ॥ १॥ मानव लोम निवारिये लोम बुरो जग मांहीरे॥ मा० ॥ टेक॥ सागर सेठ तिहां वस, धन घणो घरमांहीरे। पुर सुथार सुहावणा कुलदीपक गुणमाहीरे॥ मा० २ पेटामी वहुचा विनीत छे, पाळ धर्मंथ पाइरे। मलप माहाली मस्प भाषबी सप घणो माहोमांहींरे॥ मा० ३॥ सागर सेठ लोभी घणा फाटो पहेरे लूगो ल्यायेरे, सुफतमें समझे नहीं, दान दिया पछतायेरे॥ म० ४॥ भाभूषण सब नवा, पहरण देवे नाइरे। पहरे तुरत खोलायसे, मेले मंजूष के मांईरे॥ मा० ५॥ एक दिन दिरतो शहरमें, द्वारे योगीश्वर आयारे। भूखा था तीन दिवस का। भोजन तास जिमारे॥ मा ६॥ प्रसन्न हुवो योगी तदा, दीनो मन्त्र सिखाईय। तीन दफे शुद्धियां थकी, चाहे तिहां आशा जाईरे॥ मा० ७॥ इतने सुसराजी आविया जीमत देख्यो समरे। कालो पीलो मन में थयो, देखो धर्म सुख्यो एनेरे॥ मा० ८॥ योगी तब चलतो भयो, वहुयाने कोसल्यो दीधोरे। तिण दिन सागर शठजी एक दफे भन सीधोरे॥ मा० ९॥ बहुवा मिलन मतो कियो, कहो आपण सु करवार। आवत खर्चे कबधो नहीं, खोसाधी दिवे नहीं करघोर॥ मा० १ ॥ मोटो काष्ट मंगायने, साफ कराय सजावेरे। मंत्र भणी उपर चढ़ें, जावे तिहां मन भावे रे॥ ११ ११॥ वनवासी पहाड़ां विषे नदियां सिंधू निवाणरे। मनमानी मोजांकरे सुसरोजी भेद न जाणेरे॥ मा० १२॥ एक दिन सुसरेजी देखियो, मर्म पल्यो मनमांईरे। वहुवा मिल किहां जायछे भाषे तुरत चलाइरे॥ मा० १३॥ काष्ट पड्या हुतो कोणमें, लोभी वीच्यने कोरांईरे। मांही सूतो सन्नो थको, हीमरी तास लगाईरे॥ मा० १४॥ पहर दिशा वाको रही, चारों दो मिलकर आइरे। सुसरोजी किहां सूतो हसे, शुभपुर देशो चलाइरे॥ मा० १५॥ विधि सांचर भारूढ हुई पहुंची गगन मझारीरे। रत्नद्वीपमांही आयने, दीनो काष्ट उतारीरे॥ मा० १६॥ चारोंही मिल रामत करे, स्वाद लेवे फल मीठारे। हासो निकरशो चारणे, विविध रत्न तिथ दीठारे॥ मा० १७॥ रत्न लिया मन मानिया, भरिया काष्ट मझ रैरे। आप सूतो तब सुकहमे, हिवड़े हर्ष ध्यारेरे॥ मा० १८॥ चारों ही आय स्वावसी काष्ठ पर्ई आरूढोरे। वेद यहां करणी नहीं, दुखो छे मति मुढोरे॥ मा० १९॥ तिमदीज निजघर चालतो, देशवमाँ दम बोलेरे। भारी थयो हास लाकड़ा, किम चाले हाथ होजेरे॥ मा० २०॥ एक कहे हम पालतां, रखे चलेलो चासेरे।

सुसरा को डर राखशो, वकले लोक सुणासेरे । मा० २१ ॥ वीजो कहै कुल देखने, मात पिता परणाईरे । सुसुरोजी करपण घणो, सुख देखणदे नाईरे ॥ मा० २२ ॥ तीजी कहे तरू पानडा, पाका थइ थइ खरियारे । रवि ऊगी ऊग आथम्यॉ, सुसराजी अजु नहीं मरियारे ॥ मा० २३ ॥ दोष कोहीने देवो नहीं, चोथी इम समभावेरे । कर्म शुभाशुभ जे करे, वे वैसा ही फल पावेरे ॥ मा० २४ पाट्यो व्यौपारी की जहाजनो, टूट पड्यो जलमाईरे । उदक हिलोल व्यनो थको, आतो दियो दरशाईरे ॥ मा० २५ ॥ जैठाणी कहे इण काएने, मूको समुन्दर माईरे । इण पाट्याका आधारथी, घर पहूचा त्तण माईरे ॥ मा० २६ ॥ डोसो कहै मुको मती, हू छूं इं छू इण माईरे । भय पामी चारू जणी, तुरत दियो छटकाईरे ॥ मा० २७ ॥ सागर सेठ समुद्र में मरकर नरक सिधायोरे । घरमें धन हुतो घणो, कहो तेने काम सु आयोरे ॥ मा० २८ ॥ तिण पाट्यापर वैठने, मंत्रीथी तुरत चलायोरे । वहुवा वहुची नीज घरे मनमान्यॉ सुख पायोरे ॥ मा० २९ । चारों ही पुत्र पिता भणी, जोयो न लाधो किहाईरे । नीज नीज नोरीने पुछियो, ने कहै होसी इहाईरे ॥ मा० ३० ॥ खाती आवी कहै खातथी, मुजथी काष्ट कोरायोरे । सायततीण मॉही होवसी, जोगे तो तेभी नहीं पायोरे ॥ मा० ३१ ॥ गयाहू से कोई देश में, इम धीरज मन धरियोरे । वाट जोई दिन केतला, जाण्यो आखिर मरियोरे ॥ मा० ३२ ॥ शोक मिट्यासे चोरों जणी, एकमतो करलीनोरे । वैराग्य भावे सतियां कने, सयम धारण कीनोरे ॥ मा० ३३ । पद्मपुरी का वाग में विचरता मुनिश्वर आयोरे । सागर शेठ का डीकरा, वदन काज सिधायारे ॥ मा० ३४ ॥ धर्म कथा सुण पुछियो, किहां वसै सुरू तातोरे । अतिशय ज्ञानी जिमहुती, तिम माड कही सब बातारे ॥ मा० ३५ ॥ क्रोधमान माया लोभये, चारो ससार वढावेरे । इनका सग छोड्या थका, भव भवमें सुख पावेरे ॥ मा० ३६ ॥ सागर सेठकी वारता, गुरु मुख से सुण पाईरे । तिण अनुसारे उमग से, जुगति जोग वनाईरे ॥ मा० ३७ ॥ उगणीसे साठ तेवीस में, पोश विधि दिन पाचेरे । खूबमुनि रतलाममें, ढाल जोडी एक साचेरे ॥ मा० ४८ ॥ अचम्भा का वच्चा ॥ ॥ दोहा ॥ प्रथम नमो गुरु देवने, गुरु ज्ञान दातार । गुरु चिंतामणी सारखा, आपे सुख सिरि कार ॥ १ शीलव्रत मोटो व्रत, भाष्यो गुरु दयाल । सब गुण की रक्षा करे, ज्यु सरवर जलपाल ॥ २ ॥ ढाल पहली तर्ज —लालरे चन्देरी पतिसूँ कहै ॥ जम्बुद्वीप का भरतमें, [illegible] सुस्थान, लालरे । राजलीला सब भोगवे जित [illegible] चान, लालरे ॥ १ ॥ पर रमणी सग पर ह । जो [illegible] चाहो सेण [illegible] ॥ पर ॥ टेक ॥ मन्त्री राज्य धुरघरु, सुबुद्धि नाम परधान ॥ ला ॥ निर्लोभी

देकर दण्ड करूर ॥ राजा ३७ ॥ देन करी निजग्राम में । नमि २ फिर लीजो योग जरूर ॥ राजा ३८ ॥ छोड असली चोरकू । विप्र२ नकली कु ण पकड़े जाय ॥ ढ्हाला ३६ ॥ असली चोर को वश किये । विप्र २ जो थे विषय कषाय ॥ ढ्हाला ४० ॥ आय नम्या नहीं आपन । नमि२ जो जो सबल सिरदार ॥ राजा ४१ ॥ उनको जाती वश करो । नमि२ तुम फिर होओ अणगार ॥राजा४२॥ शूर कहावे वो जगत में । विप्र२ जो जिते सुभट दशलाख ॥ ढ्हाला ४३ ॥ जिससे शूरो कोन है । विप्र २ थारी सुणता उगडे आख ॥ ढ्हाल ४४ ॥ दुर्जय पञ्च इन्द्रिय पुन । विप्र२ सबल क्रोधादिक चार ॥ ढ्हाला ४५ ॥ जो नर याने जीतियो । विप्र २ सो नर जीत्यो सब ससार ॥ ढ्हाला ४६ ॥ मोटो यज्ञ करो तुम्हे । नमि२ विप्र जिमावो स्वाम ॥ राजा ४७ ॥ दीजो करसे दक्षिणा । नमि २ किजो जक में नाम ॥ राजा ४८ ॥ दान कोई नर दे सके । विप्र १ कोई से दियो नहीं जाय ॥ ढ्हाला ४६ ॥ दोनों को संयम श्रेय है । विप्र२ मुक्ति तणो फल थाय ॥ ढ्हाल ५० ॥ घोराश्रम को छोड के । नमि २ कियो सोहिलाश्रम प्रेम ॥ राजा ५१ ॥ इनसे तो याहि रहेणो सिरे । नमि २ करणो कुछ व्रत नेम ॥ राजा ५२ ॥ मास मास तप जो करे । विप्र२ कुशाग्र सम अन्न खाय ॥ ढ्हाला ५३ ॥ सम्यक् श्रद्धाबिन जीवड़ो । विप्र २, तिरणो हुवे कभी नाय ॥ ढ्हाला ५४ ॥ हिरण सुवर्ण रत्नाकरी । नमि २, धनके भरया भण्डार ॥राजा ५५॥ चतुरग सैना वढायने । नमि २, फिर होवो अणगार ॥ राजा ५६ ॥ धन थोडो तृष्णा घनी । विप्र २, जैसे नहा आकाश को अन्त ॥ ढ्हाला ५७ ॥ लोभी नर धापे नहीं । विप्र २, अग्नि सिंधु को दृष्टान्त ॥ ढ्हाला ५८ ॥ इण कारण तृष्णा घनी । विप्र २, मै धारलियो सन्तोष ॥ ढ्हाला ५६ ॥ तप सयम धन साधु के । विप्र २, पूरण भरिया कोष ॥ ढ्हाला ६० ॥ या योवन वय आप की । नमि २, ले ल्या वैराग्य से योग ॥ राजा ६१ ॥ घर वर जावोगा गोवरी । नमि २, देखोगा गृहस्थ का भोग ॥ राजा ६२ ॥ यह सुख राज सभालने नमि २, छोड़ासो मन मार ॥ राजा ६३ ॥ करजो काम विचारने । नमि २, फिर पश्चाताप न थाय ॥ राजा ६४ ॥ काम भोग दोऊ लोक में । विप्र २, मैं जाणु जहर समान ॥ ढ्हाला ६५ ॥ अभिलाषा भी जो करे । विप्र २, पावे दुरगति खान ॥ ढ्हाला ६६ ॥ प्रश्न दस पूरा हुवा । नमि २, दढता देख हर्षाय ॥ राजा ६७ ॥ प्रगट भयो सुर इन्द्रजी । नमि २ ब्राह्मण रूप मिटाय ॥ राजा ६८ ॥ कर जोडी स्तुति करे । नमि २, उत्तम बुद्धि निधान ॥ राजा ७१ ॥ शिव सुख पाजो साधु जी । नमि २, लोक में उत्तम स्थान ॥ राजा ७२ ॥ चरण नमि गुण गावतो । नमि २, इन्द्र गयो निज धाम ॥ राजा ७३ ॥ निर्मल संयम पालने । नमि २, मुनिवर मोक्ष मुकाम ॥ राजा ७३ ॥

पुरुषानजी पूरव भवा विदेह मोर। सुणीजे कोठागार नगर मको मुरवराजेग। महाराज सुणीजे ॥ ऋ ४ ॥ तिण घर, नोको नर का थमो धनमन नाम भूपाल। सुणजे ते रानी मरविसने घरे पुत्री हुई सुभ मास। सुणीजे ॥ ऋ ४१ ॥ गलि तिहां पट सवर घर में बहु सुख योग सुणीजे। स्र कमा गुण सोलवी विरा दुई के वर न योग सुणीजे ॥ ऋ ४२ ॥ नाम दियो सस श्रीमती मिलीया है कइ भूपाल सुणीज। निज मन्दन ए आवीयो, सुधरा जग भी पाल सुणीजे ॥ ऋ ४३ ॥ चक्रवती को जन्म गांठ पै, देखी सुर विगास। सुणीज मन मांही चिन्तित उपन्यो आग स्मरण ज्ञान। सुणीजे ॥ ऋ ४४ ॥ तिण वली त श्रीमती आवी पामी मनुष्य अवतार, सुणोजे। नवाज पति निरधारस्यू, लानो अभिग्रह धार। सुणीज ॥ ऋ ४५ ॥ ललितांग सुर तिहां उपनो, परियो भवन के बार, सुणोजे। देवी स्वयं प्रभा स्वयं प्रभा, करसी ते मुक भरतार, सुणोजे ॥ ऋ ४६ ॥ निज चित्र लीखीयो फलक प मामो सुर विमान सुणोज ते मांही निज निज भामवा चठा है भू अखि भाव सुणोजे ॥ ऋ ४७ ॥ ते देखा भवप सुर रचयो हो रहा भतर पान, सुणाज। पाविन्मार वाली रहा जावक ने देता दान सुणोजे ॥ ऋ ४८ ॥ चक्रवर्ती मजरानो ले रह्मो, जोही नरनार सुणीजे राज भवन मांही आवतां वज्र जग कु वर भी साथ सुणाजे ॥ ऋ ४९ ॥ वर्षी अस्सन ममाय मे जलुस जाति स्मरणवत सुणीज स्वयं प्रभा स्वयं प्रभा हम कयो कु वरी वाचयो मित्र कंम, सुणीजे ॥ ऋ ५० ॥ चित्र देखयो त कु वरजी हुओ अवसर भूपती पुत्रीने पूछयो विचार सुणज। तू कहे तो सगपण करा नहीं तो स्वयंवर धार सुणोजे ॥ ऋ ५१ ॥ तिण दिन वन कु वरो का भवन से स्वयंवर मंडप कीघ ॥ सुणीज ॥ कवरी वरयो तिण कु वरने हुवो मनोरथ सिद्ध ॥ सुणजो जे ॥ ऋ ५२ ॥ अवसरते निधीपति, श्री भवी पुत्रा प्रधान ॥ सुणीज ॥ सुरत ब्याही तिण कु वरने, महोत्सव कर महाराज ॥ सुणीज ऋ ५३ ॥ तिण दीना अविचयो भव त विदा कर दोध ॥ सुणीज ॥ पुत्री पहुँचाई सासरे, बहुविधि शिक्षा दीध ॥ सुणीजे ऋ ५४ ॥ वायचो सायवी सुवर्ण जंग नरेश ॥ सुणीजे ॥ रग विलास होतोधको, आवीया आपसे देश ॥ सुणीजे ऋषभ ५५ ॥ निज यो लइ निज जग महाराज ॥ सुणीजे ॥ संयम ले कर्म काटने मोक्ष सिधास्या जाय ॥ सुणीजे ऋषभ ५६ ॥ कंवर ने राज दई करी सुवर्ण ॥ सुणीज ॥ निशदिन रहे वैराग्य में, जाण्यो अनित संसार ॥ सुणोजे ऋषभ ५७ ॥ राज पाल वज्र जग हिवे, श्रीमती छ पटनार ॥ सुणीजे ऋषभ ५८ ॥ मध्य रात्रि राणी मस्य, इम भासे महाराज ॥ सुणीज

लीजो योग जरूर ॥ राजा ३८॥ छोड असली चोरकू
देकर दण्ड जरूर ॥ राजा ३९ ॥ दान करो निज ग्राम में । नमि २ ... लीजो योग जरूर ॥ ... विप्र २ जो थे विषय कषाय ॥ ढ्हाला ४० ॥ आय
। विप्र२ नकली कु ण पकड़े जाय ॥ ढ्हाला ३६ ॥ असली चोर को वश किये । विप्र २ जो थे विषय कषाय ॥ ढ्हाला ४० ॥ आय
नम्या नहीं आपन । नमि२ जो जो सबल सिरदार ॥ राजा ४१ ॥ उनको जाती वश करो । नमि२ तुम फिर होओ अणगार ॥राजा२॥
शूर कहावे वो जगत में । विप्र२ जो जिते सुभट दशलाख ॥ ढ्हाला ४३ ॥ जिससे शूरो कोन है । विप्र २ थारी सुणता उमडे आख
॥ ढ्हाल ४४ ॥ दुर्जय पञ्च इन्द्रिय पुन' । विप्र२ सबल औदारिक चार ॥ ढ्हाला ४५ ॥ जो नर याने जीतियो । विप्र २ सो नर जीत्यो
सब ससार ॥ ढ्हाला ४६ ॥ मोटो यश करो तुम्हें । नमि२ विप्र जिमावो स्वाम ॥ राजा ४७ ॥ दीजो करसे दक्षिणा । नमि २ किजो
जक्त में नाम ॥ राजा ४८ ॥ दान कोई नर दे सके । विप्र १ कोई से दियो नहीं जाय ॥ ढ्हाला ४९ ॥ दोनों को संयम श्रेय है । विप्र२
मुक्ति तणा फल थाय ॥ ढ्हाल ५० ॥ घोराश्रम को छोड के । नमि २ कियो सोहिलाश्रम स प्रेम ॥ राजा ५१ ॥ इनसे तो याहि रहेणो
सिरे । नमि २ करणो कुछ व्रत नेम ॥ राजा ५२ ॥ मास मास तप जो करे । विप्र२ कुशाग्र सम अन्न खाय ॥ ढ्हाला ५३ ॥ सम्यक्
श्रद्धाविन जीवड़ो । विप्र २, तिरणो हुवे कभी नाय ॥ ढ्हाला ५४ ॥ हिरण सुवर्ण रत्नाकरी । नमि २, धनके भरद्या भण्डार ॥राजा ५५॥
चतुरग सैना वढायने । नमि २, फिर होवो अणगार ॥ राजा ५६ ॥ धन थोडो तृष्णा घनी । विप्र २, जैसे नहा आकाश को अन्त ॥
ढ्हाला ५७ ॥ लोभी नर धापे नहीं । विप्र २, अग्नि सिंधु को दृष्टान्त ॥ ढ्हाला ५८ ॥ इण कारण तृष्णा घनी । विप्र २, मैं धारलियो
सन्तोष ॥ ढ्हाला ५९ ॥ तप सयम धन साधु के । विप्र २, पूरण भरिया कोष ॥ ढ्हाला ६० ॥ या योवन वय आप की । नमि २, ले
रया वैराग्य से योग ॥ राजा ६१ ॥ घर घर जावोगा गोचरी । नमि २, देखोगा गृहस्थ का भोग ॥ राजा ६२ ॥ यह सुख राज सभालने
नमि २, छेहलो मन मांय ॥ राजा ६३ ॥ करनो काम विचारने । नमि २, फिर पश्चाताप न थाय ॥ राजा ६४ ॥ काम भोग दोऊ लोक
में । विप्र २, मैं जाणु जहर समान ॥ ढ्हाला ६५ ॥ अभिलाषा भी जो करे । विप्र २, पावे दुरगति खान ॥ ढ्हाला ६६ ॥ प्रश्न दस पूरा
हुवा । नमि २, दृढता देख हर्षाय ॥ राजा ६७ ॥ प्रगट भयो सुर इन्द्रजी । नमि २ ब्राह्मण रूप मिटाय ॥ राजा ६८ ॥ कर जोडी स्तुति
करे । नमि २, उत्तम बुद्धि निधान ॥ राजा ७१ ॥ शिव सुख पाजो साधु जी । नमि २, लोक में उत्तम स्थान ॥ राजा ७२ ॥ चरण नमि
गुण गावतो । नमि २, इन्द्र गयो निज वास ॥ राजा ७३ ॥ निर्मल सयम पालने । नमि २, मुनिवर मोक्ष मुकाम ॥ राजा ७३ ॥

सुखाय कदापि रे ॥ यह ८ ॥ इम कही नीज मंदिर गयो, सब का मन हुलसायो रे । दिनभर सुन्दर बाग की, सहल करी इहाँ आयो रे ॥ यह ९ ॥ ते दिनथी नृप छोडियो, पर नारी नो सगोरे । श्री मती पण मोटी सती, राख्यो शील सुचंगो रे ॥ यह १० इमसुण मानव जाणजो, पररमणी निज माता रे इज्जत धन बणियो रहे । पावोला सुख साता रे ॥यह ११॥ श्रीश्री गुरून्दलालजी ज्ञाननिधि जगमा हीरे । तस शिष्य खुब मुनी कहै शील सदा सुखदागीरे ॥ यह १२ ॥ गाँव लशाणी मेवाडमें, उगणीसे अस्सीके सालरे । फाल्गुण शुदि अष्टमी पूर्णकरी पत्र ढालरे ॥ अमर सेन वीर सेन चरित्र ॥ दोहा ॥ पार्श्वनाथ प्रणमु सदा, वामा देवी नद । नित्य समरण करता थका, पावे चित आनद ॥ १ ॥शरण ग्रही जिन राज को, कहूँ कथा विस्तार । अमर सेन वीर सेनजी, किम पाया भवपार ॥ २ ॥ दोथे लडक ग्वाल के, दुखिया दीन अनाथ । हस्तिन पुर में आविया, दोनो भाई साथ ॥ ३ ॥ उन नगरा क मायने, श्रावक रहै जिन दास । दया भावकरी तेह ने, राख्या दे विश्वास ॥ ४ ॥ ढ ल १ ली ॥ चाल— चन्द्रगुपत राजा सुणो ! । एक भाई वनके विषे, वाछरू लेईने जावे रे । साथे बाँधे सू कडी, साँझ पड्या घर आवे रे ॥ १ ॥ चतुर सनेही सांभलो ॥ टेक ॥ दूजो भाई घर रहै, करे भोलायो कामो रे । रात दिवस मननी रली सुखे रहै आठों यामो रे ॥ च २ ॥ श्रावक मात पिता जैसो, निज गुण माहे वलियो रे । साधु तणी सेवा करे, जिन वाणी को रसियो रे ॥ च ३ ॥ कोइक दिन के आतरे हस्थिनापुर के माँही रे । साधु सुपात्र पधारिया भद्रिक भाव सदाई रे ॥ च ४ ॥ श्रावक सुन मन हुलस्यो, वदन काज सिधावे रे, दोनों लडके ग्वाल के, साथ लायो चित चावे रे ॥ च ५ मुनिवर दानी देशना, भाख्यो तप अधिकार रे । तपस्या से कर्म क्षय हुवे, विपत नसावन हार रे ॥ ६ ॥ श्रावक सुण उपदेशना, हिवडे हर्ष भरायो रे । वदना कर मुनिराज ने सेठ निज घर आयो रे ॥च ७॥ दोनों भाई बैठारया, मन में ऐसा विमासो रे । इन्द्र धनुष तरु पान ज्यों, है इस तन का तमासो रे ॥ च ८ ॥ कर जोड़ी उभा हुवा, आया मुनिवर पास रे । गुरु मुख से भावे करी पचक्ख लियो उपवास रे ॥ ९ ॥ श्रावक कहै अरे बालूडा, बहुत लगाइ देर रे । भोजन यह जिमो तुम्हें, हुई अब या अवेल रे ॥१०॥ आज हम है उपवासिया, तब शेठ कहै शुद्ध भाव रे । दान दीजो निज हाथ सूं, जो मुनिवर यहाँ आव रे ॥ ११ वाट जोवे दोनो जणा, तिण अवसर मुनिराया रे । मास खमण के पारणे, फिरता वहां ही आया रे ॥ १२ ॥ एक स्थाने आई मिल्या, त्रित्त, वित्त, पात्र तीनों रे । मुनिवर के चाहै जैसा, दान भावे करी दीनों रे ॥ १३ ॥ पड़त ससारी दोनों हुवे, दीनी दुरगत टाल रे ॥ १४ ॥

गात्र धूजे अति कपे नृपति देख विमासु रे ॥ दे० ७ । भिन्न भिन्न कारण नरपति पूछे होवे सो कहो मुझ साचा र । शका मन म मूल न राखो, होवेगा सब आछा रे ॥ दे० ८ ॥ ऐसा वचन सुणी महाराणी, कहवे भूपति आगे रे । सॉच कहा लज्जा मुझ आवे, बात आछी नहीं लागे रे ॥ दे० ६ ॥ शपथ दिलाई आपणी राजा, तब राणी इम भाखे रे । मेलवणी लागे कर दधी, सब साची कर दाखे रे ॥ दे० १० ॥ प्रेमला राणी की कुक्षि का जाया, अमर सेन वीरसेनो रे । योवन में कछु नही सूजे, विषय अंध सु केणोरे ॥ दे० ११ ॥ दोनों श्वान ज्यों दोडी ने आय, तत्क्षण बिलग्या आईरे । तब मैं कूॅक करी अति गाढ़ी, कौन सुणे महेल माही रे ॥ दे० १२ ॥ शरम न आई माता केरी दूजा से किम चूके रे । इण ने राख्या शोभा नही होवे, कुल मर्यादा मूके रे ॥ दे० १३ ॥ रहवी घाता हुई अण जुगती, मूढों कैसे बताऊ रे । पृथ्वी फटे तो सुणो हो साहब, मॉही उतर जाऊ रे ॥ दे० १४ । तिणवेलॉं सावधान न होती, तो होती मुझ ख्वारी रे । मरण भलो पर शील न खण्डु, एहवी दृढता धारी रे ॥ दे० १५ ॥ इणरो नो महेला माही रेणो, यह वाता फिर होसी रे । तो मुजने जीणो नहीं जुगतो, भलो मरण ति होसी रे ॥ दे० १६ भूपति वाना सुणी अति कोप्या, कीजे कौन उपायो रे । इण कुवरा को अब कॉई कर वो, सो मुझ राह बताओ रे । दे १७ ॥ जो इच्छा हो वही करो साहब, आलो चाहे एहने पालो रे । खूब मुनि कहै पुण्य कुवर का या हुई तीजी ढाली रे ॥ दे० ८ ॥ ढाल । ४ थी ॥ चाल चेतन मोरा रे ॥ कोप करी ने आवियो रे, राज सभा में भूपाल ॥ चेतन मोरा रे ॥ चाकर पुरुष पठाय ने रे, तुरत बुलायो चण्डाल । चेतन मोरा रे । १ ॥ पुण्य सहाय करे तेहनी रे ॥ टेक ॥ निरणो न कीधो नरपति रे, ना कुछ सोची बात चेत ॥ हुकम दियो चण्डाल ने रे, छाई अन्धेरी रात ॥ चेत ॥ पु २ ॥ अमरसेन वीरसेन ने रे ले जाओ विपन मझार ॥ चेत ॥ मर्म पड़े नहीं तेहने रे, दया न आणो लगार ॥ चेत ३ ॥ दोनो का शीष उतारने रे, लाओ हमारे पास ॥ चेत ॥ देखू नजर पमार नेरे, तब मुज हो विश्वास ॥ चेत पु० ४ ॥ वात सुणी चण्डालनी रे, थर थर कम्पी काय ॥ चेत ॥ निर्णय किया विना नरपति रे, के सो करे अन्याय ॥ चेत ॥ पु० ५ ॥ भूपति आज्ञा जाणनेरे, कियो वचन प्रमाण ॥ चेत ॥ अमरसेन वीरसेन जी रे, तुरत लिया वाको ताण ॥ चेत ॥ पु० ६ ॥ कुंवर कहै कारण कहोरे, कहो भाई तुम वात ॥चेत॥ कहा लेजाओ हम भणी रे, कैसे ग्रहयो मुज हाथ ॥ चेत पु० ७ ॥ श्वपच कहै कुवार ने रे, नहीं छे मारो दोष रे ॥ चेत ॥ कुण जाणे कारण किसो रे, राजा कियो है रोष ॥ चेत पु० ८ ॥ खेचातांण करता थका रे, ले गया

वन के मांय ॥ चेत ॥ कुवर कहै मारा तातजी रे, तांये यह कैसा अन्याय ॥ चेत ॥ पु ९ ॥ कुवर कहै यएकात मे रे, तुम वनो शीतल्य सागार ॥ चेत । हुकम बजावणा बाँप रो रे, मुक्ता नहीं पकर ॥ चेत पु० १० । आंसु पडै देवली आंख था रे उपजी कृपा की रेस ॥ चेत ॥ बीपता रनु तुम मती रे, आमा पडे तुम्हें परदेश ॥ चेत ॥ पु० ११ ॥ धीरज धीनी देहले रे, मत करो सोच लगार ॥ चेत ॥ चाकरी कहे कर जोड़ मर नया जन्म का तुम दातार । चेत ॥ पु १२ ॥ दिनकर ने रजनी पतिमा रे, शपथ दिखाई स्वयमेव ॥ चेत ॥ कोल वचन गजो कियो रे, पर लाग्यो तत्क्षण ॥ चेत ॥ पु १३ ॥ तिण वेळा मारी तबारे, शीष बनाया शोष ॥ चेत ॥ सूप कहै थोथी हाल मेरे नृप ने बताया सोच ॥ चेत ॥ पु १४ ॥ ढाल ५ वीं ॥ चाल—राजवियाने राज पियारो ॥ एक सरीखा मस्तक मीका, ऊपर रंग लगायो रे, राणकी पोई मदर मांही छीना एपथ निशा मे लायो रे ॥ १ ॥ देखो करम गति दोनों कुवर की ॥ टेक ॥ रात समय नृप बैठी झरोखे दोनों मस्तक लाई रे। चन्द्र प्रकाश में ऊभा रहकर, नजरे दीना दिखाई रे ॥ दे० २ ॥ मस्तक देखी नृप विशेखी पूछी बात अबाली रे। आय कही सब घटणा आगे, खुशी हुई महाराणी रे । दे० ३ ॥ मदेतर पायो निज पर आयो दोनों कुवर के पास रे। पहर निशा रह्यो दोनों मे काढ्यां, दोनों प्रति विश्वास रे ॥ दे० ४ ॥ कम्पिलपुर थी दो धर्मो भ्रा, वन कदम शोता आवे रे। साथे और कोई नहीं दूजो, हियो भर भर आवे रे ॥ दे० ५ ॥ दोनों भाई आपणा मन में, करता जाय विचारो रे। कर्डी कायों ने कोय पिछाणे, कोय करगा सारोरे ॥ दे ६ ॥ वीरसेन कहै अमरसेन न भाई तू मत रोवे र। कर्म कमाया भोगीयाँ छूटे, होनहार सोही होय रे ॥ दे० ७ ॥ हेतु जुगत कर गाव बधाया, दिवा न कायी माई रे। सुख न रहा तो दुख किम रहसी, सोचो तुम मन मांई रे ॥ ८ ॥ इम करता वन मांही आया आंबो देख्यो मारी रे। विश्रामा छाया मे काजे, दोनों भ्रात विचारी रे ॥ दे० ९ ॥ अन्यतमे दोनो भाई बैठा मनसुबो एम विचारी र। बारी बारी को पहरो देवाँ रात वितावाँ सारी रे ॥ दे १ ॥ वीरसेनजी पहेला सुता अमरसेन जी जागे रे। आप सुवो ने भाई जगायो दूजो पहर जब लागे रे ॥ दे० ११ ॥ वीरसेन भी पहेरो देता मन में एम विचारयो रे। तातजी हुकम दियो मारण को, कीनो नहीं निस्तारो रे ॥ दे० १२ ॥ कोण गति होसे अब आगे परदेशां के मांई रे। अमरसेन की करे रखवाली, अरति वस मन मांई रे ॥ दे १३ ॥ तिस तरुवर पर पक्षी बैठो, दम्पति अर्ध रैनी रे। सूप मुनि कहै पंचमी ढाले इच्छा पूरण होय देहमी रे ॥ दे १४ ॥ ढाल६वीं। चाल—धन २ तपसीजीरो।

अम्ब कोचर में सुवो सुवटी, हो के ॥ भवियन ॥ बोले पढ़वी वात परदेशी ये वापडा, होके ॥ भवियन ॥ स्या शिविर में रात के ॥१॥ सुख की सम्पति, हो के ॥ भवियन ॥ सुवटे दीनी लाय ॥ टेक ॥ इनके मन चिंता घणी, होके ॥ भवि ॥ तेहनो कोन विचार । सुवो कहै सुण रवना, हो के ॥ भ ॥ दुख नो छेह न पार के ॥ सुख २ ॥ तोती कहै अब पद्मना हो के ॥ भ ॥ दुख को दूर निवार । पंखी को भव पाय के, हो के ॥ भ ॥ सफल करो अवतार के । सुख ३ ॥ सुवो सुण ऊठ कर गयो, हो के ॥ भ ॥ तिण हिज वन के मांय गुठली दो तरुवर तणी, हो के । भ ॥ लायो तत्क्षण जाय के । सुख ४ ॥ सुवटे गुठली प्रेम से, हो के ॥ भ ॥ दी वीरसेन ने आय एक एक गुठली दोनों जणा, हो के ॥ भ । लीजो उर गट काय के ॥ सुख ५ ॥ गुण है यह पहली तणो, हो के ॥ भ ॥ लहे दिन सात में राज । प्रत्यक्ष गुण दूजी तणा, हो के ॥ भ ॥ सुधरे मनक काज के ॥ सुख ६ ॥ सूर्योदय मुंह धोवता, हो के ॥ भ ॥ कुल्लो करे तिणवार । जब देखें तब पान में, हो के ॥ भ ॥ प्रगट सुवर्ण दिनार के ॥ सुख ७ ॥ गुठली ले सुवटा थकी, हो के ॥ भ । राखी अपने पास । तुरत जगायो भ्रात ने, हो के ॥ भ ॥ हुवो अति प्रकाश के ॥ सुख ८ ॥ भाई ये गुठली भली, हो के ॥ भ ॥ सुवटे दी मुज लाय । प्रत्यक्ष गुण है यह थकी, होके ॥ भ ॥ इणमें संशय नाय के ॥ सुख ९ ॥ एक एक गुठली निगल ने, हो के ॥ भ ॥ मारग की शुद्ध नाय । अटवी गहन उजाड थी होके ॥ भ ॥ निकलया बाहिर जाय के ॥ सुख १० ॥ भ्रात कहै हुं थाकियो, होके ॥ भ ॥ कीजे कोन उपाय । विश्रामा लेवा भणी, हो के ॥ भ । बैठा मारग माय क ॥ सुख ११ ॥ रवि आयो मध्य भाग में, हो के ॥ भ ॥ तृषा भूख अपार । कोमलमुख कुमलावियो, हो के ॥ भ ॥ जावे दृष्टी पसार के ॥ सुख १२ ॥ क्षेत्रपाल सुर तेहने होके ॥ भ ॥ लीना तुरन्त उठाय । मिंगलपुर की सीम में, हो के ॥ भ० ॥ मेल्या गम कछु नाय के ॥ सुख १३ । नगरी का तब देखिया, हो के ॥ भ ॥ देखा तलाब विशाल । खूब मुनि कहै पूर्ण हुई, होके ॥ भ ॥ छट्ठी ढाल रसाल के ॥ सुख १४ ॥

ढाल ७ वीं ॥ चाल ॥ भ । धन मेतारज मुनि ॥ अमरसेन वीरसेनजी, बैठा सरवर पाल । भाई भूख लागी घणी, कांयं भोजन थाल ॥ १ ॥ भाई थे भक्ति करो ॥टेक॥ वीरसेन मुख धोवता, कीधो कुल्लो तिवार । ढेर पड्यो मुख आगले, गीणी पाँचसो दिनार ॥ भ २ ॥ प्रत्यक्ष परिचय देखियो, सुण सुण बाँधव आज । आज थकी दिन सात में, निश्चय मिलसी जी राज ॥ भ ३ ॥ जल्दी जाओ शहर में, लावो भोजन पाक । पेठा पकोड़ी पुड़िया, चोखी लाजो जी शाक ॥ ४ ॥ चोकस कर कर शहेर में, लाजो

ताजा जी मास। पिन मोक बिलमो मनी, भाजो फिर तत्काल ॥ म ५ ॥ वीर सेन इम सांभली लीनो हाथ में दाम। चाल्गो आप मिताय सु भाई ल्यो तिवठाम ॥ मा ६ ॥ नगरी मांहे पेसता मिली एक वेश्या नार। प दूगी मर दूसने, कीनो मम मे विचार॥ म ७ ॥ एम लेजाइ निज मेरे विसद्ध सुख अगार। विनती कर पीर सख न मांडी किमो तरकार ॥ म ८ ॥ यह मन्दिर यह मालिया सुम फो मुफ मरनार। शरम न राको साहिबा मैं हूं तुम घर नार ॥ ९ ॥ मोहे करो सुभ ऊपरे मानो दासी की अरदास पर महन शामा धरणी, रनमा दृढ विश्वास ॥ मा १ ॥ पातल्यो मन वीर सवको लेइपाको आवास गठड़ी देखी पास में बोली एमे पिमास ॥ ११ ॥ कपट करी मलोरा सहु लीनी अपने पास। अपना धन्न पतायिया उपजाव्यो विश्वास ॥ म १२ ॥ कुरमो करता राम से, प्रगठे पुत्र दिनार। वेश्या म सूपे महू मांगे उप दरबार ॥ म १३ ॥ वेश्या िपारे मर भलो कस्त सुख समान गृह त्देह म सात े गये सहु स मान मा १ ॥ ढाल ८ वीं ॥ चालरे जीया जिन धर्म कीजिये ॥ अंमरसेन वीर कपरे पैठे करत विचार। भाई किम आवो नहीं, पगे लागी अवार ॥ १ ॥ मोही पारे संसार में ॥ टेक ॥ के ो मारग मूलियो के काई हानो काम। कमाई लाधो मिल गयो, के कोई लोपो धाम ॥ मा २ ॥ सिंगलपुर इस शहर में, काई देखता तेय नहीं मिल ढूंढ़ कहां नहू दिखी ल्यो पे ओय ॥ मो ३ ॥ मात पिता वैरी हुवा, रखा की पी भाजा। आज भाई मरी हुओ मन होली काई हाल ॥ मो ४ ॥ कहती मर मन रोवतो, आसु वहे परनाल। भागति मनमें चलि पथी फिरे मरवर पाल ॥ मो ५ ॥ इम करतां संध्या पड़ी, कोई नाठ अथाग। रात गई तब देखवी, आयो नृप के बाग ॥ मो ६ ॥ मगम किपो तिस बाग में नूर्य रह्यो ते माल। उठ कर शीघ्र सिधाविपो आयो सरवर पाल ॥ मो ७ ॥ फल खाई दिन काढियो वीत्या इम दिन साव। राज मीस इण अवसरे मुआ जो अवराज वाल ॥ मो ८ ॥ सिंगलपुर को नरपति, राज भोगे वे सार। कर्म योगे गाडी वेदना व्यापी अंग मझार ॥ मो ९ ॥ वेश्या दूर निवार का, आम्या वेद अनूप। कोई दवा लागो नहीं, मृत्यु पायो नृप ॥ मो १० ॥ नृप केइ मेला हुवा, किणने दीजिये राज। सबही चहावे संपति, सीजे कयो किम काज ॥ मा ११ ॥ सबही मिल मतो किपो, मयंगल सज तत्काल। कुंभ कलश मस्तक ठवो, सूंड मही पुष्प माल ॥ मो १२ ॥ वाजित्तर बहु बाजता लोक हुआ बहुसार सिंगलपुर में होलावका, आया बाग मझार ॥ मो १३ ॥ गज आयो अति मलपतो, सूतो कुंवर ते ठाम। सूंड करीने जगाविपो, देखे

राजदेवा में तुज भणी, गला में नाखी पुष्पमाल ।. मो १५ ॥
खलक तमाम ॥ मो १४ ॥ कुवर जागी लागो भागवा, लोका ग्रह्यो तत्काल । ढाल ६ मो च ल—हरषी ३ प्रभुजी
महोत्सव कर मडाणथीं दोनो कुवर ने राज । खुब कहे ढाल आठमीं, सींज्या वछित काज ॥मो १६ ॥ गणिका अर्ज
का दर्शन निरखीजो॥ अमरसेन तो राज भोगवे, वीरसेन मोडो रागी । दोनो भाई एक शहर में, चिंता गई सहू भागी ॥ १ ॥
करे छे एम, मोंसु प्रपञ्च राखो केम ॥ टेक ॥ वेश्या एक दिन वीरसेन ने, बोले अमृत वाणी, परमेश्वर मुझ महेर करी सो, मीलिया
उत्ताम प्राणी, ॥ ग २ ॥ साहिब मुजने साच कहो तो, बात पुछूं एक थाने । जब मागु तब महोर पाचमे, किहा थकी तुम आने ॥ ग ३ ॥
बात न दूजी थाके मां के, गुपत पणो किम राखो । सुणवाकी अभिलासा मुजने जिम होवे तिम भाखो ॥ ग ४ ॥ वीरसेन तो भोलो ढालो,
भेद कछु नहीं पायो । इणने तो जिम है तिम कहैणो, सुख पायी चित्त चायो ॥ ग ५ ॥ वीरसेन वेश्या से बोले, वहु बात सब थाने ।
घन में एक पत्नी कृपा कर, गुठली दीनी म्हाने ॥ ग ६ ॥ तीण गुठली परभाव करीने मुख से महोरा पड़ती । जब लग गुठली रहे पेट में,
तब लग बाजी चढती ॥ ग ७ ॥ गणोका बोली सुण हो प्रीतम, बात कही मुज सारी । इ वातां मत कहो जो कीणने, कपट भरी छे नारी
ग ८ ॥ वेश्या मन में एम विचारे, यह गुठली मुजे लेणी । आस सहू मन वछीत पूरी, सीख अणी ने देणी ॥ ग ९ ॥ दुष्ट भाव वेश्या
मन आएयो, वीरसेण सु बोली । श्वान पीठ को प्यालो भरने, पायो शक्कर घोली ॥ ग १० ॥ वीरसेन ने वमन हुवो तव, गुठली निकली
बारे । तत्क्षण गुठली लीनी वेश्या, ते कहो केम निहारे ॥ ग ११ ॥ वेश्या बोली सुण हो साहिब, फिकर लग्यो अब मुजने । कोन दुष्ट की
नजर लगी सो, वमन हुवो छै तुमने ॥ ग १२ ॥ चूरण गोली अजमो लाकर, दियो खूब सतोषी । मन को भर्म मिट्यो नहीं सायत, करामात
और होसी ॥ ग १३ ॥ अहो निश राख्या मालुम पड से, हिवडा सोख न दीजे । खूब मुनि कहे नवमीं ढाले, यत्न एहना कीजे ॥ ग १४ ॥
ढाल १० वीं ॥ चाल—जिनन्दमाय दीठाओ स्वप्ना सार ॥ दिन उगा मुख धोवता जी, प्रगटी नहीं दिनार । आज जरूरत है घणी जी,
बोलो वेश्या नार ॥ १ ॥ चतुर नर वेश्या को सग निवार ॥ टेक ॥ कुंवर कहे अब कांई करू जी, गुठली नहीं उरमाय । छेय न दीजे मुज
भणी जी, सरण पड्यो तुज आय ॥ च २ ॥ वेश्या टटकीने, इम कहै जी, नहीं हमारे काम । मांगू तब आपो सदा तो, बैठा रहो इणठाम
॥ च ३ ॥ दया न आणी दुष्टणी जी, दीनों बाहर निकाल । आंसु भरे जिम बादली जी, आयो सरवर पाल ॥ च ४ ॥ रे बंधव तू किहां
गयो रे, कांई होसी मुज सूल । वेश्या मोह्यो मुज भणजी, तुजने गयो मैं भूल ॥ च ५ ॥ इम चिंता करता थका जी, गई है आधीरात

हात ॥ पिउड़ा । आप गया,मुझ छोडने, तिणरो सुण अवदात ॥ पिउडा ॥ वेग चालो करो मानता ॥ टेक ॥ समुद्र में देवी पूरणा जिनको बडो प्रभाव ॥ पिउडा ॥ बहु जन आवे जातरी, केई रङ्क केई राव ॥ पिउडा ॥ वे २ ॥ मैं भी लीनी मानता, जो मुझ मिल जावे कन्त ॥ पि ॥ तो हम दोनों आयने, करांगा पूजा हरषन ॥ ॥ ॥ पि ॥ वे ३ ॥ प्रत्यक्ष परिचय तेहनो, इन कारण से आप ॥ पि ॥ शीघ्र यहा से चालिये पावडियां प्रताप ॥ पि ॥ वे ४ ॥ वीरसेन इम बोलियो, इण कामे नहीं देर ॥ पि ॥ दिन उगा चाला सही, बनी रहे सब खैर ॥ पि ॥ वे ५ ॥ वीरसेन वैश्या दोनों, चालया समुद्र मांय ॥ पि ॥ पूरणा देवी के मन्दिर में, उतरे दोनों आय ॥ पि ॥ वे ६ ॥ वेश्या कहे सुनो वालमा, निमल मन वच काय ॥ पि ॥ इन देवी ने पूजलो, त्रिया भेटे नाय पी ॥ टे ७ ॥ वीरसेन खोल पांवड़ी, गया मन्दिर के माय ॥ पि ॥ पूरणा देवी के सामने, उभो शीष नवाय ॥ पि ॥ वे ८ ॥ सविधि पूजा करी तेहनी, धूप रयो है देव ॥ पी ॥ हाथ जोडने इम कहे, तू देवी स्वयमेव ॥ पि ॥ वे ९ ॥ शीश नमायो तिण समय, वेश्या देख्यो रग ॥ पी ॥ पहेर पावड़ियाँ पाव में, घर आई समुद्र उलग ॥ पि ॥ वे १० ॥ पूजा कर देवी तणी, चरणे शीश नमाय ॥ पी ॥ वीरसेन आयो बारणे, वेश्याने देखे नाय ॥ पि ॥ वे ११ ॥ पावड़िया भी दीसे नहीं, कदाचित कीनी तोल ॥ पि ॥ हेलो पुकारे तेहने, कहाँ गया तुम बोल ॥ पि ॥ वे १२ ॥ ढूंढी पण पाई नहीं कुवर हुयो दिलगीर ॥ पी ॥ रे दुष्टण यह कांई कियो, नेणा छूटो नीर ॥ पि ॥ वे १३ ॥ इतने विद्याधर एक आइयो, बाध से पूरण प्रेम ॥ पि ॥ ढाल हुई यह द्वादसमीं, खूब मुनि कहे एम ॥ पि ॥ वे १४ ॥ ढाल १३ वीं ॥ चाल-भाव धरी जिनवर दये ॥ विद्याधर विमाण में, बैठो है सुखदाई रे ऊपर होकर नीकल्यो, जानो महा विदेह मॉईरे ॥१॥ श्री मदिर स्वामी वदिए ॥टेक॥ कुवर का कष्ट प्रभाव से,विमाण थम्भ्यो गगनमें रे,तत्क्षण नीचे उतर्यो,प्रभुजी बसे तेहना मन में रे ॥ श्री २ ॥ कुवर से मीलियो आयने, पूछया सहु समीचारो रे । वीरसेन सब दाखियो, कर्म को दोष हमारो रे ॥ श्री ३ ॥ दुख से काढो स्वामी जी, कर मुझ पर उपकारो रे । गुण नहीं भूलू थांहरो, नया जन्म दातारो रे ॥ श्री ४ ॥ विद्याधर इम बोलियो, विदेह क्षेत्र में जासु रे । मनमें धीरज धारजे, पन्द्रह दिन में आशु रे ॥ श्री ५ ॥ वीरसेन इम, विनवे बात कहो मुझ सागेरे । जावो हो दर्शन कारणे, इतना दिन किम लागे रे ॥ श्री ६ ॥ श्री मदिर स्वामी पास में, यशोधर नृपनदारे । सहस्त्र पुरुष सग आदरे, सयम भार उमगो रे ॥ श्री ७ ॥ जो मन होवे थांहरो, चाल हमारे सग रे । जिन वाणी प्रभु दर्शन से, होवे पवित्र अग रे ॥ श्री ८ ॥

कुंवर कहै मांऊ रहीं, ओकगा वाट तुम्हारीरे। आयके वग संभाल ज्यो मतना आमो विसारी रे ॥भी ६॥ विद्याधर यों कह गयो, इन वह बीचे मत आमोरे इन तरू का फल खायको मार्ईभाग भेला ओ रे ॥ शीघ्र विद्याधर आयो,महो विरेद खेचरू माईरे जिमवरको कर महता बोडा वरिदरा म बाररे । भी ११ ॥ पन्द्रह दिन महात्सव देखने विद्याधर पाछो चलियो रे। तीय हीज द्वीप में आयके वीरसेन कुंवर से मिलियो रे ॥ भी १२ ॥ दिन दस तो मेला रया आखन का हुवे त्यारी रे इतने वीरसेन पूछियो, देखो इस तरू की संका मिवारी रे ॥ भो १३ ॥ इतने सू था वर हुवे मैं वरजा एम कामरे। इस तरूका फल सूखवा पिछो नर होवे ताजा रे॥ भी १४ ॥ दोनों ही फल स साथ म, तुरत विमान चलाया रे। सूर्य ऊगे वस तेरमी, कुंवर सिंगलपुर आयो रे॥ भी १५॥ ॥ ढाल १४ वीं ॥ चाल — दर्शी २ ए प्रभुजी का दर्शन मिरको रे॥ विद्याधर ता पाग में, महो पाछो तुरंत सिधायो। वीरसेन तत्क्षण ऊधम सिंगलपुर में आयो ॥ १ ॥ धरवा मन करेसे एम आंशु मौन करोजे कम ॥ टेक ॥ एक पथिक की हाटे बैठा चऊदिश कानी माहरे। इतने काम वसे मयोगे वरया निकसी बाहरे ॥ ये २। वेश्या देखा नम विचारे कहां कैसे यह आया। मैं तो जाव मारे समुद्र में है यह आश्चर्य सवाया ॥ ये ३॥ इसके पास कोई उदि हुवेगा आप कहू नर मांई। वीरसेन के सन्मुख आकर ऊभी शीप नमाई ॥ ये ४ ॥ पिऊजी मांथु मुझने बोल्यो कैसे थने उ रांसा मैं ता निशदिन याद करतो तामा समझा मुझको बोसी ॥ ये ५ ॥ अन्न पाणी मने नहीं लागो सिर म्हारे तुम माई। फूल समान या कोमल काया तुम बिन रहा कुम्हलाई ॥ये ६॥ पू पट काढ कुंवर मन आगल, नेणा आंसु नास सांची बात सब कही सो साहिब, मन में मम कांई थाके ॥ ये ७ ॥ सागल थे हम आय १ होबा, पावड़िया लेआई। मस्तक ऊपर ताम धिराजे करू केम कपटाई ॥ ये ८ ॥ आप गया देवी पूजन का, मैं ऊभी थी एक किनारे। ईतन एक विद्याधर आवो पावड़ियां पर दृष्टि डारे॥ ये ९ मैं जाणो शायद स आसी, कीनी कर छु मागी। तदपि म्हारोने नहि मागो मैं तस कहु सागी॥ ये १० ॥ शीघ्र चाल समुद्र में डालियो मैं पण हिम्मत राखी। सिंगलपुर ऊपर होई आता पायो मुझने नाखी ॥ ये ११ ॥ तुम बिन मन्दिर सुना लागे, जिम विन जीव काती। पंखो जिम पांखा होती तो तुरत उडीन आती ॥ ये १२ ॥ इस कारण य साची साहिब, झूठ रती मत आणो, इण वाता में झूठ होवे तो सोगन मुझने काणो ॥ ये १३ ॥ उठो चाला महेल आपणे। वीरसेन मन हरख्यो। झूठ मुनि कहे ढाल चवदमी, देख्या परम राख्यो ॥ ये १४ ॥ ढाल १५ वीं ॥ चाल — पावड़ी पति सु कहै ॥ जिन कीतना एक निकस्या, एक

॥ भवियण ॥ १ ॥ पिऊजी प्रीत निभाइये ॥ टेक ॥ वीरसेन को
दिन वेश्यानार ॥ भवियण ॥ देखी वस्त्र की गांठडी, कीनो मन विचार ॥ भवियण ॥ पि २ ॥ गाठ बधी छे वस्त्र की, मुजको बताई
पूछियो, साहिब चतुर सुजान ॥ भ ॥ मैं प्रछन्न राखू नहीं, आप कपट की खान ॥ भ ॥ पि ३ ॥ वनिता उतावल मत करो, लायो छू तुम काज ॥ भ ॥ इतना
नाय ॥ भ ॥ काई वस्तु है इण मांई, साँच कहो मुज ताय ॥ भ ॥ पि ४ ॥ फूल बतायो खरतणो, वेश्या प्रसन्न भई देख ॥ भ ॥ क्या गुण है इस पुष्प में, मुजने
दिन, भूली गयो, थोड़े बताऊ आज ॥ भ ॥ पि ४ ॥ फूल बतायो खरतणो, वेश्या प्रसन्न भई देख ॥ भ ॥ जरा कभी आवे नहीं, नित्य योवन वय रहाय ॥ भ ॥
बताओ विशेष ॥ भ ॥ पि ५ ॥ वीरसेन इम बोलियो, इण में बहु गुण दर्शाय ॥ भ ॥ जरा कभी आवे नहीं, नित्य योवन वय रहाय ॥ भ ॥
॥ पि ६ ॥ इणने सूघू साहबा, भलो करी मुज महेर ॥ सूघो एकांत जायने, मती लगाजो देर ॥ भ ॥ पि ७ ॥ वेश्या सूघ्यो फूलने,
खरी बनी तत्काल ॥ भ ॥ लेकर घोटो हाथ में कुवर आयो तिहा चाल ॥ भ ॥ पि ८ ॥ दे दे मार काढ़ी बाहरणे, लायो खास बजार
॥ भ ॥ कौतूहल देखन कारणे, भेला हुवा नर नार ॥ भ ॥ पि ९ ॥ निर्दय यह कुण मानवो, कुटेछे इण ठोड़ ॥ भ ॥ दूजी वेश्या मिल
दरबार में, अर्ज करा कर जोड़ ॥ भ ॥ पि १० ॥ परदेशी कोई मानवी, कीनो जबर अन्याय ॥ भ ॥ मुज मालिका हुई रासभी, चोड़े
कूट्या जाय ॥ भ ॥ पि ११ ॥ भूप कहै कोतवाल ने, कौन पुरुष यहो आज ॥ भ ॥ राज सभा में लावजो, दुष्ट करेछे अकाज ॥ भ ॥
॥ पि १२ ॥ कोतवाल चल आवियो, लोक करे बहु सार ॥ भ ॥ घोटा थी दूर खडो रयो, कांई न चल्यो जोर ॥ भ ॥ पि १३ ॥ कोत
वाल पाछो गयो, कह्यो भूपने जाय ॥ भ ॥ ढाल पन्नरमी यह हुई, खूब कहै दर्शाय ॥ भ ॥ पि १४ ॥ ढाल १५ वी ॥ चाल चदेरी पति
सू कहै ॥ अमरसेन नृप इम कहै सु नाम को हुवो कोतवाल ॥ भवियन ॥ तिणने जाय पकड्यो नहीं, मैं लाऊ जंजीर डाल ॥ भवियन ॥
१ ॥ बिछुडिया वाला मिल्या ॥ टेक ॥ भूप ऊठ चलियो सही, आयो मध्य बाजार ॥ भ ॥ रोष धरीने आकरो, साथे बहु नर नार ॥ भ ॥
॥ वि २ ॥ दूर से देख्यो नेन ते, मुझ बंधव वीरसेन ॥ भ ॥ वीरसेन भी ओलख्यो, चित्त में पायो चेन ॥ भ ॥ वि ३ ॥ तत्क्षण छोडी रास
भी, मिल्यो बाह पसार ॥ भ ॥ हर्ष न मावे अग में देख रया नर नार ॥ भ ॥ वि ४ ॥ यों कांई लागे भूप के, दुनिया करे बहुबात ॥ भ ॥
तुरत मंगाई पालखी, बैठा दोनों साथ ॥ भ ॥ वि ५ ॥ छत्र चवर होता हुवा, फरराता ऊँचा निशाण ॥ भ ॥ घर घर हर्ष वधावणा,
जाचक पाता दान ॥ भ ॥ वि ६ ॥ नजराणे आये बहु, ठोर ठोर अनर पान ॥ भ ॥ आज भलो दिन ऊगियो भाई मिलियो आन ॥ भ ॥
॥ वि ७ ॥ इतने वेश्यां सब मीली, अर्ज करी कर जोड ॥ भ ॥ कृपा कर मुझ नाथ जी, करो मनुष्यणी इण ठोड ॥ भ ॥ वि ८ ॥

उगणीसे पचास के जीऊपर छके साल । मालव देश मदसोर में जी, चौमासो सुखकार ॥ च १७॥ मुनि नदलाल जी दीपता जी, गुरुजी महा गुणवन्त । हुक्म दियो तब शहर मे जी, सुखे रया तान सत ॥ च १८ ॥ खुब कहे तुम साभलो जी, ये हुई सतरा ढाल । सुणे सुणावे प्रम मे जी, वरते मगल माल । च १६ ॥ (मनुष्य जन्म की दुर्लभता पर-दस दृष्टात-(तर्ज अरणक मुनिवर चाल्या गौचरा) दस दृष्टातरे नरभव - दोहीलो । ऐसो जिन फरमायोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे नर भव दोहीलो ॥ टेक ॥ कम्पिल पुरमेंरे, ब्रह्म नरेशनों चूलणी को अङ्ग जातोरे ॥ बारमो चक्रीरे राज करे तिहा । ब्रह्मदत्त नाम विख्यातोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥१॥ चूलणी पिता तेहनारे मु श्रो उस समे, ब्रह्मदत्त छोटोसो बालोर । बारी थापीने चार महिपति । करता राज सभालोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥२॥ जाणी राचीरे दग नरेश से । पुत्र लख रोप भरायोरे ॥ काक मरालीरे उनके पास में । वे नृप को समभायोरे ॥ दस दृष्टातेरे० ॥३॥ जननी ने सुत चाह्यो मारवा । काष्ट को महल बनायोरे ॥ कपट करीने सुत बधु दोनो को । महल में सयन करायोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥४॥ निर्दय होई ने आधि रात में । अगन पलीतो लगायोरे ॥ पहिले मन्त्रीश्वर सुरग बनावियो । तिणमेंहो कुवर सिधायोरे ॥ दस० ॥५॥ मत्री अपनोरे सुत साथेदियो । अश्वपे आरुढ होईरे ॥ कुवर सिधायोरे दूर देशान्तरे । मिलजुल रेहवे दोईरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥६॥ फिरता बनमेंरे कष्ट उठावता । एक दिन प्यास सतायोर ॥ व्याकुल देखीने कोइक विप्रने । शीतल नीर पिलायोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥७॥ जब में होउरे कम्पिलपुरपति । तू आजे मुज पासोरे ॥ जो मुखमाँगेगा सो तुज देवसु । दीनो वचन हुलासोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० चक्री हुओरे कुवर कालान्तरे । काम्पिल पुरनो वह नाथोरे ॥ स्वर्ग सरी खीरे भोगे साहिवी । दसदिश हुओ विख्योतोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥६॥ वचन दियोथोरे बनमे विप्रने । मुसीबत वक्त के मायोरे ॥ आश धरीनेरे नरपति पासमे । विप्र तुरन्त चल आयोरे दस दृष्टान्तेरे० ॥१०॥ महिपति तूठोरे तब तिण मागियो । और न मुज दरकारोरे ॥ तुमधर खेलीरे जीमु घरघरे । एक एक भेट दीनारोरेर दस दृष्टान्तेरे ॥११॥ हुकम हुआसर जीमें घरघरें । ब्राह्मण मनमें विमासेरे ॥ फिर कब जिमुरे चक्रवरत घरे पहलो दिन कब आसेर दृष्टान्तेर॥ १२॥ सायत तेतोर भोजन मिल सके । सशय नहीं तिगोरोरे ॥ मनुष्य जमारोरे हारयो नही मिले । काल अनन्त मभारोरे ॥ दस द० ॥१३॥ यह प्रथम दृष्टात० ॥] चाणक मत्रीरे थोएक भूपके । भर सौनैयाकी थालोर ॥ एक एक सोनैयो मेले डावपै । फिर यह अपासो डालरे ॥ दस द० । १४॥ तीनों वेलार मानव साभलो । वही जो आवेलो अङ्कोर ॥ यह सब मोहरें में दूगा तुम भणी। राजा हो

पास बुलायने समझावे बहुभातोरे ॥ कोमल करड़ारे बचन कई कह्या । नहा मानी एक बातोरे ॥ दस दृष्टान्तेरे० ॥३४॥ कोपीत नृपहोय सुतने कादियो । रोवत तुरन्त सिधायोरे ॥ भूखे मरतारे कष्ट उठावतो । नगर बेनातट आयोरे ॥ दस दृष्टातेरे० ॥३५॥ बैठो सोचेरे देवल स्थान में । पूरब बात चितारो रे ॥ वणीमग सुतोरे उनके पास में । दोनो नीद्रा मझारो रे ॥ दस द० ॥ ३६ ॥ सुपनो देख्यो रे मिश्रित नीद में । निर्मल पूनम चादोर ॥ तत्क्षण जागिया दोनों साथ में । पाव अति आनन्दो रे ॥ दस दृष्टान्ते० ॥ ॥ ३७ वणीमग बैठारे निज मन सेती । स्वप्न अरथ इम कीधो रे ॥ रोटी मिलसी रे घी में गलगची । वैसे ही फल लीधोरे ॥ ॥ दस दृष्टान्तरे ॥ ३८ ॥ कुमर सिधायो रे पंडित ने घरे । पूछियो शीश नमाई रे ॥ पुन्यवन्त जाणीने ज्योतिषी ज्ञान में । निज पुत्रि परणाई रे ॥ दस द० ॥ ३९ ॥ खास जवाई रे हुओ तद पीछे । कह्यो अरथ हुलासो रे ॥ सात दिवस में रे तुम इण नगर नो । निश्चे ही भूपति थासो रे ॥ दस द० ॥ ४० ॥ भूप अपुत्रियो मरण ते पामियो । इम बोल उमरावोरे ॥ गज गल माला रे डाले तेहने । अपनो नाथ बनावोरे ॥ दस द० ॥ ४१ ॥ सब हाँ किधोरे तिणहीज कुमरने । माला गल बीच ठाईरे बाजा बाजेरे बहु आडम्बरे । दीनी राज बिठाइ रे ॥ दस द० ॥ ४२ ॥ वणीमग देखियो ते सुख भूपनो । मन में तब पिछतावे रे ॥ मैं पिण पाऊ रे एहवी साहबी । फिर सुपनो कब आवेरे ॥ ॥ दस द० ॥ ४३ ॥ सायत तेतोरे सुपनो ले सक । सशय नहीं लिगारो रे ॥ मनुष्य जमारो रे हारयो नहीं मिले काल अनन्त मझारोरे ॥ ॥ दस द० ॥ ४४ ॥ (यह छट्ठा दृष्टान्त) मथुरा नगरी रे राज करे तिहा जित शत्रु राजानो रे ॥ हे एक पुत्रि रे सुगुणो तहने । वल्लभ प्राण समानो रे ॥ दस द० ॥ ४५ ॥ प्रेम धरीन रे नरवर पूछीयो । बाई ! कहे इण बारो रे ॥ कहे तो मैं देखि सगपण करूं । स्वय वर धारो रे ॥ दस द० ॥ ४६ ॥ ज्यो मुज व्याहे रे चत्री वशना । साधे राधा वेदो रे । नहीं तो रहसु रे मैं ब्रह्मचारिणी । मुज मन यही उम्मिदोरे ॥ दस द० ॥ ४७ ॥ लिख लिख भेजी रे कुमकुम पत्रिका सब राजन सरदारो रे ॥ स्वयवर मडप है मुज बाईनो । कृपा करके पधारो रे ॥ दस द० ॥ ४८ ॥ जो जो राजन आये तहने । बहुविध कर सन्मानो रे ॥ बनायो मडप एक मनोहरू । जैसे स्वर्ग विमानो रे ॥ ॥ दस द० ॥ ४९ ॥ शुभ दिन मुहुर्त आदि दखिने । तेडाया सब राजानो रे ॥ मडप माही रे मीलिया भूपति । वैठा निज २ स्थानो रे ॥ ॥ दस द० ॥ ५० ॥ मजन करने रे कुवरी महल में । सजके सब श्रृङ्गारो रे ॥ निकली महल से रे सखिया साथ में । बाजीन्तर धुंकारो रे ॥ दस द० ५१ ॥ मडप माही रे कुँवरी आयने । बीच में स्थम्भ रोपायो रे । काष्ट की पुतली बीच में चक्र चलायो रे ॥ दस

गुरु मुख से रे शास्त्र सांभलो । श्रद्धा शुद्ध आराधो रे ॥ प्राकर्म करजो रे सयम धर्म में यह शुभ अवसर लाधो रे ॥ दस द० ॥ ७१ ॥ कोइक मोटो रे नगर सुहामणो,। तिण नो एक ही द्वारो रे ॥ कोपीत सुर होइ अग्नी लगाय दी । जनता निकस है वहारोरे ॥ दस द० ॥ ॥ ७२ ॥ वणीमग अधोरे ।फरतो शहर में । तेबोल्यो तत्कारोरे ॥ प्रथम निकालो रे मुजने वाहिरे । जाणी पर उपकारो रे ॥ दस द० ॥ ॥ ७३ ॥ एक दयालुरे नगर दीवार के । दीनो अ ध लगाई रे ॥ इण रे सहारे रे तू जा निकल जे । तिण दरवाजा के माईरे ॥ दस द० ॥ ॥ ७४ ॥ वणी मग चाल्यो रे द्वारते आवियो । तत्तण छोडी दीवारो रे ॥ खाज को खणतोरे आगे निकल्यो । फिर कब आवे ? ते द्वारो रे ॥ दस द० ॥ ७५ ॥ नगर सरीखो रे यह ससार है । जन्म मरण की है आगो रे ॥ मनुष्य जमारो रे द्वार है मोक्ष नो । इम भाख्यो वीतरागोरे ॥दस द०॥७६॥ जग सहु जाणोरे स्वार्थ नो सगो । उपकारी शुद्ध सावो रे ॥ दुखस डरने सेवो धर्मने । मत करज्यो परमादो ॥दस द०७७॥ ज्यो हलकर्मीरे चऊमाचना । सुणजो ध्यान लगाईरे ॥ सांचो शरणोरे लीज्या धर्मनो । भवभव में सुखदाईरे ॥ दस द० ॥७८॥ श्री जैन आगम उत्राध्ययन मे तीजा अध्ययन मझारोरे ॥ देख कथासर यह कविताकारी अल्पबुद्धि अनुसारोरे ॥ दस द० ॥७९॥ शास्त्रवेतारे गुरु नन्दलालजी । हैस्थवीर भगवन्तोरे ॥ परम दयालुरे दाता बोधना । रविजिमि तेज दीपतोरे ॥ दस द० ॥८०॥ सवत दससोर, नौसोउपरे । रचना कीनोरे खूब मुनिजावरे । मालव देश विख्यातोरे ।, दस द० ॥८१॥ इति दस दृष्टान्त की ढाल, शान्तस्वभावी, त्यागमूर्त्ति विद्वान जैनचार्य, पूज्य श्री खूबचन्द्रजी महाराज रचित—सम्पूर्णम् ॥

श्री विजय प्रिंटिंग प्रेस, मदनगंज (किशनगढ़) में मुद्रित ।